आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2012★ कार्तिक, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

वियतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सऊदी अरब, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहरीन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्वॅनिया, नामिबिया, चीन, अफगानिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव ✆ 0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद ✆ 0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

29448

।। महावीराया नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Mobile : 9820350814, Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अज्झत्थं सव्वओ सव्वं,
दिस्स पाणे पियायए।
'न हणे पाणिणो पाणे',
भय-वेराओ उवरए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.7

अपने सम देखो सब जग को,
सुख और आयुबल है प्यारा।
भय वैरों से उपरत हो,
मत बनो जीव के हत्यारा।।

नवम्बर, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
कार्तिक, 2069

वर्ष 69 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	शत-शत प्रणाम	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(8)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	ध्यान का स्वरूप, महत्त्व एवं प्रकार	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	17
	अध्यवसायों की शुद्धि से आत्म-विकास	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	23
स्तोत्र-	पूज्य हीरा-गुरु-गुणाष्टकम्	-पं. लक्ष्मण वासुदेव माण्डवगणे	14
दीक्षा-अर्द्धशती-	पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	27
	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. : जीवन रेखा	-श्री नौरतन मेहता	35
	ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य श्री हीरा	-श्री नौरतन मेहता	40
	संयम-सुमेरू आचार्य श्री हीरा	-श्री पदमचन्द गांधी	47
	समवसरण के आठ दिन	-श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'	56
	आचार्यप्रवर की प्रवचन शैली	-श्री अशोक कर्णावट	59
	जब आचार्य हीरा ने समकित स्वरूप समझाया	-प्रो.चांदमल कर्णावट	61
	आचार्यप्रवर का दृढ़ अनुशासन	-श्रीमती कमला सुराना	63
	संस्कार प्रबोधन की शैली	-श्री अशोक कुमार जैन	74
युवा-स्तम्भ-	संयमः खलु जीवनम्	-डॉ. दिलीप धींग	67
नारी-स्तम्भ-	परिवार की धुरी है नारी	-श्री नवरतनमल रांका	77
बाल-स्तम्भ -	त्रिविध मनुष्य	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	83
विचार-	सद्गुणों की सौरभ	-श्री राजेन्द्र चौधरी	16
	आत्म-बोध की कला	-श्री दयाचन्द जैन	60
	आचार्य श्री हीरा का संदेश	-श्री पदमचन्द गांधी	65
कविता/गीत-	दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती आई	-साध्वी पद्मप्रभा जी म.सा.	26
	वन्दन बारम्बार	-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	39
	अभिवन्दन कर हरषाएं	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	55
	आए हीरा द्वारे, लाए श्रद्धा का चन्दन	-श्रीमती एस. उषा चोरडिया	57
	मेरे गुरु की प्रभा से	-श्रीमती नीलू डागा	58
	हीरा गुरु का प्रवचन सुनकर	-श्री मगनचन्द जैन	62
	दीप जले दीवाली आई	-रेणु सिरोया	97
प्रेरक-प्रसंग-	आओ, स्वाध्याय करें	-श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया	54
संगोष्ठी रिपोर्ट-	'जैन जीवन शैली' राष्ट्रीय संगोष्ठी	-डॉ. श्वेता जैन	86
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता (30)	-संकलित	92
	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता परिणाम (29)	-संकलित	95
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (31)	-संकलित	98
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	100
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	123

सम्पादकीय

शत-शत प्रणाम

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज का कार्तिक कृष्णा षष्ठी 19 नवम्बर 2012 को प्रव्रज्या के 50वें वर्ष में प्रवेश हो रहा है। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज का यह प्रवेश वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, 4 मई 2012 को हो चुका है। इस प्रकार रत्नसंघ के दो महापुरुषों की दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती का यह शुभ अवसर है।

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज का दो वर्ष पूर्व 100वाँ जन्म-दिवस अध्यात्म-चेतना वर्ष के रूप में मनाया गया था। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी पर अपने गुरु की शिक्षा का विशिष्ट प्रभाव है। इसलिए संघ इनमें पूज्य हस्ती की छवि देखता है एवं उत्साहपूर्वक दीक्षा अर्द्धशती वर्ष को व्रत-नियमों, तप-त्याग एवं ज्ञानाराधन के साथ मनाने के लिए सन्नद्ध है। एक प्रकार से यह गुरुभक्ति वर्ष है।

पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज की दीक्षा लगभग 25 वर्ष की पूर्ण युवावय में जन्म-स्थली पीपाड़ में बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव पूज्य श्री हस्ती के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। आपका यह परम सौभाग्य रहा कि दीक्षा के पश्चात् लगभग 28 वर्ष गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान करने के साथ प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में भी नैपुण्य प्राप्त किया। आपकी गुरुदेव के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रही, आप उन्हें 'भगवन्', 'दीनानाथ', 'करुणासिन्धु' आदि विशिष्ट श्रद्धासूचक सम्बोधनों से ही सम्बोधित करते थे। विनम्रता, सरलता, गुरुभक्ति, संयमनिष्ठा, सहिष्णुता, प्रवचन-पटुता, अनुशासन आदि विविध गुणों ने आपको आचार्य बनने के योग्य बनाया। गुरुदेव पूज्य हस्ती के हृदय में आपके प्रति वात्सल्य उमड़ता था। राजस्थान के मारवाड़, मेवाड़, हाड़ौती, पल्लीवाल, पोरवाल, अजमेर-मेरवाड़ा, गोड़वाड़ आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि विविध प्रान्तों में आपने गुरुदेव के सान्निध्य में तथा फिर स्वयं आचार्य बनने के पश्चात् जो पदयात्रा की, उससे आपका संयम-जीवन निरन्तर निखरता गया।

विक्रम सम्वत् 2048 की ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 2 जून 1991 को आप आचार्यपद

की चादर से सुशोभित हुए। उस समय श्री जौहरीमल जी पारख ने कहा था कि यह चादर कांटों का ताज है, किन्तु आचार्य हीरा ने इसे अपना दायित्व मात्र ही समझा, ताज नहीं। इसीलिए आज वे सबके सिरताज हैं। संघनायक के दायित्व का निर्वहन वे बखूबी कर रहे हैं। आपको उपाध्यायप्रवर, साध्वीप्रमुखा एवं समस्त सन्त-सतीवृन्द का सहकार प्राप्त है। आपके 21 वर्षों के आचार्यकाल में 13 साधु और 56 साध्वियाँ संयम-मार्ग में दीक्षित हुई हैं। यह आपके संयमनिष्ठ, तेजस्वी जीवन का गौरव है। प्रातः जागरण से लेकर रात्रि विश्राम से पूर्व तक आप निरन्तर अप्रमत्त भाव से संयम-साधना में तल्लीन रहते हैं।

आचार्यप्रवर विशुद्ध आचार-पालन के पक्षधर हैं। आप ज्ञान के साथ आचार-पालन पर बल देते हैं। ज्ञानरहित शुष्क आचार उतना फलदायी नहीं होता, जितना ज्ञानपूर्वक विवेकयुक्त कृत आचरण। ज्ञान वही सार्थक है जो आचरण में फलित हो। इसलिए आप ज्ञानाराधन और आचरण के परिष्कार दोनों की प्रेरणा करते हैं। स्वाध्याय और सामायिक की साधना ज्ञान और आचरण के ही अमोघ साधन हैं। गुरुदेव हस्ती के द्वारा सामायिक-स्वाध्याय का जो अभियान चलाया गया, उसे आज भी आचार्य हीरा के द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। श्रद्धा अंध न हो, अपितु ज्ञानपूर्वक श्रद्धा हो तो वह जीवन को बदलने में सहायक होती है। इसलिए लोगों में व्याप्त अज्ञान अंधकार को दूर करने के साथ उनमें ज्ञान की ज्योति जगाने और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा आचार्य हीरा के द्वारा की जाती है।

आचार्य हस्ती का कथन है-

सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला।
निज सुधार से देश जाति, सुधरी हो जावेला।।

आचार्य हीरा भी इसी विचार का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। पहले अपने जीवन को सुधारना आवश्यक है, तभी समाज, देश एवं मानव-जाति के सुधार की बात संभव है। आप आत्म-सुधार के साथ समाज-सुधार की प्रेरणा अपने प्रवचनों में निरन्तर करते रहते हैं। व्यक्ति में सहिष्णुता का विकास हो, क्रोध के क्षणों में क्षमा का भाव हो , जरूरतमंदों के प्रति उदारता तथा सेवा का भाव हो, समाज में आई विकृतियाँ दूर हों, आडम्बर एवं प्रदर्शन के स्थान पर निर्जरा-परक साधना का स्वरूप हो, इस प्रकार के विचार आपके प्रवचनों में प्राप्त होते रहते हैं। आपकी कथनी एवं करनी में एकता है, इसलिए जीवन सरल है। प्रतिकूल क्षणों में भी आप धैर्य रखकर समस्या का समाधान खोज लेते हैं।

आप सुलझे हुए व्यक्तित्व के धनी हैं। चिन्तन में स्पष्टता है तथा वाणी में ओज है। आगत श्रद्धालुओं का मुस्कान के साथ स्वागत करते हैं तथा उन्हें जीवन में आगे बढ़ने

के लिए कोई-न-कोई प्रेरणा अवश्य करते हैं। आपके सान्निध्य में आकर कइयों ने अपने जीवन को ऊँचा उठाया है। युवकों को भी आप धर्म से जुड़ने की प्रभावी प्रेरणा करते हैं। सेवा के एवं धर्माराधन के सोपानों पर युवा किस प्रकार कदम बढ़ा सकता है, इसकी पावन दृष्टि आपके पास है। ग्रीष्मकालीन शिविर इसमें महती भूमिका निभा रहे हैं। नारी जाति के गौरव तथा कर्त्तव्य दोनों का आप बराबर भान कराते रहते हैं। बालकों में संस्कारों को लेकर आप जागरूक हैं। बाल पीढ़ी यदि संस्कारित नहीं होगी तो परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय होगा, इसलिए बाल पीढ़ी को संस्कारशील बनाने पर आपका विशेष बल है। आपकी इस प्रेरणा से चेन्नई, जोधपुर और जयपुर में शिशु एवं बालक-बालिकाओं के धार्मिक शिविरों का प्रत्येक रविवार को आयोजन हो रहा है। इन शिविरों की सफलता को देखते हुए राष्ट्र के विभिन्न ग्राम-नगरों में इन्हें प्रारम्भ करने का विचार किया जा रहा है। आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र भी इस दिशा में कार्य करता रहा है।

आपके आचार्यकाल में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड प्रारम्भ हुआ, जिसके माध्यम से हजारों बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों, श्रावक-श्राविकाओं, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने जैन धर्म विषयक पाठ्यक्रमों का पारायण कर ज्ञानवर्द्धन किया है। बोर्ड के द्वारा 1 से 14 (वर्तमान में 12) कक्षाओं तक के पाठ्यक्रम तथा जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा के द्वारा समाज में निरन्तर ज्ञान का संवर्द्धन किया जा रहा है। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ एक विशिष्ट ख्याति प्राप्त संस्था है, जिसकी सेवाएँ आज भी सम्पूर्ण देश में आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी तत्त्व-ज्ञान एवं प्रवचन की दृष्टि से सर्वत्र आदर पाते हैं। हांगकांग, बैंकाक, न्यूयॉर्क आदि स्थानों पर भी स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण में सेवाएँ दी गई हैं। आचार्यप्रवर जहाँ कहीं भी चातुर्मास करते हैं वहाँ अन्य तप-त्याग के साथ नये स्वाध्यायी तैयार होने की मांग अवश्य रखते हैं। सहस्राधिक स्वाध्यायी इस संघ की शान है, विगत वर्षों में निष्क्रिय हुई विद्वत्संगोष्ठियाँ गत 3 वर्षों से पुनः प्रारम्भ हुई हैं। विद्वानों का ज्ञान भी समाज के लिए उपयोगी बने, यह आपका चिन्तन रहता है। मनोवृत्ति के परिवर्तन एवं कषायों पर विजय प्राप्त करने में ध्यान-साधना सहायक है। इस दृष्टि से दो-तीन वर्षों में अनेक वीतराग ध्यान-शिविरों का सफल आयोजन हुआ है, जिनका लाभ साधु-साध्वियों तथा श्रावक-श्राविकाओं ने उठाया है एवं यह प्रवृत्ति संघ की एक प्रमुख प्रवृत्ति का स्वरूप ग्रहण कर सकती है। आवश्यकता है इस ओर परिपक्व ध्यान-साधकों की सेवाओं की।

आप संयम के सुमेरु हैं, पंचाचार के निरतिचार पालक हैं तथा कुशल अनुशास्ता हैं। आप अपने से नहीं, धर्म एवं अध्यात्म से जुड़ने की प्रेरणा करते हैं। अपना भक्त बने या

न बने, किन्तु व्यक्ति सन्मार्गगामी बने, संयमी बने, यही आपकी मनोभावना रहती है। यद्यपि आपके नाम के पूर्व व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक विशेषण जोड़ा जाता है, किन्तु यह विशेषण आपकी विभिन्न उदात्त प्रेरणाओं के समक्ष अत्यन्त लघु है। आप व्यक्ति को मात्र व्यसनमुक्त बनने की ही बात नहीं करते, अपितु उसके मनोभावों और विचार प्रक्रिया के परिवर्तन की भी प्रेरणा करते हैं। उसके जीवन को आमूलचूल बदलने की तथा आत्म-विकास करने की आध्यात्मिक प्रेरणा करते हैं। हाँ, व्यसनमुक्ति प्रथम चरण है। अतः यह तो जीवन में आवश्यक है ही, किन्तु इसके साथ आत्म-विकास के अनेक सोपान हैं, उन सब सोपानों पर चढ़ने की भी प्रेरणा गुरुदेव हीरा की रहती है। यही कारण है कि आपकी प्रेरणा से हजारों बारह व्रतधारी एवं आजीवन शीलव्रती श्रावक-श्राविका इस संघ की शोभा बढ़ा रहे हैं। इस दृष्टि से आप जिनशासन के गौरव हैं। जलगांव, मुम्बई, इचलकरंजी, बैंगलुरू, चेन्नई, बंगारपेठ, बीजापुर, अहमदाबाद आदि स्थानों पर हुए आपके चातुर्मासों से श्रावक-समाज में श्रद्धा एवं साधना की चमक में अभिवृद्धि हुई है।

आपकी सन्निधि में सभी संत-सती अपने अहिंसामय संयम एवं तप-साधना की निरन्तर अभिवृद्धि करते रहते हैं तथा आपके अनुशासन में रहकर स्वयं को धन्य मानते हैं। आपका अनुशासन सहज स्वीकार्य होता है, क्योंकि आप स्वयं अपने जीवन को अनुशासित रखते हैं तथा संत-सतियों को हितबुद्धि से अनुशासन देते हैं। आज संघ में ऐसे अनेक साधु-साध्वी हैं, जिन्हें अनेक आगम कण्ठस्थ हैं तथा दिन में आगम-वाचनी का कार्य भी प्रायः सर्वत्र होता है।

यह दीक्षा अर्द्धशती वर्ष पूज्य आचार्यप्रवर के संयमनिष्ठ जीवन से प्राप्त प्रेरणाओं को क्रियान्वित करने का वर्ष है। गुरु के प्रति भक्ति तभी साकार होती है, जब गुरु की प्रेरणा का आदर हो तथा उसको जीवन में स्थान दिया जाए। आपके अतिशय एवं सद्गुणों की सौरभ से श्रद्धालुओं का आवागमन बढ़ा है, प्रेरणा भी प्राप्त कर रहे हैं, धर्म-क्रिया में आगे भी बढ़ रहे हैं, किन्तु जीवन में प्रामाणिकता, सहिष्णुता, सौहार्द, समन्वयशीलता, सहयोगभाव, सेवाभाव आदि को भी अपनाने पर आपका बल रहता है। धर्म का स्वरूप तभी जीवन में चरितार्थ होता है। वर्षों तक की गई दिखावटी साधना कोई अर्थ नहीं रखती, जब तक कि जीवन में उपर्युक्त सद्गुणों का विकास न हो।

संघ में परस्पर भाईचारा इतना हो कि कोर्ट-कचहरी में जाने की आवश्यकता न पड़े। सद्भाव एवं सहिष्णुता इतनी हो कि दाम्पत्य जीवन में दरार उत्पन्न न हो। सहकार और उदारता इतनी हो कि भाइयों में परस्पर मनमुटाव न हो, भोजन में भावना का मिठास इतना हो कि विविध व्यंजनों के निर्माण में अपव्यय न हो। **(शेषांश पृष्ठ 34 पर....)**

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

संयमी-जीवन की दुष्करता

समया सव्वभूएसु, सत्तु-मित्तेसु वा जगे।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करा।।
निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावाय-विवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं।।
दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स- विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हणा-अवि दुक्करं।।
विरई अबंभचेरस्स, कामभोग-रसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं।।
धण-धन्न-पेस-वग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं।
सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं।।
चउव्विहे वि आहारे, राई-भोयण-वज्जणा।
सन्निही संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करो।।

अर्थः-

शत्रु हो या मित्र संसार के सभी जीवों पर समभाव रखना तथा आजीवन प्राणातिपात (हिंसा) से विरत होना दुष्कर है।

सदैव अप्रमत्त रहकर मृषावाद (असत्य) का विवर्जन (त्याग) करना तथा सतत उपयोग के साथ हितकर सत्य बोलना अत्यन्त कठिन है।

बिना दिये हुए दन्तशोधन (दतौन) आदि के ग्रहण का त्याग करना और दी जाने वाली वस्तु भी अनवद्य (निर्दोष) और एषणीय का ही ग्रहण करना भी दुष्कर है।

काम-भोगों के रस (स्वाद) के ज्ञाता के लिए अब्रह्मचर्य से विरति करना तथा उग्र ब्रह्मचर्य महाव्रत को धारण करना अत्यन्त दुष्कर है।

धन, धान्य एवं प्रेष्य (सेवक) वर्ग के प्रति ममता रूप परिग्रह का त्याग करना तथा समस्त आरम्भों का परित्याग एवं ममता रहित होना अतीव दुष्कर है।

चारों प्रकार के आहार का रात्रि में त्याग, सन्निधि और संचय का वर्जन करना अत्यन्त कठिन है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, उन्नीसवाँ अध्ययन, मृगापुत्रीय, गाथा-26-31

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

जिनवाणी एवं जीवन की दौड़

- जिस तरह मेघ की वर्षा जमीन पर अच्छे ढंग से पड़ जाती है तो भूमि नरम हो जाती है, कड़ी नहीं रहती और पड़ने वाला बीज अच्छी फसल पैदा कर सकता है। जगह-जगह छोटे-मोटे गड्ढे भर जाते हैं, तलाई का रूप ले लेते हैं और जंगल के प्राणियों को भी पानी सुलभ हो जाता है। छोटा-सा मेघ इतना काम कर जाता है तो भगवान् की वाणी की वर्षा पाकर आप भी कोमलता, स्वच्छता, निर्मलता और आत्मगुणों को धारण करके आगे बढ़ने का प्रयत्न करेंगे तो आपको इस लोक एवं परलोक में कल्याण व आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।
- संसार के प्राणी-बच्चे, बूढ़े, जवान सभी विजय की दौड़ में अपनी शक्ति, अपनी ताकत पूरे जोश के साथ लगाते हैं। संसार के मैदान में हमको विजय मिले, हम जीतें, हमारा नम्बर आगे रहे, इसी चिन्ता में दिन-रात दौड़ते रहते हैं। इनमें से कोई अर्थ यानी धन के लिए दौड़ता है, कोई परिवार के लिए दौड़ता है, कोई वैभव के लिए दौड़ता है, कोई कुर्सी के लिए दौड़ता है तो कोई सत्ता के लिए दौड़ता है। इस तरह इस घुड़दौड़ में दौड़ने वाले हजारों-लाखों मानव हैं। कोई कामयाब होता है या बीच में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, इसका कोई ठिकाना नहीं, क्योंकि यह देह अनित्य है।
- आप मानें या न मानें, अर्थ-लालसा के पीछे हमारे जो भाई-बहिन दौड़ लगा रहे हैं, इस वास्तविक तथ्य को वे मंजूर नहीं करेंगे। उनकी दौड़ जारी रहेगी। अर्थ चाहने वालों की अर्थ के लिए, भोग चाहने वालों की भोग के लिए, पद चाहने वालों की पद के लिए, भूख लगी रहेगी, लेकिन उनको पता नहीं है कि संसार में दुःख ही दुःख है।
- कुछ लोग यह आशा करते हैं कि हमको देवता बचा लेंगे, भैरोजी बचा लेंगे, चण्डी या अम्बाजी बचा लेंगी। जाप करके आशा की जाती है कि देव शक्ति बचा लेगी। बात यह है कि समय आने पर देवों को और इन्द्र को भी अपना सिंहासन छोड़कर जाना पड़ता है, तो क्या वे आपका सिंहासन बराबर रख सकेंगे?
- लोग आरोप लगाते हैं कि जैन धर्म व्यक्ति का स्वार्थ साधता है, समाज-हित की बात नहीं कहता। वह व्यक्ति में स्वार्थीपन की भावना जगाता है। वह हर आदमी को, अपनी आत्मा का कल्याण करो, अपना जीवन बनाओ, यह शिक्षा देता है। जैन धर्म समाज-हित की बात नहीं कहता है। लेकिन वस्तुतः ऐसा कहने वाले भाइयों को इस बारें में सही ज्ञान नहीं है। वे वास्तविक मूल रूप को नहीं समझ रहे हैं। भगवान् महावीर केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठाने की बात ही नहीं कह रहे हैं, अपितु साथ में व्यक्ति का अपना जीवन सुधारने के साथ विश्व-कल्याण का संदेश भी दे रहे हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (9)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- जीवन का लक्ष्य और साधना का ध्येय भोग नहीं, त्याग है।
- शरीर को नहलाने से, इसे मल-मल कर धोने से आत्मा शुद्ध नहीं हो सकती।
- द्रव्य, क्षेत्र और काल का संयोग मिला है, भावों की शुद्धि करनी है।
- वे साधक धन्य हैं, जो दूसरों के द्वारा छोड़े गए वचन बाणों को समता-भाव से सहन कर जाते हैं।
- आत्माराधन के लिए ज्ञान की आँख और क्रिया के चरण चाहिये।
- मृत्यु आ गई है तो कोई बचाने वाला नहीं और आयुष्य प्रबल है तो लाख उपाय कर लो, कोई मार नहीं सकता।
- नाम लिखाने के लिए देना, दान के महत्त्व को कम करना है, पुण्यार्जन को घटाना है।
- सबसे बड़ा देवता है- पुरुषार्थ। करणी से मानव देवता बनता है और करणी से ही मानव देवाधिदेव बनता है।
- बुराई को बुराई मानकर छोड़ने की तैयारी रखें तो आत्म-कल्याण में आगे बढ़ना भारी नहीं लगेगा।
- जीवमात्र के प्रति करुणा-प्रेम-अनुकम्पा का विस्तार है- महाव्रत।
- सन्त जीवन में प्राणिमात्र के प्रति अपनत्व होता है। जहाँ अपनत्व है, वहाँ झूठ, चोरी और धोखाधड़ी नहीं होती।
- सांमायिक वाला सिद्ध बन जाता है, यह समता और साधना का सत्य है।
- जीवन में जितने संकीर्ण विचार होंगे, उतनी ही मात्रा में जीवन अंधकार वाला होगा।
- सम्यग्दृष्टि व्यक्ति निःस्वार्थ रूप से दूसरों को आत्मीयता देता है।
- भगवान महावीर का सन्देश जीवन में विद्यमान अन्याय, अभाव और अज्ञान को मिटाने वाला है।
- परिवार और समाज में बड़ों के प्रति सम्मान और छोटों के प्रति प्रेम आवश्यक है।
- पाप की जानकारी होने पर पश्चात्ताप से पाप की शुद्धि की जा सकती है।
- प्राण-हरण करने के बाद लौटाये नहीं जा सकते हैं, इसलिए किसी के प्राणों का हरण नहीं करना चाहिये।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

स्तोत्र

पूज्य हीरा-गुरु-गुणाष्टकम्

पं. लक्ष्मण वासुदेव मांडवगणे

मंगलाचरण

श्री रत्नहस्तिगणनूतनज्ञानसूर्यं,
शान्तं प्रसन्नवदनं चतुरं सुधीरम्।
प्राप्तं बहुश्रुतपदं करुणावतारम्,
नित्यं नमामि सुप्रियङ्कर-हीराचन्द्रम्।।
भक्त्या नमामि सुप्रियङ्कर-हीराचन्द्रम्।।

-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

मिथ्यात्वपङ्क-कलुषीकृत-मानसान् नून्,
धर्मोपदेशकतकेन विशुद्धयन्तम्।
सन्दर्श्य संयमपथं सुगतिं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।1।।

अर्थः- मिथ्यात्व रूपी कीचड़ से मलिन, मानवरूपी सरोवर को धर्मरूपी फिटकरी से विशुद्धि प्रदान करने वाले, संयम का मार्ग बताकर सद्गति की ओर ले जाने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य-प्रति भावपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

जित्वेन्द्रियाणि सकलानि मनो निवेश्य,
आत्मन्यथो यमपरं नियमैश्च युक्तं।
नित्यं च धर्मकरणे समयं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।2।।

अर्थः- जिन्होंने सब इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर मन को आत्मा में लगा दिया है, जो अहिंसा, सत्य आदि यमों व स्वाध्याय, संतोष आदि नियमों से युक्त हैं और निरन्तर धर्म-कार्यों एवं धर्माचरण में समय को व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे श्री हीराचन्द्र गुरुवर को निरन्तर श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

दुर्वादिमत्त - गज - गण्ड - विभेदनार्थं,
पञ्चाननं जिनवरागम- तत्त्वविज्ञं।
रत्नत्रये नियमितार्पितचित्तवृत्तिं,

हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।3।।

अर्थः- दुर्वादी रूपी मदोन्मत्त हाथियों के गण्डस्थल को भेदने में जो सिंह के समान हैं, जिनेश्वर भगवान के कहे गये आगम-तत्त्वों को अच्छी तरह जानने वाले, रत्नत्रय की आराधना में अपनी चित्तवृत्ति को नियमित रूप से समर्पित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को भक्तिपूर्वक नित्य-प्रति नमन करता हूँ।

शास्त्राण्यधीत्य सततं श्रुतपारदृक्त्वं,
तत्त्वार्थवित्त्वमधिगम्य चकासतं शम्।
संद्देशनाविहितधर्मविभावनं - तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।4।।

अर्थः- निरन्तर शास्त्रों का गहराई से अध्ययन-स्वाध्याय करके श्रुत के रहस्य रूपी अतल गहराइयों को देखने वाले, तत्त्व के गूढ़ अर्थ को जानकर-समझकर उससे प्राप्त ज्ञान के प्रकाश में सद्देशना युक्त धर्म की प्रभावना करने वाले-कल्याणकारक श्री हीराचन्द्र गुरुवर को सदा भाव-पूर्वक प्रणाम करता हूँ।

दृष्ट्या जनान् करुणया परिनन्दयन्तं,
वाण्या सुधामधुरया परितोषयन्तम्।
भावं च धर्मचरणे परिवर्धयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।5।।

अर्थः- अपनी करुणामयी दृष्टि द्वारा लोगों को आनन्द प्रदान करने वाले, अमृत-तुल्य मधुर वाणी से जन समुदाय को पूर्ण सन्तुष्ट करने वाले और धर्माचरण में लोगों के भावों को निरन्तर अभिवर्द्धित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य भाव-युक्त नमन करता हूँ।

योगत्रयं शुभतरं समितीश्च पञ्च,
क्षान्त्यादि धर्मनिचयं सुमहाव्रतं च।
यः सेवते प्रशमभावरतोऽनिशं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।6।।

अर्थः- जो प्रतिदिन मन, वचन और काया के अत्यंत ही शुभ योगों का, पाँचों समितियों का, क्षान्ति आदि दस प्रकार के साधु-धर्म का और पाँचों महाव्रतों का प्रशम-भाव में रत रहकर, अप्रमत्त भाव से हमेशा आचरण एवं पालन करते हैं, उन श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदैव भाव पूर्वक प्रणाम करता हूँ।

मांसाशनादिसकलव्यसनेषु सक्तान्,
सम्यक् प्रबोध्य समयं सुपथे प्रवृत्तान्।

दृष्टवानिशं मनसि मोदवहं महान्तम्,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।7।।

अर्थः– मांस-भक्षण, मदिरा-पान आदि सभी सप्त कुव्यसनों में लिप्त जनों को आप द्वारा सम्यक् रीति से (अच्छी तरह से) धर्म का स्वरूप समझाने पर व्यक्ति को सिद्धान्त व सन्मार्ग में प्रवृत्त हुआ देखकर जो मन में अत्यन्त आनन्दित होते हैं, ऐसे महान् उपकारी श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा नमन करता हूँ।

दुष्प्रापसिद्धगतिमार्गविबोधनार्थं,
जैनागमादधिगताखिलतत्त्वसारम्।
संसेव्य संयमधनं कृतनिर्जरं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।8।।

अर्थः– अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होने वाले, ऐसे सिद्ध गति के मार्ग को जानने के लिए जिन्होंने जिनेश्वर भगवान् द्वारा प्रणीत आगमों में निहित तत्त्वों के सार को सम्पूर्ण रूप से जान लिया और विशुद्ध संयम की आराधना कर कर्मों को निर्जरित कर रहे हैं, उन तृतीय पद के धारक श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा भावपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

माहात्म्यः–

स्तोत्राष्टकमिदं पुण्यं,प्रातः सायं पठन् नरः।
संप्राप्नोति परां शान्तिं,प्रशान्तमनसा धिया।।

इस पुण्य-कारक स्तोत्र को जो मनुष्य प्रातःकाल एवं सायंकाल शांतमन एवं प्रसन्न बुद्धि से पठन करता है, उसको परम शांति की प्राप्ति होती है।

सद्गुणों की सौरभ

''संत स्वतः प्रकाशन्ते, न परतो नृणां कदा।
आमोदो नहि कस्तूर्याः, शपथेन विभाव्यते।।''

सत्पुरुषों के सद्गुण स्वयं ही प्रकाशमान होते हैं, दूसरों के प्रकाशन से नहीं। कस्तूरी की सुगन्ध शपथ दिलाकर नहीं बतायी जाती, उसकी सुगन्ध स्वतः अनुभव की जाती है। महापुरुषों का जीवन भी सद्गुणों की सौरभ से महकता है, जिसका अनुभव उनके सान्निध्य में किया जा सकता है।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ऐसे ही महान् संत हैं। आप सरल, निष्कपट एवं निरभिमानी साधक हैं। आपकी तेजस्वी साधना की सौरभ चहुँ ओर प्रसृत है।

-राजेन्द्र चौधरी, पालरोड़, जोधपुर (राज.)

प्रवचन

ध्यान का स्वरूप, महत्त्व एवं प्रकार

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

एक प्रश्न है कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए पाप से कैसे बचा जाय? चूंकि गृहस्थ जीवन बिना आरम्भ और परिग्रह के चल नहीं सकता। गृहस्थ को अनेक आरम्भ करने पड़ते हैं। खेती, कल-कारखाने, उद्योग-धंधे चलते हैं, उनमें अपार हिंसा होती है। घर में भी तो हिंसा के अनेक स्थान हैं, (चूल्हा-चक्की आदि किसका बंद हो सकता है?) इस आरम्भ की स्थिति में हम कैसे अपनी आत्मा को उज्ज्वल रख सकते हैं? फिर धन का भी उपार्जन, व्यय और संरक्षण करना पड़ता है, धन की उधेडबुन में लगे रहना पड़ता है, तब कैसे हम अपने आपको पाप से बचा कर रख सकते हैं?

वास्तव में गृहस्थ जीवन की यही विकट स्थिति है। उसमें आरम्भ परिग्रह की चक्की सतत चलती रहती है। बहुत बार तो अनावश्यक हिंसा भी होती रहती है। शादी-विवाह आदि में गृहस्थ अपनी मान-मर्यादा और बड़प्पन की भावना के वशीभूत होकर शक्ति से अधिक व्यय भी कर देता है। अहंकार पोषण के लिए, अपना बड़प्पन दिखाने के लिए, लोगों में सेठाई की छाप जमाने के लिए ऐसे खर्चे भी कर देता है, जिनकी कोई आवश्यकता नहीं होती, और न कोई उपयोगिता ही होती है। उस व्यर्थ के व्यय से जो गड्ढा पड़ा, फिर उसे भरने के लिए अधिक आरम्भ और अधिक हिंसा करता है, रात-दिन परिग्रह और आरम्भ-समारम्भ का चिंतन करता रहता है। इस प्रकार गृहस्थ जीवन में कभी आवश्यक और कभी अनावश्यक हिंसा एवं परिग्रह का चक्र चलता ही रहता है। आत्मा अधिक से अधिक कलुषित होती जाती है।

ध्यान का महत्त्व

हिंसा एवं परिग्रह के इस चक्र से आत्मा को छुड़ाकर शांत, प्रशांत एवं वैराग्य भाव में लाने के लिए शास्त्रों में भावना तथा ध्यान का मार्ग बताया गया है। ध्यान का आत्मा के साथ सीधा सम्बन्ध है। बंधन और मुक्ति में ध्यान ही मुख्य कारण है। बाहर में आरम्भ और परिग्रह में रत दिखाई देने वाला भी ध्यान की पवित्रता के कारण भीतर में बिल्कुल निर्लेप रह सकता है। भरत चक्रवर्ती की तरह साम्राज्य के सिंहासन पर बैठकर भी अल्पारम्भी और अल्पपरिग्रही रहा जा सकता है तथा ध्यान में मलिनता और अपवित्रता आ जाने पर बाहर में सब विषयों से विमुक्त तपस्या करता दिखाई पड़ने वाला साधक भी अशुभ भावना से लिप्त हो सातवीं नरक तक का बंध कर सकता है। यह ध्यान का ही चमत्कार है। जीवन में

प्रवृत्ति उतनी मुख्य नहीं है, जितनी मुख्य है वृत्ति अर्थात् ध्यान है। मन की गति-वृत्ति कहलाती है, वचन और काया की गति-प्रवृत्ति। तो मुख्यता वृत्ति की अर्थात् ध्यान की है। ध्यान के कारण आत्मा का पतन भी शीघ्र होता है, और उत्थान होते भी कुछ समय नहीं लगता। जितने हिंसा के साधन हैं, दुःख के कारण हैं और अधिकरण हैं, वे क्षणभर में करुणा के स्रोत बन सकते हैं, सुख के साधन बन सकते हैं, और धर्म के उपकरण बन सकते हैं। कैसे? ध्यान के द्वारा। ध्यान के द्वारा ही वे सब विपरीत भी बन सकते हैं। इसलिए जीवन में, साधना के क्षेत्र में ध्यान का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। ध्यान से मन में एकाग्रता आती है, चित्त की बिखरी हुई वृत्तियाँ स्थिर होती हैं, और उसके कारण मन में अद्भुत शक्ति का स्रोत उमड़ पड़ता है। जैसे नदी के बहते हुए जल-प्रवाह को रोककर उसे केन्द्रित किया जाता है, और फिर उससे विद्युत शक्ति पैदा की जाती है, उसी प्रकार मानसिक धारा को रोककर स्थिर करने से उसमें भी अद्भुत शक्ति पैदा हो जाती है।

प्राचीन समय में संकल्प बल एवं मनोबल के अनेक चमत्कार दिखाए जाते थे। आजकल जो सम्मोहन क्रिया कहलाती है वह भी एक प्रकार का मनोबल या संकल्प बल ही है। उसकी साधना के लिए भी एकाग्रता का अभ्यास किया जाता है, ध्यान की प्रक्रियाएँ सीखी जाती हैं और एकाग्रता की साधना के द्वारा विविध प्रकार के लौकिक चमत्कार दिखाए जाते हैं। यह निश्चित है कि ध्यान से संकल्पबल बढ़ता है। जिसे विल पॉवर (Will Power) कहा जाता है। तात्पर्य यह है कि जो इच्छाशक्ति कही जाती है वह मन की ही एक शक्ति है और उसका विकास भी मन को एकाग्र एवं स्थिर करने से होता है।

आजकल स्मृति-दुर्बलता का रोग बढ़ रहा है। स्मरण शक्ति कमजोर हो रही है, उसका कारण यही मानसिक चंचलता और वृत्तियों की विक्षिप्तता है। यदि मन को एकाग्र करने का अभ्यास किया जाय और वह शुभ उद्देश्य से प्रेरित हो, शुभ की ओर ही गतिशील हो तो निश्चित ही गिरता हुआ मनोबल बढ़ सकता है, स्मरण-शक्ति बड़ी तेज और प्रखर हो सकती है एवं संकल्प बल में चमत्कार पैदा हो सकता है। इसलिए ध्यान हमारी जीवन शक्तियों के विकास में अमोघ साधन है।

आत्मिक शक्तियों का विकास तो ध्यान के बिना असंभव प्रायः है। जैन-दर्शन मानता है कि प्रत्येक आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय भण्डार है। संसार में जो महान् से महान् पुरुष हुए हैं उनमें और हमारी आत्मा में मूलतः कोई अन्तर नहीं है। और तो और तिर्यंच एवं नरकगति में जो जीव हैं, तथा निगोद में जो जीव हैं उनकी आत्मा में और सिद्ध भगवान की आत्मा में आत्म-दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। इसीलिए तो कहा है-

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोई सिद्ध होय।

आपको शायद आश्चर्य होगा कि जो जीव व्यक्त रूप से श्वासोच्छ्वास तक नहीं ले सकते, जिनमें सुख-दुःख का व्यक्त वेदन भी नहीं है, उनमें सिद्धां जैसी शक्ति कहाँ से और कैसे हो सकती है? किंतु आप यह तो जानते ही हैं कि छोटे से बीज में विशाल वट वृक्ष के रूप में परिणत होने की शक्ति विद्यमान है। जब नन्हें से बीज में महाकाय वृक्ष की शक्ति है तो फिर निगोद के अव्यक्त वेदन वाले जीव में अनन्त आत्म-शक्ति की सत्ता होने में क्या आश्चर्य है। यदि उस जीव में अनन्त शक्ति का अस्तित्व न हो तो फिर जीव-जीव के स्वभाव में समानता कहाँ रही? जबकि स्वभावतः प्रत्येक जीव समान है। अन्तर है तो केवल विकास का है। एक की आत्म-शक्तियों का परिपूर्ण विकास हो गया है, और एक की शक्तियों पर आवरण पड़े हुए हैं। उन आवरणों की शिला को हटाकर आत्म शक्तियों का विकास करने में ध्यान का महत्त्वपूर्ण योग है। ध्यान के द्वारा आत्म शक्तियाँ प्रबल बनाई जा सकती हैं और उन्हें पूर्ण विकसित किया जा सकता है।

भौतिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन के विकास में ध्यान किस प्रकार सहायक होता है तथा उसका स्वरूप, लक्षण एवं आलम्बन आदि क्या है- इस दृष्टि से अब ध्यान के विषय में कुछ विस्तार से बताया जा रहा है।

ध्यान क्या है?

बार-बार ध्यान शब्द आपके समक्ष आ रहा है, अतः आपके अन्तःकरण में सहज ही यह प्रश्न उठता है कि ध्यान क्या है? उववाई आदि में ध्यान का वर्णन आता है। वहाँ चार प्रकार के ध्यान बताये गये हैं- आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान। चारों ध्यानों का काफी विस्तार से वर्णन है, परन्तु आप यदि ध्यान की परिभाषा देखना चाहें तो शायद मूल आगमों में कहीं भी प्राप्त नहीं होगी। ध्यान की परिभाषा समझने के लिए आगमोत्तर साहित्य को टटोलना होगा।

आचार्य जिनभद्र गणि ने अपने 'ध्यानशतक' नामक ग्रंथ में ध्यान की परिभाषा करते हुए लिखा है-

जं थिरमज्झवसाणं तं झाणं जं चलं तयं चित्तं।
तं होज्ज भावणा वा अणुप्पेहा वा अहव चिंता।।2।।
अंतो मुहुत्तमेत्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुंमि।
छउमत्थाणं झाणं जोगनिरोहो जिणाणं तु।।3।।

जो स्थिर अध्यवसाय-एकाग्रता है- उसका नाम ध्यान है। इसके विपरीत चित्त चंचल (अस्थिर) होता है। वह सामान्य से भावना, अनुप्रेक्षा अथवा चिन्ता से युक्त होने से तीन प्रकार का है।

अन्तर्मुहूर्त काल तक जो एक वस्तु में चित्त का अवस्थान है वह छद्मस्थों का ध्यान है तथा योगों का जो निरोध है, वह जिनों (केवलियों) का ध्यान है। वहाँ ध्यान का अर्थ होता है योग-निरोध।

आचार्य ने यह भी बताया है कि जब चित्त की एकधारा अखंडरूप में चलती है तभी ध्यान कहा जाता है। जैसे पानी की धारा गिरती हुई बीच में टूटे नहीं तो वह धारा है, यदि टूट जाती है और बूंद-बूंद गिरती है तो वह धारा नहीं कहलायेगी, इसी प्रकार बीच-बीच में ध्यान की एकतानता भंग हो जाने पर चित्त चंचल हो जाता है, और उस चंचल चित्त के चिंतन को, यदि शुभ है तो भावना या अनुप्रेक्षा कहा जाता है, यदि अशुभ है तो उसे चिंता कहा जाता है। किंतु खंड़ित चित्तधारा को ध्यान नहीं कहा जा सकता।

हमारा चित्त जब किसी भी विषय पर लीन हो जाता है, बाह्य विक्षेप और अवरोध से दूर हटकर जब एक ही चिन्तन धारा में गहरा डूब जाता है तो उसमें एकाग्रता उत्पन्न हो जाती है। कभी-कभी हम देखते हैं कि जब हम किसी सोच-विचार में लीन हो जाते हैं तो हमारे पास में बैठा व्यक्ति चाहे कितनी जोर की आवाज़ लगा रहा हो उसका हमें कुछ पता ही नहीं चलता। सामने कौन खड़ा है, कौन क्या कर रहा है, इसका भी हमारे मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और हम बस अपने ही विचार में डूबे रहते हैं। यह एकाग्रता की स्थिति है, इसे ही ध्यान कहा गया है।

आज के मनोविज्ञान ने अनेक परीक्षण करके यह सिद्ध किया है कि मन जब कोई भी आलम्बन अथवा कोई भी विषय लेकर उस पर स्थिर हो जाता है तो उसकी भागदौड़ बंद हो जाती है। उसमें स्थिरता आ जाती है और तब जिस विषय पर स्थिर हुआ है उसका पूर्ण प्रतिबिम्ब उसके भीतर झलक उठता है। जैसे नदी में बहते हुए चंचल जल प्रवाह में यदि हम अपना प्रतिबिम्ब देखें तो वह अस्पष्ट दिखाई देगा, किंतु किसी बर्तन में रखे हुए स्थिर जल में प्रतिबिम्ब देखने पर वह स्पष्ट दिखाई देता है। स्थिर मन में भी विषय का इसी प्रकार प्रतिबिम्ब पड़ता है। हमारा अनुभव भी बताता है कि यदि हम स्थिरता पूर्वक भगवान का ध्यान करते हैं, तब मन उस विषय में लीन हो जाता है तो हमारी कल्पना के वे चित्र जैसे आँखों में तैरने लग जाते हैं। भगवान समवसरण में विराजमान हैं, चार प्रकार की परिषद् उनके सम्मुख बैठी है। गौतम स्वामी प्रश्न कर रहे हैं- ये चित्र जैसे हमारे समक्ष उपस्थित होने लगते हैं और ऐसा लगता है कि हम सब दृश्यों को आँखों से देख रहे हैं। जब ध्यान भंग होता है तो वे सब चित्र विलीन हो जाते हैं, और लगता है जैसे कोई स्वप्न देख रहे थे। अशुभ विचार में लीन होने पर वैसे ही अशुभ विचार चित्र-कल्पना में झलकने लगते हैं। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि जब मन से युद्ध के मैदान में लड़ने लगे तो उनकी आँखे बंद थी, फिर भी

मनोभूमि पर युद्ध का सम्पूर्ण दृश्य चित्रित हो उठा, और ऐसा लगने लगा कि शत्रु राजा सामने आ रहा है, मुझ पर आक्रमण कर रहा है और मेरे पास कोई शस्त्र नहीं रहा। अतः उन्होंने अपना मुकुट फैंककर उसे घायल करना चाहा, और जैसे ही मुकुट उतारने के लिए हाथ सिर पर गया तो सिर तो सफाचट था, मुकुट क्या, उस पर तो केश भी नहीं थे। बस, तभी उनका वह रौद्रध्यान भंग हुआ और विचारधारा ने पुनः दूसरा मोड़ लिया।

इस प्रकार की मानसिक लीनता, एकाग्रता, विचार में डूब जाना, यह सब ध्यान है। ध्यान सम्बन्धी प्राचीन ग्रंथ में देखने से पता चलता है कि प्रायः सभी आचार्य इस विषय पर एकमत हैं और सभी ने ध्यान की यही परिभाषा की है। उमास्वाति, हरिभद्र और हेमचन्द्र सूरि ने ध्यान के सम्बन्ध में काफी विवेचन किया है, और प्रायः उनके विवेचन में समानता है। अतः अधिक विस्तार में नहीं जाकर संक्षेप में कहा जा सकता है कि क्षण-क्षण में बदलती हुई चित्त वृत्तियाँ चंचल एवं अस्थिर होती हैं, जब वह किसी एक पुष्ट आलंबन को ग्रहण कर ही विषय पर स्थिर हो जाती है तो उसमें लीनता, अथवा तन्मयता उत्पन्न हो जाती है और इस लीनता अथवा तन्मयता को ही ध्यान कहा जाता है।

ध्यान के प्रकार

ध्यान का अर्थ समझ लेने के बाद यह प्रश्न भी उठता है कि क्या सब ध्यान एक ही प्रकार के हैं या इनमें कोई भेद है। अर्थात् ध्यान सब अच्छा ही होता है या बुरा भी होता है।

इस विषय में अनेक मत हैं। वैदिक दर्शन एवं बौद्ध दर्शन के विद्वानों का मत है कि ध्यान शुभ ही होता है। चित्त की शुभ वृत्तियों की लीनता को ही वे ध्यान मानते हैं और उसी आधार पर उन्होंने ध्यान का सब वर्णन किया है। चित्त की अशुभ वृत्तियों को उन्होंने ध्यान नहीं माना है। यद्यपि योगदर्शन के व्यासभाष्य में यह बात स्वीकार की गई है-"चित्तनदी नाम उभयतो वाहिनी, वहति कल्याणाय, वहति पापाय च" चित्त रूप नदी दो प्रकार की धाराओं में बहती रहती है, वह कभी शुभ धारा में बहती है तो जीव के कल्याण की निमित्त बनती है, कभी अशुभ धारा में बहती है तो उसके पाप का निमित्त बनती है।

चित्त की गति जब उभयमुखी है, तो फिर ध्यान की धारा भी उभयमुखी होनी चाहिए। यह बात स्पष्ट है, किन्तु उन विद्वानों ने माना है कि अशुभ विचार-प्रवाह ध्यान का रूप नहीं ले सकते। इसी विचार की छाप बौद्ध विद्वानों पर पड़ी है। उन्होंने भी ध्यान को शुभरूप ही माना है। किन्तु जैन दर्शन ने ध्यान के सम्बन्ध में अपना स्वतंत्र चिंतन दिया है और वह बहुत ही गंभीर है। यद्यपि कुछ आचार्यों ने चार ध्यान को मान्य करके भी आर्त एवं रौद्र ध्यान को ध्यान रूप में महत्त्व नहीं दिया है और उन्हें अशुभ कहकर उपेक्षा कर दी है। इसका भी यही कारण है। आचार्य हरिभद्र ने एक शुभ वस्तु के आलम्बन पर स्थिर चित्त को

ध्यान कहकर इसी बात का संकेत किया है, किंतु मुख्यतः उन्होंने भी ध्यान के शुभ एवं अशुभ दोनों भेद माने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन्होंने ध्यान के सिर्फ शुभरूप को स्वीकार किया है उनके समक्ष अध्यात्म साधना की दृष्टि रही है और उसमें सहायक ध्यान का वर्णन करना ही उनका इष्ट रहा है, जबकि जैन आगमों में मनोविश्लेषण की दृष्टि भी साथ रही है और चित्तवृत्तियों का सर्वाङ्ग विवेचन करते हुए अध्यात्म-साधक ध्यानों की विधियाँ बताई गई हैं।

आगम जो कि हमारा मूल आधार है और हमारे समग्र दर्शन-चिन्तन का केन्द्र है, यहाँ उसी को आधार मानकर हमें विचार करना है। शास्त्रों में ध्यान की दो धारा बताई है- शुभ और अशुभ। चार प्रकार के ध्यान बताये गये हैं, जिनमें दो ध्यान शुभ हैं और दो ध्यान अशुभ हैं।

आगम का वह मूल पाठ इस प्रकार है- "**चत्तारि झाणा पन्नत्ता तंजहा- अट्टेझाणे रोद्देझाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे।**"-स्थानांग सूत्र-4/1 चार ध्यान बताये हैं- आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। इनमें प्रथम दो ध्यान अशुभ ध्यान हैं, उनसे आत्मा का पतन होता है।

जैसे कोई धन का लोभी पुरुष धन कमाने के लिए रात-दिन उपाय सोचता रहता है। धन कहाँ से मिले, कैसे मिले, क्या उपाय करूँ, धन मिलने पर यह करूँगा आदि विचारधारा में लीन हुआ रहता है। कोई रोगी अपने रोग की चिंता में डूबा रहता है। अपनी विषय-वासना की पूर्ति के लिए उसी के पीछे दीवाना बना रहता है, उन्हें अपनी-अपनी इष्ट वस्तु के सिवाय न खाना-पीना सुहाता है, न किसी से मिलना-जुलना, तो संतों के दर्शन और प्रवचन सुनने की तो बात ही कैसे सुहाए? इस प्रकार विषयानुचिंतन प्रथम दो ध्यानों में आता है। उससे आत्मा कलुषित होती है, कर्म-बंधन करती है तथा उससे जन्म-मरण की वृद्धि होती है अतः प्रथम दो ध्यान दुर्गति के कारण बताये गये हैं- भवकारण-अट्टरूद्दाई। (ध्यान शतक, 5) आर्त्त, रौद्र ध्यान भव-वृद्धि के कारण है।

धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान शुभ ध्यान माने गये हैं। इन दोनों की आराधना से आत्मा सद्गति को प्राप्त होती है। उमास्वाति ने इन दोनों को मोक्षगति का हेतु बताया है- 'परे मोक्ष हेतू'। (तत्त्वार्थ सूत्र, 9.30) वैसे टीकाकारों ने कहा है- आर्त्तध्यान तिर्यंच गति का कारण है, रौद्रध्यान नरकगति का, धर्मध्यान देवगति एवं शुक्लध्यान मोक्ष का।

सूत्रों में इन चारों ध्यानों का विस्तार के साथ विवेचन मिलता है। उनके लक्षण, आलम्बन आदि बताकर उनकी हेयता और उपादेयता का दिग्दर्शन कराया है।

प्रवचन

अध्यवसायों की शुद्धि से आत्म-विकास

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 25 अगस्त, 2012 को राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का संकलन श्री अशोक कुमार जैन, जयपुर ने किया है। **-सम्पादक**

असार से आत्म गुणों का सार निकालने वाले सिद्ध भगवन्त, शुभ के ध्यान में लीन अरिहंत भगवन्त, आत्मा की ओर एकाग्रता बढ़ाने का प्रयास करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनमोल वाणी अटकने-भटकने वाले संसारी आत्मा को धर्म का पथ दिखाकर सिद्धत्व की ओर बढ़ाने की प्रेरणा कर रही है। अनन्त काल से यह जीव आर्त-रौद्र ध्यान में, आरम्भ-परिग्रह में, कामना और वासना में अनन्त काल तक एकाग्र बना रहा। अशुभ अध्यवसायों की तीव्रता ने इसे नरक निगोद में पटक दिया। इसी तरह शुभ अध्यवसाय व शुद्ध चिन्तन से यह जीव अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान भी मिला सकता है, जन्म-मरण की बेड़ी को काटकर सारे दुःखों का अंत कर सकता है।

कामना-वासना की पराधीनता से इलायची कुमार डोरी पर नाच रहा था, किसको पाने के लिये? नटनी को पाने के लिये। वह सेठ पुत्र था और कहाँ पहुँचा? नटों के डेरे में। वह नट बन गया परन्तु, कैसे बदला? आप सभी अन्तर्मुहूर्त की बात सुन रहे हैं। यह जीव कभी शुभ निमित्त पाकर भी बदल सकता है तो कभी शुद्ध पराक्रमी जीव सहज निसर्ग से भी बदल सकता है। 12 वर्ष भटकते हुए, ऐसी मेहनत करते हुए इलापुत्र (इलायची कुमार) को डोरी पर नाचते-नाचते संत दिखाई दिये। सन्त ने इलायची कुमार की ओर नहीं देखा, उपदेश नहीं दिया, समझाने का प्रयास भी नहीं किया। वे अपनी भिक्षा ग्रहण करने के लिये सामने स्थित हवेली में पहुँचे हैं। इलापुत्र की दृष्टि पड़ी। दृष्टि पड़ते ही चिंतन चला।

वासना में एकाग्र होने के कारण नगर सेठ का पुत्र घर-परिवार छोड़ कर नटनी को पाने के लिये वर्षों से नाच रहा है। इच्छा पूरी नहीं हो रही है। पुरुषार्थ करते-करते, नाचते-नाचते रात्रि का चौथा प्रहर हो गया है, थकान आ रही है। एक ओर नटनी के मोह में वह थक गया है, दूसरी ओर कोई दूसरा यह चाहता है कि यह डोरी पर से गिरे और नटनी उसे

मिल जाय। ऐसी स्थिति में प्रातःकाल होते नज़र पड़ी, देखा मुनिराज को, चिन्तन चला, मैं भी मानव हूँ, यह भी मानव हैं। मेरी भी यौवन अवस्था है और इनकी भी यौवन अवस्था है। ये कहाँ और मैं कहा? इनके सामने सोलह शृंगार किये सजी धजी नारी खड़ी है, लेकिन ये आँख उठाकर भी नहीं देख रहे हैं और मैं नटनी के पीछे जीवन बरबाद कर रहा हूँ। भीतर में चिन्तन चला और डोरी पर ही नाचते-नाचते केवल ज्ञान हो गया।

अध्यवसाय बदलने चाहिये। बाहर से हटकर भीतर में आना चाहिये। अध्यात्म का रस बनना चाहिये। आध्यात्मिकता का रस होगा तो धर्म स्वतः होता जाएगा। करने का कोई दबाव नहीं होगा। अध्यवसाय शुभ होते जायेंगे। करना है और करना पड़ता है दोनों में भेद है। सामायिक स्वतः आत्मोन्नति के लिए करना और बात है तथा महाराज ने नियम दिलाया है इसलिए बोझ समझकर करना है, यह और बात है। दोनों स्थितियों में अध्यवसाय भिन्न-भिन्न होते हैं। कौन से अध्यवसाय डूबाने वाले हैं, कौनसे तारने वाले हैं, यह समझना है।

बदलने के लिये बाहर का निमित्त ही पर्याप्त है। ऋषभदेव ने माता मरुदेवी को उपदेश नहीं दिया। समवसरण के नजदीक पहुँची, आगे बढ़ी, हाथी पर से नीचे भी नहीं उतरी, अनित्यता का चिन्तन चला, इसकी मेरे को चाहना नहीं है। अन्तर की गहराई में उतरी, अन्तर्मुहूर्त में केवल ज्ञान हो गया। कौनसे अध्यवसाय बदले, कौनसी रसायन आई? जीवन भर कुछ नहीं किया, कोई सत्संग नहीं, कोई व्रत-नियम नहीं, कोई आराधना नहीं, मात्र चिन्तन की धारा बदली, हाथी के ओहदे पर बैठे-बैठे ही केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। रसायन कहने से नहीं आता, रसायन सुनने से नहीं आता, बाहर के निमित्त से भी नहीं आता। जब व्यक्ति निमित्त को पाकर अपने अन्दर में गहरा उतरे, भीतर की गहराई में जाए तब कहीं जाकर रसायन आता है। अनुप्रेक्षा रसायन का कारण कहा जा रहा है। किसी को भी आ सकता है, आया है, आता है और आता रहेगा, यह मानकर चलें। भले अनन्त काल से नहीं आया किसको कब आ जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता।

अधर्मी से अधर्मी, पापी से पापी व्यक्ति भी किस समय कब बदल जाए, कब जग जाए कुछ नहीं कहा जा सकता। देखने में आदमी संसार में रचा-पचा लगता है, किन्तु बदलने में देर नहीं लगती। बदलने लगे तो चक्रवर्ती भी बदल सकता है। शास्त्र में अनेक दृष्टान्त हैं। राजा संजय शिकार खेलने गया और बदल गया। "जे आसवा से परिस्सवा जे परिस्सवा ते आसवा।" जो आस्रव के स्थान हैं वे संवर के स्थान में बदल सकते हैं, कब? जब दृष्टि बदलेगी तब। आप कोई भी बात अपने पर लेने की बजाय दूसरे पर लेते हैं, तो फिर चाहे असंख्यात बार सुनें, परिवर्तन आने वाला नहीं है। मैं मेरा चिन्तन नहीं करूँ, आप अपना चिन्तन नहीं करेंगे, तब तक परिवर्तन नहीं हो सकता। एक नये पैसे भर भी अन्तर

नहीं आता, जब तक आगमवाणी को पराये के लिये समझा जाता है।

आप किसी स्थान पर हैं, किसी भी प्रकार के पद पर हैं, कैसी भी स्थिति में हैं, जहाँ आप कार्य कर रहे हैं, वहाँ के कर्त्तव्य का सही प्रकार से निर्वहन कर रहे हैं, तो कर्मबोझ से हल्के होते जायेंगे। अगर आप पिता हैं, आपका कर्त्तव्य क्या है? श्रावक हैं, आपका कर्त्तव्य क्या है? सामायिक में क्या चिन्तन करना चाहिये, क्या सोचना चाहिये? जिस जगह बैठे हैं, जिस पद को लेकर बैठे हैं, अगर उसका सही रूप से सही ढंग से पालन कर रहे हैं तो गति से प्रगति करते चले जायेंगे। आप जिस पद पर बैठे हैं, उस पद का सही तरह से निर्वहन नहीं करेंगे तो स्वयं तो बदनाम होंगे ही, साथ ही जिस पद पर बैठे हैं वह पद भी बदनाम हो जाएगा। चाहे साधु-साध्वी हों, चाहे श्रावक-श्राविका हो, चाहे संघाध्यक्ष हों, चाहे संघ-सदस्य हो, जिस जगह जिस पद पर बैठे हैं, उसका सही प्रकार से कर्त्तव्य निर्वहन कीजिए। राम रामायण में नहीं है, कृष्ण गीता में नहीं है, भगवान महावीर भगवती में नहीं हैं, पाये हुए पद का कर्त्तव्य निर्वहन में हैं। चाहे कुछ देर के लिये हो, कुछ घंटों के लिये हो, जीवन भर के लिये हो, जिस कार्य के लिये आपको जिम्मेदारी मिली है, आप उस पद का कर्त्तव्य के साथ निर्वहन करें। **कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं, प्राणैः कण्ठगतैरपि।** प्राण कंठ में आ जाएं तो भी कर्त्तव्य का निर्वहन करें। आप नियम बना लें- कर्त्तव्य से हटेंगे नहीं, अकर्त्तव्य करेंगे नहीं। इस कर्त्तव्य शब्द को आप नियम, व्रत या धर्म जो कहना चाहें कह दीजिए, इसे खयाल में रखकर अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए आगे बढ़ेंगे तो रसायन आ जाएगा। अपने कर्त्तव्य का पालन करते-करते एक दिन केवली भी बन जायेंगे। यह काँच के महल में भी हो सकता है, संत जीवन में साधना करते हुए भी हो सकता है। अन्तरंग में सच्चाई चाहिये और व्यवहार की शुद्धि चाहिये। जो व्यवहार में अपनी अन्तरंगता से जितना-जितना गहरा उतरता जाएगा उतना-उतना अपनी आत्मा का हित करेगा। संसार के सामने आदर्श रखेगा। कृतकृत्य होकर दुःख का अन्त कर सकेगा।

Forgiveness

Child and adult psychiatrist Gerald Jampolsky stated in his book "Love is Letting Go of Fear" as below:-

"Forgiveness is the bridge to compassion, to inner peace, and to a peaceful world. It is my hope that forgiveness becomes as important as involuntary to us as breathing. It is the key to happiness. Inner peace can be reached only when we practice forgiveness, it is the means for correcting misconceptions."

गीत

दीक्षा स्वर्ण जयन्ती आई

साध्वी पद्मप्रभा जी म.सा.

(तर्जः- मेहंदी राचन लागी......।)

दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती आई मेरे गुरुराज की,
बोलो, जय बोलो, सब बोलो संघ सिरताज की।।टेर।।
(हस्ती गुरु का पाट दिपाया हीरा गणिराज की)

मोहिनी दुलारे गुरुवर, मोती जी के लाल हैं,
क्रिया है कठोर गुरु की, संयम बेमिसाल है,
त्याग और नियम में दृढ़ता क्या ही कमाल है,
महाव्रत समिति गुप्ति, क्रिया इनकी ढाल है,
महिमा गाए कर्म खपाए, सद्गुणों के साज की..।। 1।।

मर्यादा सिद्धान्तों की पालना में दक्ष हैं,
ऋद्धि प्रसिद्धि नहीं सिद्धि का ही लक्ष्य है,
स्वाध्याय सम्यक् चिन्तन सत्य का ही पक्ष है,
साधना में नहीं कोई, आपका समकक्ष है,
दर्शन विशुद्धि बढ़ाए, स्तुति गुरुराज की..।।2।।

सौम्य वदन है गुरु का कण्ठ है सजीला,
प्रवचन शैली प्यारी ढंग है निराला,
मीठी मधुर है वाणी, अमृत का प्याला,
चरणों में जो भी आए होता वो निहाला,
लंबी उमर पाएं, भाव भाएं मन से आज की..।।3।।

(अलीगढ़, जिला-टोंक चातुर्मास में उच्चारित)

रचनाओं से करें अभिनन्दन

जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा वर्ष कार्तिक कृष्णा षष्ठी दिनाँक 19 नवम्बर, 2012 को प्रारम्भ हो रहा है। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 4 मई,2012 को प्रारम्भ हो चुका है। प्रस्तुत अंक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चरणों में समर्पित है। श्रद्धालुओं, विद्वज्जनों एवं पाठकों से निवेदन है कि आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के जीवन से सम्बद्ध प्रेरणादायी रचनाएँ समय-समय पर प्रेषित करते रहें।-**सम्पादक**

दीक्षा अर्द्धशती पर विशेष

पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी मुनिश्री द्वारा विशिष्ट अवसरों पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के गुणानुवाद प्रदत्त प्रवचनों का संयोजन कर उन्हें एक साथ धारावाहिक के रूप में तीन अंकों में प्रस्तुत किया जा रहा है। उसी की यह प्रथम कड़ी है। इन प्रवचनों का संकलन, संयोजन और संपादन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली ने किया है। **-सम्पादक**

सर्वसुख मूलबीजं, सर्वार्थविनिश्चयप्रकाशकरम्।
सर्वगुण-सिद्धि-साधन-धनमर्हच्छासनं जयति।।

-प्रशमरति प्रकरण, 314

जो समस्त सुखों का मूलबीज, समस्त पदार्थों का विनिश्चयात्मक प्रकाश करने वाला एवं जो समस्त गुणों की सिद्धि के साधनरूप धन से युक्त है, वह जिनशासन विजयी हो रहा है।

धर्मानुरागी बन्धुओं!

तीर्थ की स्थापना करने वाले तीर्थंकर भगवान आज हमारे मध्य नहीं हैं। उनके धर्मशासन के रथ को गतिमान रखने में सारथि के रूप में हमारे आचार्यों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशमान होता हुआ अपने स्पर्श से अन्य सैकड़ों दीपकों को ज्योतिर्मय बना देता है, उसी प्रकार आचार्य स्वयं ज्ञान-ज्योति से प्रकाशित होते हैं एवं दूसरों को भी प्रकाशमान करते हैं। शास्त्रकारों ने आचार्य के स्वरूप का वर्णन सरलता से समझाने के लिए रूपकों एवं उपमाओं का प्रयोग करते हुए कहा है-

उत्तमखमाए पुढवी, पसण्णभावेण अच्छ-जल-सरीसा।
कम्मिंधणदहणादो, अगणी वाऊ असंगादो।।

अर्थात् आचार्य उत्तम क्षमा में पृथ्वी के समान क्षमाशील होते हैं। निर्मल परिणामों के कारण स्वच्छ जल के समान होते हैं। कर्मरूपी ईंधन को जलाने के कारण अग्नि के तुल्य होते हैं और सब प्रकार के परिग्रह से रहित होने से वायु की तरह निस्संग होते हैं। इन्हीं विशिष्टताओं के कारण कहा गया हैः-

जहा ससी कोमुइजोगजुत्ते, नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे।।

-दशवै. 9.1.15

जिस प्रकार मेघमुक्त विमल आकाश में नक्षत्र और तारागण से परिवृत्त कार्तिक पूर्णिमा में उदित चन्द्रमा कौमुदी से शोभित होता है, उसी प्रकार भिक्षुओं के बीच आचार्य शोभित होता है।

महामंत्र नवकार में तीसरा पद आचार्य का है। जैन साधना में आचार का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार की विशुद्धि आचार्य का मौलिक गुण होता है। जो स्वयं विशुद्ध चारित्र निष्ठ हों और अपने संघ को विशुद्ध चारित्र में स्थिर रखते हों, वे ही आचार्य पद के योग्य होते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि जो ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार रूप पंचाचार का स्वयं पालन करते हैं एवं अन्यों को पालन करवाते हैं, वे आचार्य होते हैं। आचार्य की प्रमुख विशेषताओं में अष्ट सम्पदा एवं छत्तीस गुण हैं जो उनकी अनुशासन क्षमता एवं चारित्र निष्ठा को स्पष्ट करते हैं।

आचार्य के उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न गुरुदेव आचार्यश्री हस्तीमल जी महाराज एक ऐसे इतिहास पुरुष हो गये हैं जिनकी कीर्ति जैन और जैनेतर सभी वर्गों में विख्यात है। उनके जीवन का हर पक्ष उज्ज्वल और अभिराम था। वे एक ऐसे सन्त थे जिनके आगे वर्तमान के सभी विशेषण गौण हो जाते हैं। संयम और ब्रह्मचर्य की छटा से मानो वे वर्तमान के वर्धमान हो गए। वे सन्तों के आचरण और कर्त्तव्य के मूर्तिमान उदाहरण ही नहीं, उसके व्याख्याता भी थे। उन्होंने अपने साधु और साध्वी-मंडल को आचार के पवित्र मूल्यों से प्रतिष्ठित किया। 'नमो आयरियाणं' के सम्बोधन तक पहुँचना आसान नहीं है। वे बीस वर्ष से भी कम वय में इस पद पर पहुँच गये थे। आचार्य के गुण उनमें नैसर्गिक रूप में विद्यमान थे। प्रभु ने कहा है-''खणं जाणाहि पंडिए'' अर्थात् जो क्षण को जानता है, समय को जानता है वह पंड़ित है। गुरु हस्ती ने समय को जाना, उसे साधा, इसलिए समय ने भी उन्हें मूल्यवान् बना दिया। वे सदैव एक जागरूक संत थे और अप्रमाद के साक्षात् उदाहरण थे। गुरु हस्ती जन्म से ही वैरागी थे। आगमकारों ने कहा है कि ज्ञान का सार वैराग्य है। इस सूत्र के अनुसार पूर्व जन्म में ही वे अतिशय ज्ञान के धनी थे, तभी तो जन्म के साथ ही उनमें वैराग्य के भाव अंकुरित हो गये। इस जन्म में उनकी आध्यात्मिक साधना और उनकी अनासक्ति इस बात का संकेत देती है कि पूर्व जन्म में भी उनकी साधना अतुलनीय रही होगी, इसलिए वे अपनी उसी तेजस्वी साधना को इस जन्म में पूर्णता की ओर ले जाने में तत्पर हो गये। यही कारण है कि आचार्य के रूप में संघ का सफल नेतृत्व करते हुए भी वे सदा आत्मद्रष्टा संत ही बने

रहे। संघ की सारणा, वारणा और धारणा का कार्य करते हुए उनमें आचार्य पद का किंचित् भी मद नहीं था।

ऐसे आचार्य को जब अपने किसी तेजस्वी शिष्य में भावी आचार्य की सम्भावनाएँ नज़र आती हैं तो वे न केवल उसके जीवन-निर्माण में तत्पर हो जाते हैं, अपितु अपने आत्म लक्ष्य के प्रति और अधिक संकल्पित हो जाते हैं। लक्ष्य के प्रति सावधान रहने वाले सच्चे साधक को जब योग्य उत्तराधिकारी मिल जाए, तब वह भला अपने लक्ष्य के प्रति पूर्णरूपेण क्यों नहीं समर्पित होगा? यह एक दुर्लभ संयोग था कि एक ओर वे स्वयं आत्म-साधना में आतुर साधक थे तो दूसरी ओर उन्हें एक योग्य उत्तराधिकारी शिष्य भी मिल गया। सच्चे साधक ऐसे अवसरों को नहीं गंवाते। मुनि हीरा की योग्यता और पात्रता ने गुरु हस्ती को निश्चिन्त कर दिया। यह एक योग्य गुरु के लिए योग्य शिष्य की खोज तो थी ही, इसके साथ ही उस योग्य शिष्य मुनि हीरा की महिमा की सूचक भी थी। जिस दिन गुरु ने शिष्य के शिष्यत्व को माप लिया, उसी दिन गुरु की गुरुता और शिष्य का शिष्यत्व सफल हो गया। गुरु के सान्निध्य में मुनि हीरा ने संघानुशासन का बोध भी प्राप्त कर लिया। धर्म की विशिष्ट प्रभावना करने वाले प्रज्ञावान आचार्य ने समय आने पर मुनि हीरा को संघनायक के रूप में मनोनीत कर दिया।

गुरुहस्ती के महाप्रयाण के पश्चात् चतुर्विध संघ ने उनके मनोभावों के अनुरूप, अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मुनि श्री हीराचन्द्र जी को रत्न संघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। गुरु हस्ती के देहावसान पर जो एक बहुत बड़ी रिक्तता का आभास हो रहा था, उसे नव प्रतिष्ठित आचार्य श्री हीराचन्द्र जी ने जल्दी ही भर दिया। उनके कुशल नेतृत्व ने एक प्रतिष्ठित संघ को आचार-निष्ठा और संघनिष्ठा में नई ऊँचाइयाँ दी। उनकी वाणी का प्रभाव और संयम की तेजस्विता जन-जन को प्रकाशित कर रही है। उनका अनुशासन एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है। उनका यश-सौरभ चारों ओर बिखर रहा है। गुरु हस्ती जैसी महान् हस्ती के जाने के बाद ऐसा हीरा पाकर संघ धन्य हो गया।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे धर्मसंघ (रत्नसंघ) के अष्टम पट्टधर वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. जिनशासन की महत्ती प्रभावना करते हुए अपने निर्ग्रन्थ जीवन के पचासवें वर्ष में प्रवेश करने वाले हैं। जिनकी जड़ वैराग्य की भूमि में है, जिनका सदाचरण से सिंचन हुआ है, जिनका तन तपोवन है, जिनका मन संयम की निर्मल धारा है, जो ज्ञान से सम्पन्न हैं, दर्शन से पुष्ट हैं और चारित्र के भंडार हैं, जो हम सबके सहारा हैं और तिरने के लिए तीर्थं हैं, जिनकी सुगन्ध से धर्मसंघ प्राणवान है एवं जिनके चरणों पर अगणित

लोग श्रद्धा के कुसुम चढ़ा रहे हैं, उन महापुरुष का परिचय मैं क्या दूँ? फिर भी 'गुणिषु प्रमोदं' की उक्ति के अनुसार महान् विभूति के चारित्र और गुणों का वर्णन करने से हृदय और वाणी को जो पवित्रता मिलती है, इसी से प्रेरित होकर उनका गुणानुवाद करने के लिए मेरा हृदय हिलोरें ले रहा है।

महान् गुरु के महान् शिष्य

जगतीतल पर कुछ ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं जो अपने कार्यों द्वारा समय के वक्ष पर एक अक्षर शिलालेख बनकर अंकित हो जाते हैं। कितनी ही आँधियाँ चलें, तूफान उठें, ऐसे महापुरुषों का नाम सदैव अक्षत रहता है। प्रातः स्मरणीय परमपूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एक ऐसे ही महापुरुष थे। वे मन से निर्मल, स्वभाव से ऋजु, संकल्प के धनी, ज्ञान के पुञ्ज, चारित्र से उज्ज्वल, कषाय रहित, समत्वयोगी एवं संतों में शिरोमणि थे। अपने दीर्घ साधक जीवन में उन्होंने जन-जन को प्रतिबोधित कर कल्याण के पथ पर अग्रसर किया। साठ वर्ष तक संघ के आचार्य का दायित्व अत्यन्त गरिमा के साथ निभाते हुए उसे नई ऊँचाइयाँ प्रदान की।

बन्धुओं, इस वसुन्धरा पर एक से बढ़कर एक संत-रत्न हुए हैं, जिन्होंने अपने तप से स्वयं को तपाया, ज्ञान से संवारा, संयम से साधा और चारित्र से तेजस्विता पायी। सचमुच में तो संत वही होता है, जिसके दर्शन करते ही विद्वान् विनीत बन जाता है, धनिक का अहं पिघल जाता है और रूप सुन्दरी में भी लज्जा के गुण का आविर्भाव हो जाता है। संयमी जीवन का आभावलय ही कुछ ऐसा होता है कि उसके सान्निध्य में आने वाला व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। ऐसे संतों की कृपा ही हमें भवसागर से पार करा सकती है। मोह महारिपु को जीतने वाले ऐसे संयमनिष्ठ संतों के बारे में कविवर भूधर जी ने अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहा है-

वे गुरु मेरे उर बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरे, पर तारहिं, ऐसे श्री मुनिराज।।

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी ऐसी ही उज्ज्वल परम्परा के संत रत्न हैं। आज हमारा अहोभाग्य है कि हम उनकी शीतल छाया में बैठे हैं। परन्तु यह उपकार भी उस महान् आचार्य हस्ती का ही है जिन्होंने करीब पचास वर्ष पूर्व अपने हाथों से एक पौधा लगाया, उसे अपना अपरिमित वात्सल्य देकर दर्शन से पुष्ट किया और ज्ञान की उर्वरा देकर सदाचरण से सिंचित कर विकसित किया।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी का जन्म चैत्र कृष्णा 8, वि.सं. 1995, भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याणक के पावन दिवस पर पीपाड़ शहर में हुआ था। पिता श्री

मोतीलाल जी गांधी एवं माता श्रीमती मोहनीदेवी जी के यहाँ उत्तम कुल में उनका अवतरण हुआ। यह एक अपूर्व संयोग ही है कि गुरु के पद चिह्नों पर चलने वाले शिष्य की जन्म-स्थली भी वही है, जो उनके गुरु की थी। बचपन में ही अपनी छोटी बहिन के असामयिक निधन पर उन्हें संसार की अनित्यता का बोध हो गया। चित्त की वनस्थली पर इसी अनित्य भावना के बोध से वैराग्य के अंकुर उग गये। गुरु हस्ती के सान्निध्य में आते रहने से उनकी वैराग्य भावना दृढ़ से दृढ़तर होती गई। महापुरुषों के पुण्य परमाणुओं से उनके संयमजीवन में जाने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण हो जाता है। श्री हीराचन्द्र जी ने जब अपने पिताश्री से दीक्षा लेने की आज्ञा मांगी तो तुरन्त उन्होंने कह दिया कि "जब गुरुदेव हस्तीमल जी म.सा. कह देंगे, मैं तुम्हें दीक्षा की अनुमति दे दूँगा।" जब माताश्री के पास गये तो उन्होंने कहा कि "जैसी सेवा हमारी कर रहा है वैसी ही गुरुदेव की करना।" अन्त में कार्तिक शुक्ला 6, वि.सं. 2020 को गुरु हस्ती से पीपाड़ शहर में ही जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करके वे निर्ग्रन्थ पथ पर चल पड़े। गुरु हस्ती एक महान् अन्तर्द्रष्टा होने के साथ-साथ स्वप्नद्रष्टा संत (Visionary Saint) भी थे। उन्होंने मुनि हीरा में छिपी सम्भावनाओं को पहचान लिया। उन्होंने अपने सान्निध्य में उनको मुनि जीवन की साधना से परिचित कराने के साथ-साथ संस्कृत, प्राकृत और आगम ग्रन्थों को पढ़ाना शुरु किया। मुनि हीरा अत्यन्त विनयी शिष्य बनकर तन-मन से गुरु सेवा में रत रहे। ज्ञानवृद्धि में अपने ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम एवं लगन से किया गया श्रम ही पर्याप्त नहीं होता, इन सबके साथ गुरुजनों की विनय-भक्ति भी आवश्यक होती है। जो अपने गुरु की सेवा करते हैं, उनकी आज्ञा में रहते हैं, उनका ज्ञान भी वैसे ही बढ़ता है जैसे जल से सींचने पर वृक्ष बढ़ते हैं।

सारा जगत् स्वतन्त्रता के लिए लालायित रहता है, फिर भी प्रत्येक जीव संसार के बन्धनों को ही प्यार करता है। यह हमारी प्रकृति की पहली दुरुह ग्रन्थि और विरोधाभास है। यदि इस विरोधाभास को समाप्त कर दें तो मुक्ति की राह खुल जाती है। इस विरोधाभास का समाधान है- अनासक्ति और वैराग्य। जीवन में अगर वैराग्य की किरण प्रस्फुटित हो गई, तब भले ही हम संसार में रहें, संसार हम में नहीं रहेगा। संसार मन में नहीं बसा होगा तो संसार के दुःख भी मन में नहीं बसेंगे। वैराग्य के फलीभूत होने के लिए संयम और समता की साधना अनिवार्य है। साधना जब सध जाती है तब ही बन्धनों से मुक्ति मिलती है। गुरु हस्ती ने मुनि हीरा को जगाया। जो जाग जाता है, वही जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जो सोता है, जो अकर्मण्य है, उसकी चेतना का विकास नहीं हो सकता। सोया हुआ व्यक्ति तो जो उसके पास होता है, उसे भी खो देता है। प्रतिबोधित होकर मुनि हीरा ने जान

लिया कि जागना क्या है? उन्होंने समझ लिया कि सभी प्रकार के विषयों से अनासक्त होकर उनसे निवृत्त हो जाना ही जागना है। सम्बोधि की इस किरण से उन्हें रास्ता मिल गया। प्रत्येक क्षण का निष्ठापूर्वक उपयोग करते हुए मुनि हीरा ने आगम के इस शाश्वत सत्य को हृदयस्थ कर लिया कि शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श के पुद्गल परिणमन अनित्य हैं और उनमें राग-द्वेष न रखना ही बन्धन-मुक्ति का प्रथम सोपान है। इस तरह उन्होंने दुःखों को जाना, उनके कारणों को जाना और उनसे मुक्त होने के उपायों को भी जाना। उन्होंने यह भी जान लिया कि वैराग्य यद्यपि संसार से वियोग है, परन्तु उनमें भी एक संयोग छिपा है-आत्मानुभव का। गुरुदेव के सान्निध्य में उनकी साधना सघन हो गई और संयम सजीव हो गया। गुरु हस्ती जैसा सधा हुआ साधक जो ज्ञाता-द्रष्टा भाव में रमण करने वाला होता है, आत्म साधना में समर्पित होता है। उसकी साधना का आभावलय और उसके पुण्य-पवित्र परमाणुओं का प्रभाव ही ऐसा होता है कि उनके निकट-सान्निध्य में रहने वाला साधक भी तेजस्वी बनकर उभर जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु का आशीर्वाद भी हो तो उस साधक की साधना भी सिद्ध हो जाती है। कालान्तर में मुनि हीरा के साधक जीवन में ज्ञान और क्रिया का सुन्दर समन्वय हो गया। उनको संयम में आनन्द नहीं अपितु, उनके लिए संयम ही आनन्द हो गया, सहज हो गया, सरल हो गया और उनका सौन्दर्य भी हो गया।

गुरु के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय, अनुपम और अद्भुत था। मैं तो बचपन से ही उनकी गुरु के प्रति विनय का साक्षी हूँ। जीवन में योग्यता अथवा पात्रता का विकास समर्पण और निष्ठा से होता है। एक शायर ने कहा है-

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है।।

जब तक दाना मिट्टी में मिलकर अपने अस्तित्व को खोने के लिए तैयार नहीं होता है तब तक उसका अंकुरण नहीं हो सकता। उसका बड़ा होकर पौधा बनना और उसमें फल-फूल लगने का तो प्रश्न ही नहीं आता। लेकिन वही दाना जब मिट्टी के प्रति समर्पित होकर अपने अस्तित्व को मिट्टी में मिला देता है, तब वह फल-फूल जाता है और अपने जैसे अनेक दानों को भी उत्पन्न कर देता है। मैं एक महत्त्वपूर्ण बात और कहना चाहता हूँ कि गुरु शिष्य को ज्ञान का बीज तो देते हैं, उसे खाद-पानी भी देते हैं, बीज के अंकुरण की देखभाल भी करते हैं, लेकिन शिष्य का अंतस् यदि बंजर धरती की तरह है तब गुरु कुछ भी करले, उससे पौधा नहीं उग सकता। उर्वर धरती की तरह शिष्य में पात्रता होनी चाहिए। पात्रता आती है- दोषों के परित्याग से, संयम से, सेवा से, सदाचार से और गुरु आज्ञा के

अनुरूप अपना जीवन ढालने से। शिष्य में पात्रता के विकास से ही उस पर अपने सद्गुरु का रंग चढ़ता है। अध्यात्म के शिखर को छू लेने वाले गुरु को प्राप्त कर लेने पर भी यदि शिष्य में पात्रता नहीं है तो उसका विकास नहीं हो सकता। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि यदि अंतस् की आँखों में पात्रता का प्रकाश नहीं है तो शिष्य महान् गुरु को पाकर भी उसे सही तरह से पहचान भी नहीं सकता। इसलिए अध्यात्म जगत् हो या बाह्य जगत् व्यक्ति की विकास-यात्रा में प्राप्ति के पूर्व पात्रता अधिक महत्त्वपूर्ण है। दूध-मलाई खाने को मिल जाए, परन्तु पाचन शक्ति ही मन्द हो तो दूध-मलाई की प्राप्ति का कोई अर्थ नहीं। बेशुमार सम्पत्ति किसी को मिल जाए, परन्तु उसके पास समझदारी अथवा विवेक नहीं है तो मिली हुई सम्पत्ति से भी कोई लाभ होने की सम्भावना नहीं हो सकती। सोने का पेन भी मिल जाए, लेकिन लिखना नहीं आए तो वह पेन उसके किस काम का? इसी तरह एक अच्छे गुरु का सान्निध्य भी मिल जाए, लेकिन पात्रता नहीं है तो शिष्य का विकास सम्भव नहीं। प्रभु का सान्निध्य तो गौतम को भी मिला और गोशालक को भी मिला, परन्तु इतिहास साक्षी है कि गौतम ने किन ऊँचाइयों को छुआ और गोशालक की पात्रता के अभाव में उसकी क्या दशा हुई? गुरु परम गुरु को मिलाते हैं! गुरु को जब हम भगवान मानते हैं, तब भगवान स्वयं गुरु बनकर हमारे सामने आ जाते हैं।

समर्पण के साथ पात्रता हो तो वह प्राप्ति में परिणत हो जाती है। हमारे आचार्यप्रवर का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आचार्यप्रवर ने अपना तन-मन गुरु में विसर्जित कर दिया इसलिए उनको गुरु की गुरुता मिल गई। पत्थर एक शिल्पी के हाथों में पहुँच जाए, लेकिन वह गुरु का छेनी-हथौड़ा न चलने दे तो वह पत्थर ही बना रहेगा, मूर्ति नहीं बन सकता। जब शिल्पी पत्थर से अनावश्यक भाग को काट देता है तब वह पत्थर की प्रतिमा बन जाता है। समर्पण के साथ-साथ आचार्यप्रवर ने पात्रता भी अर्जित की, जो उनके भावी आचार्य की आधारशिला बनी। जब तक गुरु के साथ रहे, उनकी छाया की तरह रहे। गुरु के जाने के बाद उनकी पात्रता प्राप्ति में परिणत होकर उनके भव सागर तिरने का आधार भी बन गई।

गुरु के चरण कमल नत वंदन, जिससे भव सागर तिरते।
दत्त चित्त अनुशासित मन से, निज हिय प्रभु अनुभव करते।।

शिष्य जब सद्गुरु में परमात्मा का अनुभव करते हुए ध्यान में उतर जाता है तब 'ध्याने ध्यानं तद्रूपता' की उक्ति के अनुसार उन्हीं में रंग जाता है और अन्त में उन जैसा ही बन जाता है।

आगमी कार्तिक शुक्ला 6, वि. सं. 2069 को आचार्यप्रवर अपने अणगार जीवन

के पचासवें वर्ष में प्रवेश करेंगे। उस आने वाली शुभ वेला की स्मृति मात्र से ही मेरे हृदय के उद्गार आचार्यश्री की प्रशस्ति में निकल पड़ते हैं-

तुम कोन कहाँ से आये गणिवर, और कहाँ अब जाना है?
दृढ़ निष्ठा से तुमने ठाना, मुक्त अवस्था पाना है।।

स्वप्न जगत से मन को मोड़ा, उसमें तनिक न रमते हो।
संयम और समता में रहकर, जीवन में रस भरते हो।।

सकल परिग्रह, भोग त्याग के वैराग्य भाव में पलते हो।
निर्मोही बनकर जीवन में, निराबाध पथ चलते हो।।

रोम-रोम में, साँस-साँस में, जीवन के हर क्षण-क्षण में।
जाग्रत रहकर दर्शन करते, अन्तरमन के दर्पण में।।

करुणाकर से करुणा लेकर, दया भाव मन रखते हो।
निज में प्रभु सम्बन्ध जोड़कर, सतत सुखों में बहते हो।।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 10 का शेष सम्पादकीय.....)

आज चातुर्मासों में जितने व्यंजन बनते हैं उनकी आवश्यकता नहीं है। संघ में यह नियम बन जाना चाहिए कि कहीं भी चातुर्मास में 10 व्यंजनों से अधिक न बनें। आचार्यप्रवर इस प्रकार की प्रेरणा करते रहते हैं, किन्तु श्रावक अपनी शान रखने के लिए कोई लगाम नहीं लगा पा रहे हैं। अखिल भारतीय संघ यदि समुचित कदम उठाये तो सभी ग्राम-नगरों में इस पर नियन्त्रण हो सकता है। पेट तो दो-चार व्यंजनों से ही भर जाता है, आवश्यकता है उसे प्रेमपूर्वक, आदरपूर्वक परोसने की एवं प्रेमपूर्वक ग्रहण की। संघ की शोभा अधिक व्यंजनों को परोसने से नहीं, अपितु कम व्यंजनों में भी प्रेम का मिठास घोलने से होती है। व्यवस्था अच्छी होना अलग बात है और व्यंजन अधिक होना अलग बात है। व्यंजनों की सीमा होने से समय, अन्न, शक्ति, धन, स्वास्थ्य आदि सबकी बचत हो सकेगी।

परमपूज्य आचार्यप्रवर संघ शिरोमणि हैं, संघनायक हैं, संघ के मार्गदर्शक हैं, श्रद्धा उनके चरण चूमती है, वे ज्ञान और त्याग के मार्ग से जीवन को सुन्दर बनाने की प्रेरणा करते हैं। प्रव्रज्या के 50वें वर्ष पर उनके प्रति श्रद्धापूर्वक शत-शत प्रणाम करने के साथ यह भावना भाता हूँ कि यह संघ आपके नेतृत्व में सन्मार्ग पर चिरकाल तक निरन्तर आगे बढ़ता रहे।

दीक्षा-अर्द्धशती पर विशेष

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, जिनशासन गौरव संस्कार-निर्माण के प्रबल प्रेरक

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. : जीवन-रेखा

श्री नौरतन मेहता

(1) पारिवारिक-परिचय

दादा-	सुश्रावक स्व. श्री हरकचन्दजी गाँधी
दादी-	सुश्राविका स्व. श्रीमती शृंगारबाईजी
पिता-	वीरपिता सुश्रावक स्व. श्री मोतीलालजी गाँधी
माता-	वीरमाता सुश्राविका स्व. श्रीमती मोहिनीदेवीजी
सांसारिक भ्राता-	(1) सुश्रावक श्री शांतिलालजी-पीपाड़
	(2) सुश्रावक श्री प्रेमचन्दजी जैन-दिल्ली
सांसारिक बहिनें-	(1) श्रीमती चांदाबाईजी-श्री मोतीलालजी कटारिया-पीपाड़
	(2) श्रीमती सुशीलाबाईजी-श्री सोहनलालजी पितलिया-रतलाम

(2) जन्म

स्थान-	पीपाड़शहर (जिला-जोधपुर)
तिथि-	विक्रम संवत् 1995 चैत्र कृष्णा अष्टमी, दिनांक 13 मार्च,1939
नाम-	हीरा

(3) दीक्षा

तिथि-	विक्रम संवत् 2020 कार्तिक शुक्ला षष्ठी, दिनांक 23 अक्टूबर, 1963
स्थल-	हिन्दू महासभा के आगे प्रांगण, पीपाड़शहर (जिला-जोधपुर)
दीक्षा प्रदाता-	आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.
नेश्राय गुरु-	श्रद्धेय श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. (छोटे)

(4) गुरु सन्निधि में चातुर्मास :-

क्र.	विक्रम संवत्	ईस्वी सन् ग्राम/नगर	क्र.	विक्रम संवत्	ईस्वी सन् ग्राम/नगर
1.	2020	1963 पीपाड़शहर	2.	2021	1964 भोपालगढ़

3.	2022	1965 बालोतरा	4.	2023	1966 अहमदाबाद
5.	2024	1967 जयपुर	6.	2025	1968 पाली-मारवाड़
7.	2026	1969 नागौर	8.	2027	1970 मेड़ताशहर
9.	2028	1971 जोधपुर	10.	2029	1972 कोसाना
11.	2030	1973 जयपुर	12.	2031	1974 सवाईमाधोपुर
13.	2032	1975 ब्यावर	14.	2033	1976 बालोतरा
15.	2034	1977 अजमेर	16.	2035	1978 इन्दौर
17.	2036	1979 जलगाँव	18.	2037	1980 मद्रास
19.	2038	1981 रायचूर	20.	2039	1982 जलगाँव
21.	2040	1983 जयपुर	22.	2041	1984 जोधपुर
23.	2042	1985 भोपालगढ़	24.	2043	1986 पीपाड़शहर
25.	2044	1987 नागौर (स्वतन्त्र चातुर्मास)	26.	2045	1988 सवाईमाधोपुर
27.	2046	1989 कोसाना	28.	2047	1990 पाली-मारवाड़

(5) संघनायक के रूप में मनोनयन:-

विक्रम संवत् 2048 वैशाख शुक्ला नवमी, दिनांक 22 अप्रेल, 1991 को आचार्य श्री हस्ती के स्व-लिखित पत्र से निमाज नगर (जिला-पाली) श्रद्धांजलि सभा में।

(6) आचार्य पद-आरोहण:-

विक्रम संवत् 2048 ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, दिनांक 2 जून, 1991 को जोधपुर के सरदार स्कूल प्रांगण में चादर महोत्सव। इस अवसर पर रत्नसंघ के अलावा जयगच्छ व ज्ञानगच्छ के संत-सतीवृन्द एवं समीपवर्ती- सुदूरवर्ती सकल जैन समाज के हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे।

(7) विचरण क्षेत्र:-

राजस्थान के मारवाड़, मेवाड़, गोडवाड़, अजमेर-मेरवाड़ा, पल्लीवाल-पोरवाल, हाड़ौती क्षेत्र के अलावा, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेश।

(8) आचार्य पद प्राप्ति पश्चात् चातुर्मास

क्र.सं.	विक्रम संवत्	ईस्वी सन्	स्थान
(1)	वि.सं. 2048	1991	घोड़ों का चौक, जोधपुर
(2)	वि.सं. 2049	1992	बालोतरा

(3)	वि.सं. 2050	1993	जयपुर
(4)	वि.सं.2051	1994	नेहरु पार्क, जोधपुर
(5)	वि.सं. 2052	1995	विजयनगर
(6)	वि.सं. 2053	1996	अजमेर
(7)	वि.सं. 2054	1997	पीपाड़शहर
(8)	वि.सं. 2055	1998	मदनगंज
(9)	वि.सं. 2056	1999	नागौर
(10)	वि.सं. 2057	2000	जलगाँव
(11)	वि.सं. 2058	2001	धुले
(12)	वि.सं. 2059	2002	बालकेश्वर, मुम्बई
(13)	वि.सं. 2060	2003	इचलकरंजी
(14)	वि.सं. 2061	2004	शूले, बैंगलोर
(15)	वि.सं. 2062	2005	वेपेरी, चेन्नई
(16)	वि.सं. 2063	2006	बंगारपेठ
(17)	वि.सं. 2064	2007	बीजापुर
(18)	वि.सं. 2065	2008	कांदिवली, मुम्बई
(19)	वि.सं. 2066	2009	पालड़ी, अहमदाबाद
(20)	वि.सं. 2067	2010	पाली
(21)	वि.सं. 2068	2011	पावटा, जोधपुर
(22)	वि. सं. 2069	2012	महावीरनगर, जयपुर

(9) मौलिक विशेषताएँ:-

(1) ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम
(2) कथनी-करणी की एकरूपता
(3) आगम मर्मज्ञ एवं व्याख्याकार
(4) संस्कृति-रक्षण के हिमायती
(5) सिद्धान्तप्रियता
(6) वचन के धनी
(7) नयनाभिराम व्यक्तित्व
(8) निस्पृहता- निरभिमानता
(9) प्रसन्न वदन

(10) प्रमुख प्रेरणाएँ:-

(1) नियमित स्वाध्याय एवं धार्मिक-आध्यात्मिक शिक्षण पर बल

(2) धर्म स्थान में सामायिक
(3) व्यसन-मुक्ति
(4) शीलव्रत के खंद
(5) व्रती श्रावक
(6) रात्रि-भोजन त्याग
(7) संस्कार-निर्माण
(8) ध्यान-साधना

(11) शासनकाल में दीक्षाएँ:-

क्र.	दीक्षा स्थान	वि. सं.	माह/पक्ष/तिथि	दिनांक	संत	सती	योग
1.	सवाईमाधोपुर	2050	माघ शुक्ला 10 सोम	21.02.1994	-	7	7
2.	जोधपुर	2051	वैशाख शुक्ला 10 शुक्र	20.05.1994	-	1	1
3.	थांवला	2054	माघ शुक्ला 4 शनि	31.03.1998	-	2	2
4.	अजमेर	2055	वैशाख शुक्ला 7 शनि	02.05.1998	4	3	7
5.	जोधपुर	2055	माघ शुक्ला 14 शनि	30.01.1999	-	1	1
6.	नागौर	2056	भाद्रपद शुक्ला 13 गुरु	23.09.1999	-	1	1
7.	जलगाँव	2057	आ. शुक्ला द्वि. 9 शनि	07.10.2000	1	3	4
8.	जयपुर	2057	मार्गशीर्ष शुक्ला 10 बुध	06.12.2000	-	1	1
9.	जोधपुर	2057	मार्गशीर्ष शुक्ला 11 गुरु	07.12.2000	-	4	4
10.	पीपाड़शहर	2058	माघ शुक्ला 13 सोम	25.02.2002	-	4	4
11.	घोटी	2058	चैत्र शुक्ला 4 बुध	07.04.2002	1	-	1
12.	सूरत (गुज.)	2059	माघ शुक्ला 7 शनि	08.02.2003	-	1	1
13.	पुणे (महा.)	2060	वैशाख शुक्ला 11 सोम	12.05.2003	-	4	4
14.	शिमोगा	2060	माघ शुक्ला 13	04.02.2004	1	-	1
15.	जोधपुर	2063	वैशाख शुक्ला 6 बुध	03.05.2006	1	1	2
16.	पीपाड़शहर	2063	कार्तिक कृष्णा 5 बुध	11.10.2006	-	2	2
17.	शिमोगा (कर्ना.)	2063	माघ शुक्ला 7 गुरु	25.01.2007	-	1	1
18.	रायचूर	2064	वैशाख शुक्ला 12 रवि	29.04.2007	-	1	1
19.	बैंगलोर	2064	श्रावण शुक्ला 9 बुध	22.08.2007	-	1	1
20.	मुम्बई	2065	वैशाख शुक्ला 2 बुध	07.05.2008	1	3	4
21.	पीपाड़शहर	2066	ज्येष्ठ शुक्ला 5 गुरु	28.05.2009	2	2	4
22.	बालोतरा	2067	द्वि. वैशाख शुक्ला 2 शनि	05.05.2010	-	5	5

23. बैंगलोर	2067	द्वि. वैशाख शुक्ला 2 शनि	05.05.2010	-	4	4
24. भरतपुर	2067	द्वि. वैशाख शुक्ला 10 रवि	03.05.2010	-	1	1
25. चांगोटोला	2067	मार्गशीर्ष शुक्ला 9 बुध	23.05.2010	-	1	1
26. भोपालगढ़	2067	मार्गशीर्ष शुक्ला 9 बुध	15.12.2010	1	-	1
27. ब्यावर	2067	फाल्गुन शुक्ला 7 शनि	12.03.2011	1	1	2
28. जोधपुर	2068	वैशाख शुक्ला 2 गुरु	05.05.2011	-	1	1
				13	56	69

सन्त=13, साध्वी=56, कुल=69

(12) साधना-

(1) प्रतिदिन मध्याह्न 12 से 2 बजे तक ध्यान-मौन की साधना

(2) प्रत्येक सोमवार को मौन व्रत (3) कृष्ण पक्ष की दशमी को अखण्ड मौन।

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

वन्दन बारम्बार हमारा

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्जः- कलयुग का यह कैसा)

मान गुरु का दर्शन प्यारा, रत्नवंश का एक सितारा।
छोटा के इस गुणी नंदन को, वंदन बारम्बार हमारा।।
जोधाणा का लाल निराला, अचलचंद का कुल उजियारा।
इस आरे का केवलज्ञानी, पतित जनों का एक सहारा।
आगम ग्रन्थों के ज्ञानी तुम, तीर्थंकर की वाणी हो तुम।
उवज्झाय के पद पर हो तुम, मेरे लिए सर्वज्ञ हो तुम।।
जब तक तेरा नाम रहेगा, रत्नवंश इतिहास कहेगा।
हीरा-मान की अनुपम जोड़ी, संघ सदा जयवंत रहेगा।।
हरपल-हरक्षण का यह नारा, मान गुरुवर मोहनगारा।
गौतम, लोक को प्रतिपल-प्रतिक्षण, वंदन बारम्बार हमारा।।
आपका जीवन हरदम दमके, संयम सुरभि से यह चमके।
'गजेन्द्र' करता यही प्रार्थना, गुरुकृपा से प्रेरित बनके।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती पर विशेष

ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य श्री हीरा

श्री नौरतन मेहता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का जन्म आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक के दिन विक्रम संवत् 1995 की चैत्र कृष्णा अष्टमी तदनुसार 13 मार्च, 1939 को जोधपुर जिलान्तर्गत पुण्यधरा पीपाड़शहर में हुआ। पीपाड़शहर के ओसवंशीय संघ-सेवी सुश्रावक वीरपिता श्री मोतीलालजी गाँधी की कर्त्तव्यपरायणता और शान्त-सहज वीरमाता सुश्राविका श्रीमती मोहिनीदेवीजी की धर्मपरायणता का आपके जीवन में बचपन से संगम रहा। आपके अग्रज शांतिलालजी, अनुज प्रेमचन्दजी के अलावा तीन बहिनों के भरे-पूरे परिवार में आपका लालन-पालन बड़े दुलार से हुआ। घर-परिवार के धार्मिक संस्कारों के साथ सत्संग-सेवा और संत-समागम के सुयोग से बालक हीरा के जीवन में बचपन से आध्यात्मिक संस्कार सृजित हुए जो कालान्तर में पल्लवित, पुष्पित एवं फलित हुए।

बालक हीरा गौरवर्ण, सौम्य कान्ति और मनमोहक आकृति के कारण घर-परिवार के लिए ही नहीं, मौहल्ले और नगरवासियों के लिए चहेता था। धर्मस्थान में आते-जाते रहने से आबाल-वृद्ध सभी बालक हीरा को स्नेह व प्रेम देते। धर्मस्थान में संत-सतीवृन्द के सामने बैठे बालक में कभी उद्दण्डता-उच्छृंखलता और नादानी के भाव नही दिखे, शान्त-सहज और विनय-विवेक युक्त बालक हीरा का बैठना-उठना, आना-जाना सभी को बहुत प्रिय लगता था।

बालक हीरा का प्रारम्भिक अध्ययन घर पर हुआ। अक्षर ज्ञान प्राप्त होने पर ज्ञानार्जन हेतु उन्हें पाठशाला भेजा गया। पाठशाला में सहपाठियों के साथ पढ़ना, खेलना, खाना सब कुछ सहज-स्वाभाविक होता रहा। सुश्रावक श्री मोतीलालजी गाँधी ने नागौर में व्यापार-व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया, परिणामस्वरूप बालक हीरा को पीपाड़ से परिवार के साथ नागौर जाना पड़ा। पीपाड़शहर की तरह नागौर में भी बालक हीरा का व्यावहारिक शिक्षण चलता रहा। नागौर में भी संत-सतीवृन्द का प्रायः आवागमन रहने से पूरा गाँधी परिवार दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का लाभ लेता।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का सादड़ी सम्मेलन पश्चात् नागौर

चातुर्मास हुआ। बचपन में संस्कारों का पहले से बीजारोपण हो चुका था, धर्माचार्य-धर्मगुरु की सन्निधि में ज्ञानाभ्यास के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति भी रुचि व भावना जग चुकी थी। हीरा गुरु हस्ती के श्रीचरणों में आनन्द की अनुभूति करते हुए संघ-सेवा, संत-सेवा में सक्रिय हो गया। आचार्य भगवन्त के नागौर चातुर्मास के अनन्तर हीरा अजमेर एवं बीकानेर में ज्ञान-ध्यान में निरन्तर गति-प्रगति कर रहा था कि इस बीच छोटी बहिन का आकस्मिक वियोग हो गया, इससे संसार की अनित्यता और जीवन की क्षणभंगुरता का भी अहसास हो गया।

प्रतिकूलता में धर्म के प्रति सहज श्रद्धा जगती है। चौदह वर्ष की आयु में जब तक दो सामायिक नहीं हो जाती मुँह में पानी तक नहीं लेना, मध्याह्न 12 बजे चार लोगस्स का ध्यान करना मानो हीरा का नित्यक्रम बन गया। समय के साथ वय सम्पन्न होने पर नौकरी भी की, लेकिन न घर-परिवार में और न ही नौकरी में मन लगता अत: उदासीनता रहने लगी। दूरदर्शी गुरु हस्ती हीरा के स्वभाव से भली-भांति परिचित थे। वे अपना कोई सन्देश या समाचार किन्हीं संत-सतियों को भिजवाने होते तो युवा हीरा को कहते और जहाँ कहीं जरूरत होती वहाँ भेजते भी। विनय, विवेक और धर्माचरण से हीरा ने गुरु हस्ती का मन जीत लिया।

आचार्य भगवन्त ने विरक्त बन्धु एवं उनके माता-पिता व परिजनों के साथ पीपाड़ श्रीसंघ के अभिप्रायों को जान-समझकर वि.सं. 2020 की कार्तिक शुक्ला षष्ठी दीक्षा तिथि घोषित की तो पीपाड़शहर के आबाल-वृद्ध एवं जैन-जैनेतर समाज में ही नहीं, मारवाड़ और रत्नसंघ में हर्ष छा गया। पीपाड़ के हिन्दू महासभा के आगे वट वृक्ष के नीचे दीक्षा-महोत्सव का आयोजन अत्यन्त भव्यता से सम्पन्न हुआ। अब आप मुमुक्षु हीरा से मुनि बन गए।

दीक्षा के अनन्तर नवदीक्षित संतरत्न ने गुरु-चरण-सरोजों में धूप-छाँव की तरह अहर्निश सेवा में लीन हो विनय-विवेक-सरलता से शास्त्रज्ञान और बोल-थोकड़ों का अभ्यास किया। अपनी प्रज्ञा व प्रतिभा से नवदीक्षित संतरत्न ने न केवल गुरु हस्ती, अपितु समस्त सन्त-मुनिराजों का प्रेम पा लिया। ज्ञानी गुरुवर्य ने अपने शिष्यरत्न को संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण और आगम शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान करवाया। गुरु हस्ती की मस्ती में नवदीक्षित संत ने सबके प्रति प्रेम व आत्मीयता से कुछ ही वर्षों में चतुर्विध संघ में सुयोग्य संतरत्न की ख्याति अर्जित कर ली।

आपने राजस्थान के मारवाड़, मेवाड़, गोड़वाड, पल्लीवाल-पोरवाल और सीमान्त क्षेत्र बाड़मेर जैसे क्षेत्रों के साथ मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली,

तमिलनाडु, कर्नाटक जैसे प्रदेशों में आराध्य गुरुवर्य की चरण-सन्निधि में रहकर अपने शिष्यत्व को निखारा। गुरु-सेवा में रहते आपने साम्प्रदायिक सहिष्णुता, कथनी-करनी की एकरूपता, सिद्धान्तप्रियता और ज्ञान-क्रिया में सतत पुरुषार्थ से चतुर्विध संघ में सुयोग्य संत के रूप में अपनी पहचान बना ली। गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय सन्देश को जन-जन में प्रचारित करने वाले पं. रत्न श्री हीरामुनिजी आचार्य श्री हस्ती के संघहितचिन्तन को सदैव प्राथमिकता देते। आपके ओजस्वी एवं मर्मस्पर्शी व्याख्यानों से जन-जन के मन में धर्म के प्रति निरन्तर श्रद्धा जागृत होने लगी।

आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में वि.सं. 2020 से 2047 तक सम्पन्न 28 चातुर्मासों में मात्र एक नागौर चातुर्मास (वि.स. 2044) को छोड़कर शेष सभी चातुर्मास एवं विहार गुरु-सेवा में सम्पन्न हुए। गुरु-सेवा में रहकर आपने प्रवचन-प्रभाकर, पण्डित रत्न एवं आगमज्ञ सन्त के रूप में शौहरत हासिल की।

गुरु-सेवा में आपका समर्पण अद्वितीय रहा। आचार्य भगवन्त के वि.स. 2041 के जोधपुर चातुर्मास में स्वास्थ्य की प्रतिकूलता हो गई थी, उस समय पं. रत्न श्री हीरामुनिजी म.सा. ने न केवल सेवा का अपितु संघ-व्यवस्था का दायित्व अत्यन्त कुशलता पूर्वक निर्वहन किया। वि.सं. 2046 के कोसाना चातुर्मास एवं तदनन्तर पीपाड़ प्रवास में गुरु के प्रति दिन-रात सेवा में सजगता देखकर जनसमुदाय प्रभावित था। आचार्य भगवन्त के पाली चातुर्मास (संवत् 2047) पश्चात् स्वास्थ्य में प्रतिकूलता के परिणामस्वरूप विहार किधर हो, एक अहं प्रश्न समाज के समक्ष उपस्थित हुआ। निमाज और जोधपुर की पुरजोर विनति से एक ऊहापोह का वातावरण बन गया था, तब सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य ने यह कहकर कि आचार्य भगवन्त वचन के धनी हैं, आपश्री के मुँह से "निमाज का ध्यान रखूंगा" शब्द भले ही सहज में ही क्यों न निकले हों, भगवन्त निमाज की ओर विहार करें, ऐसी संभावना लगती है। आचार्य भगवन्त के तेरह दिवसीय तप-संथारे में सभी संतों ने साज दिया, परन्तु आचार्य भगवन्त पाली चातुर्मास में प्रवचन सभा में अपने दोनों सुशिष्यों (मानमुनि एवं हीरामुनि) को यह कहकर सम्बोधित करते थे कि मेरी ये दोनों भुजाएं मजबूत हैं। संलेखना-संथारा एवं पण्डित मरण से मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले आचार्य भगवन्त ने एक अनूठा कीर्तिमान बनाया, जिसमें पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की भूमिका व भागीदारी महत्त्वपूर्ण रही।

रवि पुष्य नक्षत्र में रात्रि में करीब 8 बजकर 15 मिनट पर उस दिव्य दिवाकर ने समत्वभावों में नश्वर देह का परित्याग करके एक इतिहास रच दिया। विगत 200 वर्षों में किसी आचार्य को ऐसा संथारा नहीं आया। प्रथम वैशाख शुक्ला नवमी, सोमवार तदनुसार

22 अप्रेल, 1991 को आचार्य भगवन्त के पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया। निमाज में 22 अप्रेल को ही श्रद्धांजलि सभा में आचार्य भगवन्त का हस्तलिखित पत्र पढ़कर सुनाया गया जिसमें प. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को आचार्य एवं पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. को उपाध्याय पद प्रदान किये जाने का उल्लेख श्रवण कर जनसमुदाय ने जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के नमस्कार महामंत्र के तीसरे व चौथे पद पर प्रतिष्ठित होने का अनुमोदन किया।

सूर्यनगरी-जोधपुर में वि.सं. 2048 की ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, रविवार, 2 जून, 1991 को चतुर्विध संघ द्वारा आचार्य पद चादर महोत्सव का आयोजन कर रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर का हर्षोल्लास के साथ अभिनन्दन एवं बहुमान किया गया। चादर महोत्सव पर रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के अलावा जयगच्छ और ज्ञानगच्छ के संत-सतीवृन्द ने अपनी महनीय उपस्थिति तो दी ही, गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के प्रति हार्दिक मंगलकामना भी व्यक्त की। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भगवान महावीर के धर्मशासन में पूर्वाचार्यों की गौरव-गरिमा रेखांकित करते हुए रत्नसंघ के एक-एक आचार्य की विशेषताएँ बताई और रत्नसंघ के संत-सतियों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रभावी प्रकाश डाला। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि अभी जो चादर ओढ़ाई गई वह प्रेम, श्रद्धा, स्नेह और निष्ठा की प्रतीक है। चादर का एक-एक तार एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, ऐसे ही संघ का हर सदस्य संघ अनुशासन से जुड़ा रहे और किसी का किसी से अलगाव नहीं रहे। तत्कालीन संघाध्यक्ष श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपेक्षा रखी कि आप रत्नसंघ की ही नहीं, सम्पूर्ण जैन समाज की अपेक्षाओं को साकार करेंगे।

नायकत्व का गुरुतर दायित्व संभालने के बाद आचार्यश्री ने पहला वर्षावास उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के साथ जोधपुर किया। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर के संयुक्त चातुर्मास जोधपुर के पश्चात् मदनगंज, जलगाँव और धुलिया में हुए। आचार्यप्रवर का वि.सं. 2048 का चातुर्मास जोधपुर हुआ फिर उन्होंने बालोतरा, जयपुर, जोधपुर, बिजयनगर, अजमेर, पीपाड़शहर, मदनगंज-किशनगढ़ एवं नागौर में चातुर्मास किए। आचार्यप्रवर ने नागौर चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर भीलवाड़ा, चित्तौड़ आदि क्षेत्रों को सिंचित करते हुए मध्यप्रदेश के ग्राम-नगरों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित की और महाराष्ट्र के जलगाँव (वि.सं.2057) में आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर का संयुक्त वर्षावास हुआ। जलगाँव की भांति धुलिया (वि.सं.2058) में भी दोनों महापुरुषों का चातुर्मास साथ-साथ रहा। आचार्यश्री ने वि.सं. 2057 से 2066 तक महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात जैसे प्रदेशों मुम्बई, इचलकरंजी, बैंगलोर, चेन्नई, बंगारपेठ, बीजापुर, अहमदाबाद आदि

नगरों में यशस्वी वर्षावास कर एक गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में विचरण धर्मगंगा बहायी। सभी प्रान्तों में धर्मस्थान में सामायिक करने, हर गाँव-नगर में कम-से-कम एक आयंबिल हर रोज करने, परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के साथ शासन सेवा में आबाल-वृद्ध सबकी सक्रियता होने की प्रभावी प्रेरणा की। शीलव्रत के खंद के साथ व्रती श्रावक बनने का अभियान बहुत गरिमापूर्ण रहा। सकल जैन समाज ने आचार्यश्री हीरा के प्रेरक व प्रभावी प्रवचनामृत का पान कर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में रुचि दर्शायी जो वस्तुतः प्रेरणादायी रही।

एक दशक पश्चात् आचार्यश्री राजस्थान पधारे। गुजरात के पालनपुर में आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ पर त्याग-तप के कई कार्यक्रम प्रारम्भ हुए वे पूरे वर्ष उत्साह पूर्वक चले। राजस्थान पधारने पर आचार्यश्री-उपाध्यायश्री आदि मुनिपुंगवों का मिलन गढ़सिवाना में हुआ। आचार्यश्री-उपाध्यायश्री के पावन सान्निध्य में बालोतरा में आचार्यश्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष में पाँच दीक्षाएँ हुईं तो बैंगलोर में चार, भरतपुर में एक, चांगोटोला में एक इस तरह ग्यारह मुमुक्षु बहिनों ने पावन प्रव्रज्या अंगीकार कर गुरु हस्ती के जन्म शताब्दी वर्ष को स्मरणीय बनाया। अब तक आचार्यश्री के शासनकाल में 13 संतों 56 साध्वियाँ, इस तरह कुल 69 दीक्षाएं सानन्द सम्पन्न हुई हैं।

आचार्यश्री के एक दशक पश्चात् राजस्थान पधारने के बाद पहला चातुर्मास पाली-मारवाड़ (वि.सं. 2067) हुआ, दूसरा जोधपुर (वि.सं. 2068) और तीसरा जयपुर वर्षावास (वि.सं. 2069) सम्पन्नता की ओर अग्रसर है। वि.सं. 2067 का आचार्यश्री का पाली वर्षावास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना की दृष्टि से सफल रहा, वहीं पाली वर्षावास में जैन-जैनेतर जनसमुदाय ने आजीवन शीलव्रत के खंद तो किए ही मर्यादित समय-सीमा के साथ सैंकड़ों दम्पतियों ने ब्रह्मचर्य व्रत के नियम स्वीकार किए। आचार्यश्री का वि.सं. 2068 का जोधपुर चातुर्मास यादगार चातुर्मास के रूप में संघ सदस्यों की स्मृति में रहेगा। जोधपुर वर्षावास में प्रवचन सभा का नज़ारा अद्वितीय रहा, वहीं छोटी-बड़ी तप-साधना में आबाल-वृद्ध सभी ने सत्पुरुषार्थ का परिचय दिया वह सदा स्मरणीय रहेगा। चातुर्मास में 31 मासखमण हुए, जिनमें युवक-युवतियों के साथ प्रौढ़-बुजुर्ग भाई-बहिन भी थे। बालक-बालिकाओं में संस्कार हेतु हर क्षेत्र में साप्ताहिक शिक्षण शिविर का शुभारम्भ जोधपुर वर्षावास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आचार्यश्री के जयपुर चातुर्मास में हर माह कोई-न-कोई विशिष्ट आयोजन रखा गया। स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर, अध्यात्म-चेतना शिविर, वीर परिवार सम्मान-समारोह, विद्वत परिषद् की राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं 1993 की तरह वृहद् सम्मेलन जयपुर चातुर्मास की याद सदा बनाए रखेगा।

आचार्यप्रवर के चातुर्मास चाहे राजस्थान में हुए अथवा राजस्थान के बाहर, सभी चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना, व्रतप्रत्याख्यानों के साथ संघ-समाज उन्नयन की भावना से सफल रहे। दक्षिणी प्रदेशों के विचरण-विहार में कई बार स्वास्थ्य की प्रतिकूलता भी रही, किन्तु आचार्यप्रवर ने अपने आत्मबल के सहारे विचरण-विहार की क्रमबद्धता बनाए रखी तथा दुर्गम घाटियों-कन्दराओं का रास्ता भी समत्वभाव से पार किया।

गुरु हस्ती की भांति गुरु हीरा भी संघ-समाज उन्नयन में सकारात्मक चिन्तन लेकर चलने वाले महापुरुष हैं। धर्म स्थान में सामायिक की प्रेरणा से गाँव-गाँव और नगर-नगर तक ही नहीं, महानगरों तक में सामायिक-साधना के प्रति जन-जन के मन में लगाव बढ़ा है। शासन दीप्ति का यह आयाम सर्वत्र सराहा गया। आचार्यप्रवर समाज-सुधार की दिशा में जन-जन को जागृत करते रहते हैं, परिणास्वरूप शादी-विवाह जैसे सामूहिक भोजों में रात्रि भोजन नहीं करने, व्यंजनों की मर्यादा रखने जमीकन्द का प्रयोग नहीं करने की प्रेरणा धीरे-धीरे ही सही, जनमानस में साकार होती जा रही है।

आचार्यप्रवर आडम्बरविहीन साधना के पक्षधर हैं। तपस्या के उपलक्ष्य में गाजे-बाजे, प्रभावना एवं प्रीतिभोजों पर कुछ अंकुश लगा है। आचार्यप्रवर तपों में ब्रह्मचर्य तप की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं। आचार्यप्रवर प्राय: प्रतिवर्ष अपनी आयु के जितने वर्ष होते हैं उतने आजीवन शीलव्रत के खंद करवाने का संकल्प लेकर चलते हैं। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से हजारों शीलव्रत के खंद हुए हैं। आचार्यप्रवर परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के सन्देशवाहक हैं, अत: आपश्री के सार्थक सद्प्रयासों से गाँव-गाँव, नगर-नगर में वैर-विरोध और मनोमालिन्य में कमी आई है। आचार्यप्रवर संघ-समाज में शांति और स्नेह बना रहे, इसकी प्रभावी प्रेरणा निरन्तर करते रहते हैं।

आचार्यप्रवर हर कार्य को निर्धारित समय पर स्वयं पूरा करते हैं और समय के सदुपयोग की प्रेरणा करते रहते हैं। आपश्री स्वाध्याय, ध्यान-मौन के साथ श्रमण जीवन के करणीय कार्यों को पूरे मनोयोग से करते हैं। गुरु हस्ती की चरण-सन्निधि में रहते आपने ज्ञानाभ्यास एवं सेवा में समय का भोग दिया, परिणामस्वरूप आपमें ज्ञान-क्रिया का बेजोड़ संगम है। गुणग्राहकता का भाव आपके जीवन-व्यवहार में रचा-पचा है। आपके व्यक्तित्व में अनेक विशेषताओं का संगम है। आप दो टूक शब्दों में बिना किसी लाग-लपेट के अपनी बात रखते हैं। आचार्यप्रवर निरभिमानी-नि:स्पृही जीवन जीने वाले महापुरूष हैं। आप लोक स्तुति के बजाय साधना-आराधना और त्याग-तप को प्रधानता देते हैं। जीवन में सरलता-सहजता, कथनी-करनी की एकरूपता और सबके साथ समन्वय आपकी विशिष्ट खूबी है। आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली है कि दर्शन-वन्दनकर्त्ता आपश्री की भव्य आकृति,

प्रसन्न मुखमुद्रा और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार देखते-देखते थकता नहीं। आपश्री का चुम्बकीय आकर्षण आबाल-वृद्ध सबको भाता है।

आचार्यश्री चतुर्विध संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के लिए निरन्तर कटिबद्ध रहते हैं। चतुर्विध संघ की सम्यक् सारणा-वारणा-धारणा करने के साथ संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को त्याग-तप के साथ जुड़कर आदर्श उपस्थित करने की प्रेरणा करते हैं। आपकी धारणा है कि संघ का प्रत्येक सदस्य चाहे छोटा नियम ही क्यों न लें, पर नियम की दृढ़ता से पालना करे। वय सम्पन्न श्रावक-श्राविकाओं को आप शीलव्रत का खंद करने, व्रती श्रावक बनने, दया-सँवर, उपवास-पौषध की साधना करने की प्रेरणा करते हैं तो युवक-युवतियों को सामायिक, स्वाध्याय और निर्व्यसनता से जोड़कर उन्हें सन्मार्गगामी बनाते हैं। बालक-बालिकाओं को संस्कार देने के लिए माता-पिता और परिवारजनों को सजग रहने की प्रेरणा करते हैं।

आचार्यप्रवर आचार-धर्म का स्वयं दृढ़तापूर्वक पालन करते हैं, चतुर्विध संघ में अनुशासन एवं ज्ञान-क्रिया के प्रति चेतना बढ़े इसके लिए भी आपश्री सतत प्रयासरत रहते हैं। आपश्री धीर-गम्भीर प्रकृति के महापुरुष हैं। अपनी सन्निधि में आने वालों को धर्म के सम्मुख लाने का प्रयास आप अभियान के रूप में चला रहे हैं।

स्थानकवासी समाज के सबसे वरिष्ठ आचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभारम्भ पर हम त्याग-तप की श्रद्धा समर्पित करें। आचार्यश्री का स्वास्थ्य समीचीन रहे, आप दीर्घायु हों और गुरु हस्ती की भांति संघ-समाज को निरन्तर आगे बढ़ाते रहें, इन्हीं मंगल मनीषाओं के साथ दीक्षा अर्द्धशती पर सविनय-सभक्ति वन्दन....नमन...अभिवादन !!

Internal Foes

Jainism is the religion which shows the powerful way to become as enlighted as Bhagwan Mahavir by transforming and refining own self and realising own soul after destructing all Karmas. It is the profound belief of Jain Dharma that no external force can make us either happy or sorrowful. So in this material world no one is either our friend or foe. Kaam, Krodh, Mada, Moha and Lobha all these internal bhavas (feelings) are the main foes. Through Sadhana-Aradhana-Upasana and Bhakti, we can control over these internal foes.

-Anubhav Jain, Jaipur (Raj.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

संयम-सुमेरु आचार्य श्री हीरा

श्री पदमचन्द गांधी

श्रमण जीवन एक परिचय

भारतीय संस्कृति विश्व की एक महान संस्कृति है। जिस संस्कृति ने विश्व को पावन प्रेरणा प्रदान की, प्रकाश स्तम्भ के रूप में पथ प्रदर्शन किया, जिसकी उदार और उदात्त विचारधारा के कारण जन-जन का अन्तर मानस सदा ही उसके प्रति श्रद्धा से नत रहा और विश्व गुरु का गौरव प्राप्त हुआ, उसी की एक धारा है- श्रमण संस्कृति। श्रमण संस्कृति ने विश्व को आध्यात्मिक जीवन जीने का संदेश दिया। श्रमण संस्कृति ने यह स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा की कि श्रमण बनने के लिए केवल बाह्य वेश परिवर्तन करना ही पर्याप्त नहीं है वरन् अन्दर के जीवन को परिवर्तित करना अनिवार्य है। जैन परम्परा में श्रमण-जीवन का मार्ग फूलों का मार्ग नहीं है, अपितु कांटों से भरा हुआ है। नंगें पैरों विचरण चमचमाती हुई तलवारों पर चलने के समान कठिन है, दांतों से लोहे के चने चबाने के समान है, कठिनतर है। धधकती हुई ज्वाला का पान करने के समान दुःसाध्य है। जो साधक धीर,वीर, गम्भीर और अत्यन्त साहसी होते हैं वे ही ऐसे दुर्गम पथ पर हंसते हुए और मुस्कराते हुए अपने कदम बढ़ाते हैं। जो व्यक्ति वासनाओं के दल-दल में फंसे हुए इन्द्रियों के प्रवाह में प्रवाहित हैं, उद्दाम इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं कर सकते हैं वे इस पथ को स्वीकार करने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

आगम-साहित्य में श्रमण-जीवन का जो शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया है, उसके अनुसार श्रमण ममता-रहित, निरहंकार, निसंग एवं नम्र होता है और प्राणिमात्र पर उसके अन्तरमानस में समभाव की सरिता प्रवाहित होती है। चाहे लाभ हो या हानि, चाहे सुख के सुरभित सुमन महक रहे हों, चाहे दुःख के नुकीले कांटों की चुभन, चाहे प्रशंसा के गीत गाये जा रहे हों, उसमें सर्वत्र समभाव रहता है। वह न राग के प्रवाह में प्रवाहित होता है, न द्वेष के। वह सदा सहिष्णु रहकर निजभाव में रमण करता है। विश्व के लिए इस प्रकार के श्रमण मंगल मूर्ति रूप होते हैं। उनके जीवन में सत्य और करुणा का अपार सागर प्रतिपल हिलोरें लेता है। कठिन से कठिन परीषह आने पर भी वह मेरु पर्वत की तरह अप्रकम्प रहता है। वह समुद्र के समान गम्भीर, चन्द्र के समान शीतल, सूर्य के समान तेजस्वी, शेर के समान निर्भीक और पृथ्वी के समान क्षमाशील होता है। संसार की कोई भौतिक चकाचौंध

उनके मन को आकर्षित नहीं कर सकती। वस्तुतः इतना पवित्र और निर्मल होता है श्रमण जीवन।

निर्ग्रंथ जीवन सहजता का महाकाव्य होता है। उसकी गति, स्थिति, प्रवृत्ति, प्रकृति के साथ लयबद्ध होती है। श्रमण का जीवन आश्चर्यों का महालेखा नहीं होता, किन्तु चेतना का उन्मेष होता है, उनके हर आचरण में मनुष्य नये उच्छ्वास, नयी प्रेरणा तथा नई प्रकाश-शक्ति का अनुभव करता है। सन्त जीवन की सामान्य परिकल्पना के अनुरूप नहीं जीता, वह उस शृंखला की एक कड़ी के रूप में जीवन को देखता है, जो शाश्वत को देश, काल के किनारों से बांधकर बहती नदी की तरह सतत प्रवाहमान है। श्रमण स्वयं को उत्तेजना के क्षणों से दूर ले जाकर चेतना के साक्षात् क्षण का द्रष्टा होता है। वह स्वयं का स्रष्टा, निर्माता एवं नियन्ता होने के साथ-साथ स्वचेतना का विस्तार विश्व चेतना के साथ कर समग्र का साक्षी होता है।

'श्रमण' स्वयं को केन्द्र बनाकर जीता है। परम्परा का वह अपवाद होता है, किन्तु परम्परा उसका अनुगमन करती है। उसका जीवन निपट अपना होकर भी समस्त को समर्पित होता है। अतः श्रमण की कोई भी जीवन गाथा उसके समग्र अस्तित्व का आकलन न होकर मात्र उस जीवन की ओर हमारे अभिमुख होने की एक कांक्षा मात्र है।

आचार्य श्री हीराचन्द्र : जन्म एवं बाल्यकाल

ऐसे ही अनन्त आस्था के केन्द्र, जन-जन के विश्वास के अमर सेतु, श्रद्धा निधि, पूज्य गुरुवर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज हैं, जिनका जन्म (13 मार्च, 1939 ग्राम पीपाड़, जिला-जोधपुर में)हुआ। वे तब जन्मे, जब परतंत्रता के पिंजरे से मुक्त होने के लिए भारत स्वतंत्रता के अनन्त विस्तारी आकाश की ओर निहार रहा था। वे तब जन्मे, जब धर्म, समाज और राजनीति की त्रिवेणी स्वतंत्रता के प्रयाग पर संगम के लिए मचल रही थी। वे तब जन्मे, जब मानव मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए व्यक्ति विश्व स्तर पर आन्दोलन कर रहे थे। अतीत के दबे हुए अवशेषों पर नवीनता के शुभ संकेत दिखाई दे रहे थे। वे तब जन्मे, जब आस्था समर्पण तथा विश्वास के प्रतिमान नये अर्थ मांग रहे थे। वे तब जन्मे तब अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का जय लेख लिखा जा रहा था। वे तब जन्मे जब भगवान आदिनाथ तीर्थंकर का जन्म कल्याणक मनाया जा रहा था।

आप उस धरा से अवतरित हुए जहाँ आचार्य भगवन्त श्री हस्ती ने जन्म लिया तथा जिनशासन का गौरव बढ़ाया। आप "मोती" का 'हीरा' तथा मोहिनी के 'लाल' के नाम से जाने जाते थे। मोहिनी बाई की गोद में जिस "बिरवे" का जन्म हुआ, उसी अंकुर ने महावृक्ष तक की सफल यात्रा की। इसी यात्रा के बीच जो पल्लवन, पुष्पन, विकसन का

क्रम प्रारम्भ हुआ वह विकास के कई क्षितिज को छू रहा है। व्यक्तित्व के इस विविध वर्णीय इन्द्रधनुष में जो रंग भरे हैं वे कब, किसने कहाँ भरे इसका लेखा-जोखा उनके जीवन की हर प्रवृत्ति से बोलता है।

शैशव-जीवन का बीज काल है। सृजन और ध्वंस के समस्त संस्कार इसी बीजावस्था में मानव जीवन पर पड़ते हैं। वे बीज ही व्यक्तित्व को दिशा देते हैं और दिशा पर निर्भर करती है व्यक्तित्व की दशा। व्यक्तित्व की अनन्त सम्भावनाओं का दर्पण होता है शैशव। जो विकास व्यक्तित्व के भीतर होता है उसकी परछायी बचपन में देखी जा सकती है। कहते हैं "पूत के पांव पालने में ही नज़र आ जाते हैं।" क्रिया, प्रक्रिया एवं विचार-व्यवहार के सभी आधार शैशव के संस्कारों में ही सुदृढ़ होते हैं। जीवन की आधारशिला शैशव है और शैशव की आधार भूमि है 'संस्कार'। शैशवावस्था में ही धार्मिक संस्कार विरासत में प्राप्त हुए। सन्त-समागम, सत्संग-सेवा एवं आध्यात्मिक पृष्ठ भूमि के सिंचन से आपमें आध्यात्मिकता के अंकुर प्रस्फुटित हुए। जो उम्र खेलने कूदने की थी, उद्दण्डता, उच्छृंखलता और मस्तियों की थी, उस उम्र में संत-सती के समान मुँहपत्ती लगाकर निरन्तर बैठना धार्मिक अध्ययन करना शुभ संकेत था। खेलने की उम्र में आपने श्रद्धेय श्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी महाराज के चरणों में रहकर सामायिक, प्रतिक्रमण एवं थोकड़ों का अभ्यास किया। माता-पिता एवं गुरु के संस्कारों के सांचों में ढला हीरा "कोहिनूर" हीरे की तरह भास्वर बनता गया। शैशव के सुन्दर समय के भीतर जब संस्कारों की खिड़की से झांक कर देखते हैं तो एक अपूर्व योग्यता के दर्शन इस बालक में दिखाए दिए।

दीक्षा एवं शिक्षा

गुरु चरण-सेवा में समर्पित सुज्ञ हीरा को संसार की असारता का बोध बहिन के वियोग से हुआ। धर्माचरण से शाश्वत शान्ति का राजमार्ग गुरु सेवा में रहते हुए मन में रम चुका था। आपने गुरु के आदेशों को कर्त्तव्य मानकर पालन किया। इसमें आने वाली बाधाओं को सहजता से निवारण करते हुए अध्यात्म की आधार भूमि तैयार की तथा अपनी संकल्प शक्ति को विकसित किया। यह स्पष्ट है कि जो शिष्य अपने गुरुदेव के विचारों को निरन्तर मनन करते हुए उसमें स्वयं को घोलता है, अपने विचारों की सोच व संरचना को उनके अनुरूप तैयार करता है वह महान बन जाता है। जो शिष्य स्वयं को सम्पूर्ण रूप से गुरु के उद्देश्यों, आदेशों व आदर्शों के लिए अपने आपको लीन कर देता है, समझ लो वह समग्र योग की साधना में लीन हो गया है, क्योंकि योग साधना के ये सभी रूप गुरु सेवा से स्वतः सिद्ध हो जाते हैं। आपका ऐसा ही दृढ़ संकल्प था जिसे किसी भी तरह कोई डिगा नहीं

सका, क्योंकि जिसके दिल में त्याग की भावना हो, मन में फौलादी जज़्बा हो, रगों में कर्त्तव्य का उष्ण रक्त प्रवाहित हो तथा नस नाड़ियों में साहस का संचार हो तो शक्ति को न तो परिस्थितियाँ डिगा सकती हैं और न कोई मानव या देव-दानव विचलित कर सकता है। ऐसी दृढ़ता के कारण विक्रम संवत् 2020 कार्तिक शुक्ला षष्ठी को पीपाड़ शहर में पूज्य आचार्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज के मुखारविन्द से चतुर्विध संघ के समक्ष दीक्षा अंगीकार की।

जीवन के 25 बसन्त के व्यतीत होने पर पूर्ण परिपक्व युवा में आपने श्रमण जीवन में प्रवेश किया। यह उम्र पिता को सहारा देने की होती है, व्यापार एवं वाणिज्य में जाने की उम्र होती है। सतरंगी जीवन जीने की उम्र होती है। शादी हेतु घोड़ी पर चढ़कर नवनवेली को लाने की उम्र होती है। अपने सुनहरे सपनों की रंगीन दुनियाँ के भोग की उम्र होती है। आज के युवा इस उम्र में जहाँ इन्टरनेट, मोबाइल, आईपैड, टी.वी. तथा ई-संस्कृति में रमण करते हुए नई बुलन्दियों की प्राप्ति हेतु विकास की चरम ऊँचाइयों को छूने का लक्ष्य बनाते हैं। आपने इसी वय में जिनवाणी के अनूठे विरल रहस्य को हृदयंगम कर मोक्ष-मार्ग पर कदम रखा। यह संकल्पशक्ति का ही परिणाम है।

मर्यादाओं के महासागर

गुरुदेव मर्यादाओं में बंधे महासागर के तुल्य हैं। आप करोड़ों में एक है जिनकी पहचान एवं आभा अलग से झलकती है। आपका कृतित्व ही आपका व्यक्तित्व है। गहरे अर्थों में गुरु अपने भीतर कई व्यक्तित्व लेकर जीता है। उसके एकाकीपन में कई व्यक्तित्व बोलते हैं। सच्चा सद्गुरु वही है जो अपने शिष्य में साकार होता है, सच्चा शिष्य वही है जो गुरु के आकार में स्वयं को ढालता है। ऐसे लोग बहुत होते हैं जिनके हृदय में गुरु विराजमान होते हैं, लेकिन वे विरले ही होते हैं जो गुरु के हृदय में विराजमान होते हैं। मुनि हीरा ऐसे ही शिष्य रहे जो गुरुदेव पूज्य आचार्य हस्ती के हृदय में विराजित रहे।

जीवन के अमृत, शिष्यों के छत्र, साधना के स्वर्णपत्र ऐसे अनन्त आस्था के आयाम पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी महाराज प्रातः चार बजे उठकर अपने शिष्यों को जगाते हैं। जगाना गुरु का स्वभाव है। गुरु जागरण का दूत है। वह जागृति के भोर की पहली किरण है। वह सूरज उगने से पहले उगता है, मानो सूरज की प्रसुप्ति तोड़ने का दायित्व उसके पास हो। सूरज सबको जगाने वाला है। गुरु भी सूरज की तरह जागृति के सूत्रधार हैं। जागृति में निर्व्यसनता को आप सम्यक् आचरण का प्रथम सोपान मानते हैं। रात्रिभोजन-त्याग को आप जैनत्व की पहचान, स्वास्थ्य के रक्षण तथा संयम और अहिंसा की पालना के लिए आवश्यक मानते हैं। आप समभाव की प्राप्ति हेतु सामायिक को, ज्ञानार्जन हेतु स्वाध्याय

को, आस्रव-निरोध हेतु संयम को तथा कर्मनिर्जरा हेतु तप को आधार रूप में प्रतिपादित करते हैं। आप धर्म-प्रचार के साथ-साथ आचार-धर्म के संदेशवाहक हैं। संघ समाज में जैनत्व का गौरव जगे, मर्यादाओं का रक्षण हो और आडम्बरहीन साधना में जैन समाज गतिशील हो ऐसे नये आयाम प्रस्तुत करते हैं।

संयम के शिल्पी

पदचिह्नों से पगडण्डियाँ बनाते सन्त समय के अनूठे शिल्पी होते हैं। अतीतकाल के हर टुकड़े से वर्तमान रचते हैं। सन्त समय के सतत प्रवाह को पहचानते हैं, पानी आने से पहले ही पाल बांध देते हैं, क्योंकि जो सिद्धान्त अनुभूतियों के आलोक पथ से गुजरता है वही लोक ग्राह्य होता है। महावीर की अहिंसा-ज्ञान की भाषा ही नहीं, अपितु अनुभूतियों का सहज भाव है। संत युग का निर्माण करते हैं। समय की मर्यादाओं में रहकर नई कल्पनाओं एवं रचनाओं का सृजन करते हैं। ऐसे ही आचार्य श्री हीरा हैं जो स्वयं के शिल्पी तो हैं ही साथ में शिष्यों श्रावक-श्राविकाओं के निर्माण में भी कुम्भकार की तरह परिपक्वता को तराशते हैं।

प्रयोगों के बीज मंत्र

युगों-युगों को त्राण देता महा प्रतीक है आपका जीवन। क्योंकि संत में जब रचनाकार उभर जाता है तो उसके भीतर का युग पुरुष अंगड़ायी लेता है। वह समय का आश्वासन बन जाता है। संत की दैनिक क्रियाएँ समय की निरन्तरता में बोलती हैं। उनके भीतर से जो प्रयोग फूटता है उसका उद्गम "आगम" होता है। वह स्वयं मौन रहता है और शताब्दियाँ उनके बोल बोलती हैं। उनके प्रयोग ही युवाओं की प्रेरणा के स्रोत होते हैं। ऐसे अनूठे आध्यात्मिक प्रयोग जो जीवन की दिशा बदल देते हैं। संत एक प्रयोग भूमि का निर्माता होता है, जिस पर इतिहास अपने पांव पसारता है। समय का अवशेष अपना स्मारक उस भूमि पर बनाने को आतुर रहता है। प्रयोगों के पर्वत उस भूमि के आधार स्तम्भ होते हैं। अजेय आधार स्तम्भ को देखकर शताब्दियाँ प्रेरणा पाती हैं। कई इतिहास उस आधार स्तम्भ के नीचे आकर शरण ग्रहण करते हैं। रचना का वह विलक्षण शिल्पकार स्वयं आवरण में रहता है और व्यक्त रहती है उसकी कृति। श्रमण के भीतर फूटा सृजन का वह प्रयोग समय का दर्पण होता है जिसमें प्रतिबिम्बों की अनन्त रेखाएँ उभरती हैं। दूसरों के लिए कुछ रचते रहने में उसकी रचना अनियोजित हो जाती है। अनियोजित रचना भी अनचाही प्रार्थना की तरह पवित्र होती है। आचार्य भगवन्त अपनी रीति-नीति से नये प्रयोंगों द्वारा साधना करते हैं जो आचरण बन जाती है, यह आचरण ही आपकी अभिव्यक्ति है, संदेश है, एवं प्रेरणा है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के मानस पर स्वतः

अमिट पहचान बन जाती है।

उज्ज्वल नक्षत्र

जिसने आचार्य हस्ती की शीतल छांव में ज्ञान, दर्शन, चरित्र की आराधना की हो, आगम, थोकड़ों के तलस्पर्शी ज्ञान का मंथन कर सार, निकाला हो तथा प्रकाण्ड पाण्डित्य, गहन आध्यात्मिक अध्ययन तथा धारा प्रवाह प्रवचन शैली की कला हासिल की हो। उन सन्त महापुरुष का क्या कहना। संयम निष्ठा, संघ ऐक्यभावना, सेवा समर्पण एवं श्रद्धा की भावना से ओत-प्रोत आपके विभिन्न गुणों तथा शासन संचालन प्रतिभा के कारण पूज्य आचार्यप्रवर हस्ती ने आपका नाम आचार्य पद हेतु लिखित में मनोनीत किया। उक्त गुणों के आधार पर सूर्य नगरी जोधपुर में दिनांक 2 जून, 1991 में चतुर्विध संघ द्वारा चादर महोत्सव में चादर अर्पण कर आपको रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर के रूप में प्रतिष्ठिापित किया गया और आप रत्नसंघ के उज्ज्वल नक्षत्र बन गये।

युवाओं के लिए नई दिशा

दिशाहीनता आज युवाओं का आम सच है। देश के बहुसंख्यक युवा इस समस्या से घिरे हुए हैं। जीवन की राहों पर उनके पांव बहक रहे हैं- भटक रहे हैं। फिसल रहे हैं। बस जिज्ञासा, कुतूहल, ख्वाहिश, शौक या फैशन के नाम पर उन्होंने टेढ़ी-मेढ़ी राहों को चुना है या फिर तनाव, हताशा निराशा या कुंठा ने जबरन इन रास्तों पर धकेल दिया है। सामाजिक वातावरण भी इन्हें आज स्वीकार करता जा रहा है। आज युवाओं में जिस नशे का जोर है उसमें शराब, सिगरेट, चरस, गांजा, अफीम, तम्बाखू आदि को कोई स्थान नहीं है, इन्हें अब "सॉफ्ट आइटम" माना जाता है। आज का नया शगल जिसे युवा अपने तनाव को दूर करने का साधन बना रहे हैं वह है- "पब" नाइट क्लब, कॉफी रेस्तरां, जहाँ उन्हें मिलता है चिल्डवाटर, एनर्जी ड्रग्स, बेसिर पैर वाले हंसी मजाक, नशे में डूबो देने वाले पॉप म्यूजिक, डाँस और शट्र्स। शट्र्स अर्थात् नशे के जरिए ली जाने वाली हेरोइन या कोकीन। ऐसी दिशाहीनता के लिए यदि सही दिशा प्रदान करते हैं तो बस, आचार्य भगवन्त, जिनका प्रेरक एवं सम्यक् व्यक्तित्व युवाओं को सन्मार्ग एवं सदुद्देश्य पर चल पड़ने के लिए प्रेरित करता है। व्यसन-मुक्ति अभियान इसी का परिणाम है। आपने हजारों युवकों को व्यसन से मुक्त कराया है। गुरु ही एक दिशा सूचक यंत्र है जो जीवन नैया को गंतव्य स्थान तक पहुँचाता है तथा युवाओं का जीवन संवारता है।

आज इस पंचम आरे में तीर्थंकर, केवली भगवान, मनःपर्याय ज्ञानी, अवधिज्ञानी कोई नहीं है। आज अगर कोई आधार स्तम्भ है तो जिनवाणी, आगमवाणी और इनका मंथन कर समझने वाले है "गुरु भगवन्त"। आज आध्यात्मिक गुरु ही हमारे जीते जागते

तीर्थंकर जैसे हैं। हमारा जीवन एक नौका के समान है, जो क्रोध, मान, माया, लोभ, व्यसन, कुसंगत, दुराचरण आदि चट्टानों से टकराती रहती है। गुरु भगवन्त आकाशदीप बनकर हमें सूचित करते हैं तथा आगाह करते हैं-"हे आत्मजनों, इन राहों पर न चलो, यदि कषायों की चट्टानों से टकरा जाओगे तो भवोभव बिगाड़ लोगे।" ऐसे गुरुदेव हमें सावधान करते हुए रक्षक एवं प्रहरी का कार्य भी करते हैं।

अध्यात्म के दर्पण

गुरु भगवन्त सत्य एवं अध्यात्म के दर्पण हैं। यदि उनमें कोई झांक कर देखे तो स्पष्ट होगा। आपकी सामाचारी, आपकी क्रिया, कितनी सुदृढ़ एवं सुनिश्चित है, इसी कारण गुरुत्व का आभामण्डल हर किसी को प्रभावित करता है। ऐसे गुरुभगवन्त जिनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होता है, जिनका आचरण ही बोलता है, ऐसे प्रतिभा के धनी के आह्वान पर हर कोई उमड पड़ते हैं, इनके पावन चरणों में व्रत-नियमों का अम्बार लगा देते हैं। गुरु ही सद्कर्म करने का सर्वभौम संदेश देते हैं और कहते हैं "**उत्तष्ठित्त जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**" अर्थात उठो, जागो और श्रेष्ठ आचरण कर जीवन के लक्ष्य पर पहुँच जाओ। ऐसे गुरु आदर्श होते हैं, जिनमें जीवन के आदर्शों की चरम गुणवत्ता झलकती हो। आपकी जीवन-चर्या की रीति नीति से तथा आपकी अमृतमयी वाणी से खासतौर पर युवा प्रभावित होता है जो आपके जीवन से जीने का मार्ग भी तय कर लेता है। संयम मार्ग पर चलना सीखता है-युवा। सहनशीलता का मार्ग प्रशस्त करने वाले गुरु भगवन्त हमें सच्चाई का आईना दिखाते हैं।

श्रद्धा, समर्पण एवं आस्था की नींव डालते हैं गुरु भगवन्त

आज युवकों में श्रद्धा, समर्पण एवं आस्था की कमी है। उन्हें आज ही परिणाम चाहिए, कल का धीरज उनमें नहीं, ऐसे में वे गुरु के समीप आना ही नहीं चाहते। यदि आते हैं तो बहुत कम। लेकिन आचार्य भगवन्त में तो गुरुत्वाकर्षण बल है, अपने प्रभाव से प्रभावित कर लेते हैं तथा आध्यात्मिकता जाग्रत कर देते हैं, जो उनके जीवन में समाविष्ट हो जाती है। आस्था की प्रगाढ़ता इतनी हो जाती है कि विदेशों में भी वह युवा अपने आपको अशुद्ध नहीं कर पाता अर्थात् सम्पूर्ण रूप से जैन जीवनशैली का पालन करता है। आप ऐसी आध्यात्मिकता जगा देते हैं जिससे व्यक्ति की भावनाओं का स्तर ऊँचा उठकर अपने अन्तरंग को विकसित कर लेता है। गुरुवर भक्तों को गुलाब की तरह खिलना एवं महकना सिखाते हैं, चन्दन सी शीलता हमारे जीवन में भरते हैं। हमारे भीतर दीपक की तरह अलौकिक भावनाओं की ज्योति जगाते हैं तथा जीवात्मा को विकसित करते हैं। सच्चा गुरु वही होता है जो स्वयं वीतरागता को अपनाता है तथा दूसरों को सुगमता की राह दिखाता

है। अतः युवा पीढ़ी स्वयं चयन करे कि उन्हें किस तरह के गुरु की शरण में रहना चाहिए।

यदि मन में सच्ची श्रद्धा है तो आस्था स्वतः आ जाती है। आध्यात्मिकता की कुंजी है श्रद्धा। सफलता की जननी है श्रद्धा। श्रद्धा गुरु के प्रति होनी चाहिए, यह कहाँ से कहाँ ले जाती है इसकी महिमा अपरम्पार है। "गुरुवाक्य" को "ब्रह्मवाक्य" कहा गया है अतः गुरु के प्रति दृढ़ श्रद्धा हो एवं उनके निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन हो। ऐसा शिष्य संशयों का अन्त कर कर्मों की निर्जरा करता है तथा सदैव सुखी एवं प्रसन्न रहता है तथा दिव्यकर्मी कहलाता है। आपकी प्रेरणा गहराइयों में झांकने को अग्रसर करती हैं। गुरुदेव आप धन्य हैं।

सच्चे गुरु के लिए तो सैकड़ों जन्म समर्पित किए जा सकते हैं। सच्चा गुरु वहाँ पहुँचा देता है जहाँ शिष्य अपने पुरुषार्थ से कभी नहीं पहुँच सकता है। हे गुरुवर! आप महान् हैं, क्योंकि बिन गुरु के जीवन शुरु ही नहीं होता। आप जैसे गुरु को पाने के लिए जन्मों-जन्मों की साधना करनी पड़ती है तब जाकर कहीं आपकी चरण शरण प्राप्त होती है। नामधारी गुरु तो कई हैं, पर प्राणधारी कोई कोई होता है ऐसे असीम-अनन्त-अखूट-अलौकिक गुणों के धारी गुरुवर आपश्री के चरणों में हम सब नत हैं, प्रणत हैं।

-25, बैंक कॉलोनी, महेशनगर विस्तार (बी), गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015

आओ, स्वाध्याय करें

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

राजस्थान से आने के बाद, अचानक शरीर में कमजोरी महसूस होने लगी। बोलने तथा चलने-फिरने में भी मुश्किल होने लगी। अब धीरे-धीरे स्वास्थ्य ठीक हो रहा है।

दोपहर में कमजोरी के कारण, नींद आँखों से ओझल हो रही थी। थका-हारा बैठा था कि अचानक किसी ने एक पुस्तक 'अर्चना के मोती' हाथ में दी। किताब के पन्ने पलटने लगा, पढ़ रहा था, आनन्द आ रहा था। पता ही नहीं चला, कब एक घंटा बीत गया। समय जैसे हवा में उड़ गया हो। पढ़ता रहा और आनन्द आता रहा। शायद इसी आनन्द को प्राप्त करने के लिये आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. स्वाध्याय करने की प्रेरणा दिया करते थे।

विनम्र निवेदन है कि आप भी अपने ऑफिस में जहाँ बैठते हैं, वहाँ दो पुस्तकें अवश्य रखिये, जब भी समय मिले, पुस्तक उठायें और उसे पढ़ें। आपके ज्ञान में भी अभिवृद्धि होगी और अन्तर में अच्छे गुणों की जड़ें भी गहरी होंगी। समय भी आनन्द के साथ व्यतीत होने लगेगा।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

अभिवन्दन कर हरषाएं

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(तर्जः- जहाँ डाल-डाल पर)

पूज्य हीरा गणी युग युग जीओ, जग सारा जिन्हें बधाए,
अभिवंदन कर हरषाएं।।

जन्म और जीवन सार्थकता का, बोध सभी हम पाएं,
उज्ज्वल भविष्य सरसाएँ।।

ज्ञान क्रिया की मंगल गाथा, आगम अमिरस दाता,
कलयुग में बन नव निर्माता, वीर वचन संधाता,
प्रज्ञा की निर्मलता से गुरु, रत्न वंश चमकाए।। 1।।

निर्मल, निश्चल, निरभिमान, मन ग्रंथिहीन प्रतिपल है,
व्यसन-मुक्ति के संदेशों से, गूंज रहा भूतल है,
श्रद्धा और समर्पण से गुरु, पुण्य स्रोत कहलाए।। 2।।

छह काया के जो प्रतिपालक, हम शरण आपकी पाएं,
जीवन जीना सीख-सीख कर, भव-भव से तिर जाएं,
हीरा के इस महा सिन्धु से, मुक्ति मणियां पाएं।। 3।।

दृढ़ निष्ठा से नियम निभाते, उच्चादर्श को धारें,
अनुशासन, वात्सल्य, कृपालु, मुख मुद्रा दमकाए,
अन्तर यात्रा का बोध पाठ पा, जीवन हम चमकाएं।। 4।।

सुमेरु के उच्च शिखर सा, उन्नत चिंतन पाएं,
सामायिक-स्वाध्याय के संग, ध्यान का शंख बजाएं,
कुशल वंश के महासूर्य से, ज्योति अखंड हम पाएँ।। 5।।

-प्रमोद दाल मिल, कानपुर

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

समवसरण में आठ दिन

श्री राजेन्द्र जैन 'राजा'

प्रभु के आगमन का संदेश सुना, मन आह्लादित हुआ और एक-एक घड़ी चिर प्रतीक्षा में बदलने लगी, नयनरश्मि ठीक उसी तरह बाट जोहने लगी जैसे मयूर पानी से भरे बादलों की, सीप स्वाति की बूंदों की और प्रचण्ड धूप में पथिक किसी पेड़ की छाँव की बाट जोहता है।

प्रभु के चरणों को पखारने की सोच कर मन भक्ति में इतना भाव विह्वल हो उठा, जैसे प्रभु राम के आगमन की सुनकर शबरी की भक्ति चरम पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी। वो प्रतिदिन कई-कई बार उनके आगमन वाली राह को बुहारती रहती, ठीक ऐसी प्रतीक्षा भगवन्त के आने की पूरी गुलाबीनगरी को थी और फिर वह पुण्यशाली दिन भी आया जब प्रभु का पदार्पण जयपुर के लाल भवन में हुआ। अनेक जोड़ी चक्षु प्रभु को अपलक निहारने लगे और उनके दर्शन कर अपने आपको धन्य-धन्य करने लगे। श्रद्धालुओं की इस भीड़ में ही मैंने भी अपने आचार्य भगवन्त के दर्शन किये और चरणरज को अपने मस्तक पर लगाया तो भगवान राम के चरण छुआने से पत्थर की शिला को अहिल्या में परिवर्तित हो जाने जैसा ही अनूठा परिवर्तन मैंने स्वयं में अनुभव किया और उसी क्षण आत्मा में एक निर्मल शाश्वत दिव्य अलौकिक प्रकाशपुंज की ज्योतिर्मय आभा को अपने में पाया, जिससे आत्मा का पोर पोर स्वर्णिम आभा से आच्छादित हो उठा, पार्श्व से संगीत के मन्द-मन्द स्वर स्फुटित होने लगे "मेरे अन्तर भया प्रकाश, मुझे नहीं किसी की आश" श्रद्धा, आस्था और विश्वास रूपी रत्नत्रय जैसे मुझे मिल गये।

धीरे-धीरे, नित प्रति जिनवाणी का श्रवण, गुरु दर्शन कर कर्म-निर्जरा की ओर, आस्रव से संवर की ओर यात्रा प्रशस्त होने लगी। जीवन में प्रथम बार साप्ताहिक संवर की साधना का अवसर आया। पर्युषण पर्व का समय आया कंकर से शंकर बनने का, नर से नारायण बनने का, जन से जिनेन्द्र बनने का। इन आठ दिनों में मैंने ऐसा अनुभव किया कि मैं समवसरण में हूँ, जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे आचार्य भगवन्त विराजित हैं, साधु-साध्वी मंडल और श्रावक-श्राविका के रूप में चारों परिषद् के बीच आचार्य श्री की देशना चल रही है, सब मंत्र मुग्ध हो गुरुदेव के मुखारविन्द से फ़रमायी जा रही जिनवाणी को सुन रहे हैं। चारों दिशाओं में आचार्य भगवन्त का अतिशय फैला हुआ है। जीवन निर्माण करने वाले इन दिनों में सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, संयम, शील, दान

पर विस्तृत विवेचन सुनने का अवसर मिला, जिसके अंश मात्र को आचरण में लाने मात्र से मैंने अपने जीवन में बड़ा परिवर्तन अनुभव किया है। सच कहता हूँ पर्युषणकाल के ये दिवस मेरे लिये किसी समवसरण से कम नहीं रहे हैं। इन आत्मोद्धारक लम्हों को शब्दों के माध्यम से आप सुधी पाठकों के साथ बांटने का प्रयास किया है। जब कभी भी आपको ऐसे प्रज्ञापुरुष, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्य भगवन्त के दर्शन और प्रवचन सुनने का अवसर मिले तो उसका लाभ अवश्य लें।

-रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

आए हीरा द्वारे, लाए श्रद्धा का चंदन

श्रीमती एस. उषा चोरडिया

(तर्जः- छूकर मेरे मन को.......।)

आए हीरा द्वारे, लाए श्रद्धा का चंदन,
फूलों की सौरभ से, महका है नंदनवन।

हीरा संकेतों पे, बढ़ते चले जायें-2,
गीत तेरे जीवन के, लिखते चले जायें-2,
हीरा चरणों में, न्यौछावर है तन-मन..........।। 1।।

शशि बन तुम आये, जगमग दीप जले-2,
तिमिर हटाने को, ज्योति चन्दा निकले-2,
सृजनात्मक हाथों ने, मोड़ा है युग स्पंदन.......।। 2।।

हीरा तेरे अरमानों को, सफल बना जायें-2,
ये व्यसन-मुक्ति नारा, जग में फैला जायें-2,
तेरे ये फरमान, गुँजाये भू-नभ-कण.... ......।। 3।।

खुशियों का दिन आया, मुस्काये हम सारे-2,
हीरा तेरा रूप अनुपम, निरख-निरख हारे-2,
दीक्षा-जयंती पर, स्वीकृत हो शत वंदन.......।। 4।।

हीरा चरणों में, स्वीकृत हो शत वन्दन।
आए तेरे द्वारे, लाए श्रद्धा का चंदन................।।

-14 'B', Vasupujya Apartment, Vepery, Chennai-600007

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

मेरे गुरु की प्रभा से

श्रीमती नीलू डागा

(तर्जः- मेरे प्रभु की कृपा से)

मेरे गुरु की प्रभा से, रोशन ये जहाँ हो रहा है,
कहती नहीं ये मैं ही, मेरा रोम-रोम ध्या रहा है,
दर्श को तेरे पाकर, मन में हर्ष (सुकुं) छा रहा है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।

शोभा के थे जो हस्ती, उस हस्ती की है ये शोभा,
मेरे गुरु हैं ऐसे, ज्ञान-क्रिया का योग (मेल) अनोखा,
तेरी कृपा से ही तो, संघ गुलजार हो रहा है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।। 1।।

तेरे वचनों में है अमृत, हैं ये प्रेरणा के सागर,
खुशी से छलक रहा मन, तेरी छाया व आशीष पाकर,
चरणों में बीते जो पल, आनन्द छा रहा है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।। 2।।

सूर्य चन्द्रमा की उपमा, तो कभी दीप सम कहलाये,
सुमन सौरभ कहा किसी ने, कभी सागर बता गुण गाये,
मेरे हीरा गुरु का गौरव, इनसे भी उच्चता पा रहा है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।। 3।।

तेरे अनुशासन की मशाल दूँ या कहूँ ज्ञान का खज़ाना,
हर मन में बसे हैं हीरा, सबने प्राणों से प्रिय जिसे जाना,
जुग-जुग जिओ हे भन्ते (भगवन्)! हर दिल ये गा रहा है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।। 4।।

धन्य हो गया है संघ, मोती-मोहिनी का लाल पाकर,
दीक्षा की है स्वर्ण जयन्ती, रत्न संघ के अष्टम पट्टधर,
पाकर आपसा 'गुरुवर', जीवन निहाल हो गया है।
कहती नहीं ये मैं ही.......।। 5।।

-"सौभाग", सी-7, सादुलगंज, बीकानेर (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

आचार्यप्रवर की प्रवचन-शैली

श्री अशोक बन्सीलाल कर्णावट

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, चारित्रमूर्ति, आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रवचन शैली में ओजस्विता, स्पष्टवादिता, निर्भीकता, हृदयस्पर्शिता आदि अनेक गुण हैं। आप चेतना से जुड़कर प्रवचन फरमाते हैं, जिसका अनेक स्थानों पर बारह व्रतों के स्वीकरण, सामूहिक सामायिक-साधना के शुभारम्भ, सकल समाज द्वारा विकृतियों के निवारण हेतु क्रान्तिकारी निर्णय आदि के रूप में प्रभाव परिलक्षित हुआ है। कई व्यक्तियों का जीवन भी साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ा है। इस युग के यशस्वी-मनस्वी, अध्यात्मयोगी उच्चकोटि के साधक युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की निर्मल छवि को आप सुरक्षित रखकर उसमें निरन्तर अभिवृद्धि कर रहे हैं।

आचार्यप्रवर के प्रवचन प्राणिमात्र के हित को लक्ष्य में रखकर तथा सांसारिक मोहमाया में उलझे मानव को शान्ति, समता एवं आध्यात्मिकता का प्रकाश प्रदान करते हैं। आपके संघानुशासन और निर्मल साध्वाचार के पालन की छवि सर्वत्र प्रदीप्त है। आचार्यप्रवर के प्रवचनों में श्रोता के अन्तस्तल को प्रभावित करने की अनूठी क्षमता है। आपके प्रवचन हृदयस्पर्शी होने के साथ श्रोता के साथ तादाम्य स्थापित कर उसे चिन्तन के लिए प्रेरित करते हैं। आप प्रत्येक साधक में पुरुषार्थ जागृत कर साधना में आगे बढ़ने की प्रेरणा करते हैं। आपके प्रवचनों का यह वैशिष्ट्य है कि वे जहाँ वीतरागवाणी से ओतप्रोत होते हैं वहाँ जन-साधारण को निर्व्यसनता, सामायिक, स्वाध्याय, संयम, व्रतधारण, तपश्चरण, गुण-संवर्धन आदि के लिए मनोभूमि तैयार करते हैं तथा तदनुसार चरण बढ़ाने की प्रेरणा करते हैं। आपके प्रवचन अज्ञान, मोह, ममता, तनाव, द्वन्द्व, ईर्ष्या आदि के कारण भटके हुए मानव को सन्मार्ग, शान्ति एवं आत्मिक आनन्द की ओर प्रशस्त करते हैं। आपके ओजस्वी एवं मार्ग-दर्शक प्रवचनों में असंस्कारित और असंयमी-जीवन के प्रति पीड़ा प्रकट हुई है तथा रात्रि-भोजन-त्याग और सत्संस्कारों के रक्षण की प्रेरणा की गई है।

आचार्यश्री जैन आगमों के प्रकाण्ड विद्वान्, मनस्वी साधक और ओजस्वी वक्ता हैं। जैन धर्म 'जनधर्म' कैसे बने, इसकी प्रेरणा में पूज्यश्री सतत जागरूक रहते हैं। आचारशुद्धि और वैचारिक उदारता के प्रबल प्रवक्ता के रूप में आपने अपने अनुयायियों को विशुद्ध जिनमार्ग का पथिक बनाया है और आपका कहना है कि निःश्रेयस् के मार्ग पर चलने वालों

की संख्या चाहे थोड़ी है, उनका निर्मल आचार और शुद्ध विचार दूसरों के लिये उदाहरण होना चाहिये। भगवान महावीर के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में आपने अद्भुत यश अर्जित किया है। यही कारण है कि न केवल जैन, अपितु जैनेतरों में भी आपकी उल्लेखनीय मान्यता है। आप सम्प्रदायों की एकता के पक्षधर तो हैं, किन्तु विशुद्ध जैन मूल्यों के नाम पर समझौता स्वीकार्य नहीं। आचार्यप्रवर कहते हैं-"मैं व्यक्तियों को अपने से नहीं, समुदाय से नहीं, किन्तु धर्म से जोड़ता हूँ। व्यक्ति और सम्प्रदाय शाश्वत नहीं है, परन्तु धर्म शाश्वत तत्त्व हैं।"

आचार्यप्रवर के मार्मिक प्रवचन युवकों का अध्यात्म से परिचय और पथदर्शन कर उनके जीवन को बदल रहे हैं। आज उनकी प्रेरणा से युवक धर्म एवं समाज-सेवा में जुड़ गए हैं। उनकी देशव्यापी परिषदें समाज-सेवा एवं धर्म-सेवा के क्षेत्र में आश्चर्यजनक काम कर रही हैं। युवक चरित्र निर्माण के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। आपने प्रभावी प्रवचनामृत के माध्यम से गाँव-गाँव और नगर-नगर में धर्मध्यान में सामायिक साधना हो, इसे एक मिशन के रूप में चलाया। कथनी और करनी में एकरूपता, सिद्धान्तप्रियता और ज्ञान-क्रिया में पुरुषार्थ आदि गुण आचार्यप्रवर के जीवन में ओतप्रोत हैं। आचार्यप्रवर का यह संयमी-जीवन दीर्घायु हो, वे हमें सन्मार्ग दर्शन कराते हुए संघ को आगे बढ़ाएं और जिनशासन की प्रभावना करें, यही मंगल कामना।

-कर्णावट इलेक्ट्रिकल्स्, माकडबाबा चौक, जून्या कोर्ट के नजदीक,
मु.पो.ता. निफाड़, जिला-नाशिक-422303 (महा.)

आत्म बोध की कला

श्री दयाचन्द जैन

1. आत्म-ज्ञान से शोक चला जाता है, भविष्य का भय चला जाता है, वर्तमान में लोग क्या कहेंगे, इसका दबाव चला जाता है।
2. परिभ्रमण की वेदना एकान्त रूप से स्वलक्ष्यी बनाती है। वास्तव में तो परिभ्रमण की वेदना पर-लक्ष्य को छुड़ाती है। वह एक ऐसी भूमिका है, जिसमें पर-लक्ष्य का चिन्तन ही नहीं उठता, क्योंकि खुद की चिन्ता ही इतनी हो जाती है कि वह स्व-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आतुर हो जाता है।
3. जिसे संयोग की चिन्ता हो, उसे आत्म-कल्याण का विस्मरण और जिसको आत्म-कल्याण की चिन्ता हो, उसे संयोग का विस्मरण हो जाता है।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम-हरसाना, जिला-अलवर (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

जब आचार्य हीरा ने समकित-स्वरूप समझाया

श्री चाँदमल कर्णावट

कुछ वर्षों पूर्व की बात। पूज्य आचार्य हस्ती के पट्टधर आचार्य हीराचन्द्रजी मुनिमण्डल के साथ सम्भवतः वर्ली (मुम्बई) में विराज रहे थे। मेरा पुत्र प्रवीण हमें मुम्बई के हर उपनगर में आचार्य हीरा की सेवा में ले जाता था। वर्ली में भी हमें आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ। दर्शन-वंदन कर आचार्य श्री का प्रवचन सुनकर हम धन्य हुए।

इसी दिन बाहर से कुछ भाई-बहन आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ यहाँ पधारे हुए थे। एक बहन ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया कि वे उन्हें गुरु आम्नाय कराने की कृपा करावें। आचार्यप्रवर बोले, बहन! मैं गुरु आम्नाय नहीं करवाकर समकित का स्वरूप समझाता हूँ। आप सभी भाई-बहन ध्यानपूर्वक सुनें और धारण करें। तब आचार्य प्रवर ने सुदेव, सुगुरु एवं सुधर्म का स्वरूप विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि वीतरागी अरिहंत सिद्ध ही हमारे देव हैं, पंच महाव्रत धारी, पाँच समिति तीन गुप्ति के पालक निर्ग्रंथ मुनि हमारे गुरु हैं एवं केवली भगवान द्वारा प्ररूपित धर्म, अहिंसा, दया ही हमारा धर्म है। जहाँ दया है वहाँ धर्म है, ऐसा भी फरमाया। आज से आप रागी-द्वेषी सभी देवों की मान्यता को छोड़ेंगे और अरिहंत, सिद्ध देवों, पाँच समिति, तीन गुप्ति एवं पंच महाव्रत पालन करने वाले गुरुओं एवं केवली प्ररूपित दयाधर्म का पालन करेंगे। अंत में, आचार्यप्रवर ने छोटे-मोटे त्याग करवाए। इस प्रकार समकित के स्वरूप की व्याख्या पूर्ण की।

तभी बहन बोली- आचार्य भगवंत, आज से आप हमारे गुरु हैं। मैं यह सब सुन रहा था। मुझे उत्सुकता थी कि बहन के इस कथन पर आचार्य श्री क्या फरमाते हैं। आचार्यप्रवर बोले- "नहीं बहन ऐसा नहीं, पाँच महाव्रत तथा पाँच समिति, तीन गुप्ति शुद्ध पालने वाले सभी मुनि-साधु-साध्वी आपके गुरु-गुरुणी हैं।" सुनकर मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा, आचार्यश्री हीरा की असाम्प्रदायिकता और उदार हृदयता को जानकर। धन्य-धन्य आचार्य हीरा, जिन्होंने शुद्धाचार के धनी असाम्प्रदायिकता के प्रबल पक्षधर आचार्य हस्ती के उपदिष्ट मार्ग पर चलते हुए सम्प्रदायवाद को पूर्णतः नकारा एवं गुरु आम्नाय के लिए समकित का स्वरूप भाई-बहनों को समझाया। ऐसे उदारचेता सन्मार्गदाता आचार्य को पाकर हम धन्य हैं। उनके इस महान् व्यक्तित्व को हृदय की असीम श्रद्धा के साथ नमन करते हैं।

-प्लॉट, 35, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

हीरा गुरु का प्रवचन सुनकर

श्री मगनचन्द जैन

हीरा गुरु का प्रवचन सुनकर हृदय हिलोरें लेता है।
खिल जाती हैं मन की कलियाँ असीम आनन्द आता है।।

पाटे पर विराजते ही जन समुदाय उमड़ता है।
ब्रह्मचर्य का ओज, तेज चेहरे पर दमकता रहता है।
वाणी में पीयूष भरा है सबको वितरित होता है।
एकाग्रता रख सुनें जो श्रोता उनको लाभ मिलता है।।
हीरा गुरु..........।।

गहरा आगम-ज्ञान, वाणी में प्रस्फुटित होता है।
शास्त्र-ज्ञान से सम्मत, समयोचित प्रवचन मिलता है।
हल हो जाती सारी समस्या खुशी का आलम छाता है।
श्रावक-श्राविकाओं के दिल में भक्ति-राग सरसता है।।
हीरा गुरु..........।।

व्यसन और फैशन पर गुरुवर चोट करारी करते हैं।
बर्बादी के कारण हैं ये जीवन पतित बनाते हैं।
शुद्ध भाव से शरण जो आता त्याग पच्चखाण कराते हैं।
प्रवचन सुनकर बदल गए वे गुरुवर के गुण गाते हैं।।
हीरा गुरु..........।।

सरल प्राञ्जल भाषा में वाणी जब मुखरित होती है।
कठिन बात भी सही तरह से सबके गले उतरती है।
मिलती है सद्शिक्षा सबको सुमार्ग इंगित करती है।
गुरु-दर्श पाकर हम सबका मन पुलकित हो जाता है।।
हीरा गुरु..........।।

कुदर्शनी, मिथ्यात्वी भी सुनकर लाभ उठाते हैं।
मार्ग बदल देते हैं अपना समकित गुरु से पाते हैं।
ऐसा है हितकारी प्रवचन सही मार्ग सुझाते हैं।
'मगन' मैं तो चिकना घड़ा हूँ असर न मुझ पर होता है।।

हीरा गुरु का प्रवचन सुनकर हृदय हिलोरें लेता है।
खिल जाती हैं मन की कलियाँ असीम आनन्द आता है।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

आचार्यप्रवर का दृढ़ अनुशासन

श्रीमती कमला सुराणा

आजकल स्वच्छन्दता की हवा चली है। प्रायः लोग स्वच्छन्दता को ही स्वतंत्रता मान बैठे हैं, उसका दुरुपयोग करते हैं। इन दोनों शब्दों में अन्तर है। स्वच्छन्दता का अर्थ मनमौजी होना है एवं उसका कोई आदर्श नहीं होता है। स्वतंत्रता आदर्श की परिधि में सीमित है। क्या स्वच्छन्दता को दृढ़ अनुशासन से रोका जा सकता है?

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है। अनु और शासन। अनु का अर्थ है पीछे और शासन का अर्थ है आज्ञा। अतः अनुशासन का अर्थ आज्ञा के पीछे चलना। हमारे धर्म गुरु आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, आचारनिष्ठ, चारित्रमूर्ति आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूर्व आचार्यों की परम्परा निभाते हुए उनकी आज्ञा की पालना के साथ पद-चिह्नों का अनुसरण कर रहे हैं। आपश्री आत्मशौर्य के पुंज हैं। स्वयं अनुशासित हैं। अनुशासन की कला आचार्यश्री में कूट-कूट कर भरी हुई है, तभी तो दूसरों को अनुशासित बना सकते हैं। दृढ़ अनुशासन के बल पर ही आप चतुर्विध संघ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका को सम्भाले हुए हैं। इसी गुण के कारण दूरदर्शी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने अष्टम पट्टधर हेतु आपश्री को मनोनीत किया, ताकि संघ एवं समाज की मर्यादा बनी रहे। आप सेवा-भावी हैं। जब तक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. जीवित रहे तब तक आप उनसे दूर नहीं हुए। केवल एक चातुर्मास नागौर का स्वतंत्र रूप में किया।

आपश्री की कथनी-करनी में बिल्कुल अन्तर नहीं है, आप स्पष्टवादी हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण ही संघ पर वर्चस्व है। हजारों लोगों को व्यसनों से मुक्ति दिलाई है। कितने ही श्रावकों एवं युवापीढ़ी को सामायिक-स्वाध्याय के व्रत-नियम करवाए हैं। रात्रि-भोजन-त्याग करवा कर जैन होने की पहचान बताई। ज्ञानार्जन हेतु स्वाध्याय को, आस्रव-निरोध हेतु संयम को तथा कर्म-निर्जरा हेतु तप को आधार रूप में अपनाने की प्रेरणा करते हैं। सहस्राधिक को बारहव्रती एवं सहस्राधिक को ब्रह्मचर्य व्रती बनाया है।

आचार्य के गुणों की अपेक्षा से- वे स्वयं संयम का पालन करते हैं एवं दूसरों को पालन करवाने हेतु याद दिलाते हैं। वे स्वयं व्रत-नियम का पालन करते हैं और दूसरों से भी पलवाते हैं, यह संयम सामाचारी है। पाक्षिक पर्व तिथियों पर स्वयं तप करते हैं दूसरों को स्मरण करवाते हैं। स्वयं को सजग रखना और दूसरों को जागृत करना आदि सभी गुण अनुशासन के अन्तर्गत ही आते हैं। आपश्री की जागरूकता और अनुशासन के कारण घंटों

का कार्य मिनटों में निश्चित समय में हो जाता है। प्रार्थना करना, प्रवचन देना, शास्त्र-वाचन, गोचरी-पानी लाना तथा पढ़ना-पढ़ना आदि दैनिक कार्य की विभाजन योजना इतनी सुन्दर होती है कि उसमें अनुशासन झलकता है।

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के अतिरिक्त '95' संत-सती आचार्य श्री की आज्ञा में अलग-अलग क्षेत्र में धर्म की प्रभावना करते हुए रत्नवंश को द्युतिमान बना रहे हैं। दृढ़ क्रिया के साथ ज्ञान को बनाए रखना, एक महत्त्वपूर्ण बात है। साध्वाचार में शैथिल्य व्याप्त न हो उसके लिए आपका भरसक प्रयत्न रहता है और सजगता बरती जाती है। शिथिलाचारी साधु-साध्वी को संघ से बाहर करने में हिचकिचाते नहीं है, क्योंकि 'एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।' अधिकतर साधु-साध्वियाँ छोटी वय कुँवारेपन में दीक्षित हुए हैं। दृढ़ अनुशासन में उन्हें ऐसा तैयार किया जाता है। सन्त-सतियों को आगम शास्त्र, थोकड़े एवं कई स्तोत्र कंठस्थ हैं। तत्त्वों की अनुपम जानकारी है। प्रवचन में दक्ष हैं। उनकी प्रवचन सभा से उठने का मन नहीं होता है। बाल-दीक्षित सन्तों को पूरा वात्सल्य देते हैं। बहुत सराहनीय कार्य है। छोटे संत हँसते, खिलते, चमकते दिखाई देते हैं। वाह! अनुशासन की भव्य छटा। साध्वाचार के आकर्षण से एक सम्पन्न परिवार के दम्पती ने भी दीक्षा ली है। संत-सतियों की दृढ़ ज्ञान-क्रिया एवं त्याग-तप देखते हैं तो दाँतों तले अँगुली दब जाती है।

बहुत साधारण भाषा में लिख दिया, बोल दिया कि साधु, साध्वीजी का त्याग-तप और ज्ञान-क्रियाएँ विशिष्ट हैं। जब गहराई से सोचते हैं तो ऐसी कठिन साधना के गुण-गान करने के लिए शब्द-कोश में शब्द भी नहीं होते हैं। कैसे करें इन महान् आत्माओं के गुण-गान?

ऊपर जितनी भी विशेषताओं का वर्णन हुआ है उसकी धुरी आचार्यश्री हैं। 'जैसा राजा वैसी प्रजा' वाली बात चरितार्थ होती है। आचार्यश्री का दृढ़ अनुशासन है। आचार्यश्री आत्मानुशासित हैं, तभी तो अपने शरीर, बुद्धि मन पर पूरा-पूरा नियन्त्रण किए हुए हैं। जो अपने पर नियन्त्रण कर लेता है, वह दुनिया पर नियन्त्रण कर लेता है। आन्तरिक अनुशासन ही सच्चा अनुशासन है। आन्तरिक अनुशासन की अनुभूति करवाई जाती है इसलिए रत्नसंघ अपने सिद्धान्तों पर अटल है। आज दृढ़ अनुशासन से ही आचार्य श्री स्वयं के और दूसरों के जीवन को सुखमय तथा सुन्दर बनाने के लक्ष्य को लेकर चलते हैं। आप अनुशासनप्रिय हैं। अनुशासनप्रियता के कारण ही कठिन संयम मार्ग सुगमता से तय किया जा रहा है, तभी तो कदम-कदम पर सफलता और यश मिल रहा है। हम भी दृढ़ अनुशासनप्रिय बनें और जीवन को सुखी सम्पन्न बनाएं।

-ई-123, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

आचार्य श्री हीरा का संदेश

श्री पदमचन्द गांधी

1. **श्रावक के लिए-** श्रावक विवेक से चले, सत्क्रिया में चले, तो उसका आचरण बन्धन तोड़ने वाला होता है। श्रावक के विवेक का आधार ज्ञान का प्रकाश है।
2. **श्राविका के लिए-** श्राविकाएँ जितनी स्वाध्यायशील, विवेकशील एवं चरित्रनिष्ठ होंगी तथा भक्ति में नत होंगी उतनी ही आगे बढ़ेंगी।
3. **युवक के लिए-** समझ और शक्ति का बल रखने वाला युवक है। संघ-समाज में जागृति क्रान्ति का कार्य युवक कर सकता है। युवक अपने जीवन में संघ के लिए समय निकालकर बड़े-बुजुर्गों की समझ से और अपनी शक्ति से संघ की सेवा कर सकता है। शक्ति का भण्डार है युवक।
4. **युवति के लिए-** कन्या देहली दीपक है, यदि वह बाल ब्रह्मचारिणी रहना चाहती है तो जगत पूज्या बनती है और पवित्र रहकर निःसन्तान होते हुए भी आदरणीय होती है। अपने शील के रक्षण के लिए प्राण देना उचित है, पर शील छोड़ना नहीं।
5. **गृहस्थ के लिए-** गृहस्थ-जीवन को चलाने के लिए भोजन हो, लेकिन रसना इन्द्रिय तर्पण हेतु अभक्ष्य, अनुचित एवं अति आहार के लिए नहीं। गृहस्थ का अर्जन परिवार चलाने के लिए, आवश्यक प्रसंगों (Events) को क्षमता के अनुसार पूरा करने के लिए एवं आने वाले अतिथि खाली न जाए, इसके लिए होता है। गृहस्थ के षट् कार्य हैं- ईश-स्मरण, गुरु-सेवा, सामायिक, स्वाध्याय, संयम और तप इनका पालन करें।
6. **नारी के लिए-** अगर नारियाँ जागृत हो जाएँ, अगर महिलाएँ मर्यादाएँ कायम कर लें, अगर सतियाँ शील पर दृढ़ हो जाएँ तो संसार की काया पलटते देर नहीं लगेगी।
7. **समाज के लिए-** ओसवाल समाज में न द्रव्य की कमी है, न बुद्धि की, वरन् कमी है तो देखते, जानते हुए भी, "सही बात कहने की हिम्मत नहीं"। आप समाज की विकृतियाँ देखते हैं, जानते हैं, मानते हैं, लेकिन कहने की हिम्मत नहीं करते। समाज-अनुशासन के लिए मानसिक वृत्ति चाहिए, उसे सुदृढ़ बनाइए। समाज की बुराइयों को समझें, विकृति के निवारण के लिए संगठित प्रयास करें तो समाज से विकृतियाँ हटेंगी।
8. **व्यसन के लिए-** व्यसन बुरे हैं, जीवन का नाश करने वाले हैं।

9. **जीवन धर्म के लिए-** संसार में रहकर मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए व्रती बनिये, धर्मी बनिए। धर्म सब्जी में नमक है, धर्म शरीर का प्राण है। अगर धर्म नहीं है तो यह तन मुर्दा बन जायेगा। धर्म के बिना मानव जीवन में कोई स्वाद नहीं है, सार नहीं है।

10. **शिक्षक के लिए-** अध्यापकों का काम उन्हें सिर्फ अक्षर ज्ञान देना नहीं, अपितु उनका मुख्य काम विद्यार्थियों का भविष्य सुन्दर और उज्ज्वल बनाना है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेशनगर विस्तार (बी), गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-15 (राज.)

हीरा गुरु की जय-जयकार

श्रीमती चन्द्रलता महता

(तर्जः- छोटी-छोटी गैया.........।)

प्रेम से बोलो सभी नर नार, हीरा गुरु की जय-जयकार।
भाव भक्ति से बोलो हर बार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। टेर।।

पीपाड़ शहर में जन्म लिया, गांधी कुल में छाई खुशियाँ।
बज गई सब के दिल की सितार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 1।।

माता मोहिनी पिता मोतीलाल, संस्कारों से कर दीना मालामाल।
जीवन हो गया तेरा गुलजार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 2।।

25 वें वर्ष में हुए तैयार, गुरु हस्ती से दीक्षा ली धार।
धवलवेश और उच्च विचार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 3।।

षट्काया को दिया अभयदान, वीर शासन का बढ़ाया मान।
पंच महाव्रत का किया शृंगार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 4।।

मन में बस एक ही लगन, व्यसन मुक्त होवे जन-जन।
शत-शत वन्दन करूँ हर बार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 5।।

धन्य हुई नगरी, धन्य समाज, युग-युग जीओ हीरा गुरुराज।
वंदन करते सभी नर-नार, हीरा गुरु की जय-जयकार।। 6।।

-दूदू, जिला-जयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

संयमः खलु जीवनम्*

डॉ. दिलीप धींग

पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी महाराज का दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती वर्ष चल रहा है और इस दौरान पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज का दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती वर्ष भी शुरू हो रहा है। पिछले वर्ष जनवरी 2011 में ही दोनों सन्त महापुरुषों के महान् गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज के जन्म शती वर्ष का समापन हुआ था। जन्मशती वर्ष के निमित्त से अनेक स्मरणीय और अविस्मरणीय सत्कार्य और साधनाएँ हुईं। अनेक श्रेष्ठ प्रकल्प समय साध्य होने से अभी भी चल रहे हैं और अनेक नहीं तो कुछ सत्संकल्प अभी अधूरे हैं। गुरुद्वय की दीक्षा स्वर्ण जयन्तियाँ हमारे अधूरे सपनों को पूरा करने का स्वर्णिम अवसर है। उन सपनों और संकल्पों के अलावा, चूंकि यह दो-दो श्रमणवरों के संयम की आधीसदी के यादगार सफर के उत्सव की बात है, इसलिए 'संयमः खलु जीवनम्' (संयम ही जीवन है) का उद्घोष दिग्दिगन्त और देश-देशान्तर में फैलाया जाना चाहिये। इस अनमोल जीवन-सूत्र को जितना आचरित और प्रचारित किया जा सके, उतनी ही हमारी ओर से संयम की, संयम के संवाहक और धारक धीर-वीर पुरुषों की सच्ची अर्चना हो सकेगी।

संयम के अनेक स्तर और श्रेणियाँ हैं। संयम का एक अर्थ मुनि-जीवन किया जाता है। दूसरी ओर श्रावकाचार (गृहस्थ-जीवन) भी संयम की बुनियाद पर ही प्रतिष्ठित है। हमारे वैयक्तिक और गैर-वैयक्तिक जीवन में आज यदि सर्वाधिक किसी चीज की जरूरत है तो वह है-संयम। किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि वह गायब है! कहीं-कहीं वह दिखाई पड़ता है, लेकिन यथार्थ में वह होता ही नहीं है। कई बार वह दंभ और विज्ञापनों से हारा हुआ नज़र आता है।

अनर्थदण्ड असंयम का ही नाम है, जो आधुनिक आदमी के जीवन में आठों ही प्रहर पसरा हुआ रहने लगा है। ऐसा लगता है कि कहीं आज का आदमी संयम, सादगी और सरलता का अनुसरण कर लेगा तो उसकी तोहीन हो जायेगी, अतः वह झूठी शान दिखाता रहता है। लेकिन दिखावे से न तो भीतर का खालीपन भरा जा सकता है और न ही बाहर का। संयम वस्तुतः समृद्धि का सूत्र है। यह व्यक्ति को बाहर से भी समृद्ध बनाता है और भीतर से भी समृद्ध बनाता है। यह अपने घर को भी वैभवशाली बनाता है और समाज को भी। तन, मन, चेतन, जीवन और वतन; संयम से सब के सब वैभवशाली बनते हैं।

*(21 अक्टूबर 2012 को उदयपुर में अहिंसा विचारमंच की ओर से गुरुवर हीरा-मान की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित साहित्यिक गोष्ठी में अहिंसा विचार मंच के अध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग द्वारा चेन्नई से प्रेषित सन्देश, जिसे गोष्ठी के शुभारंभ में पढ़ा गया)

आज कहीं निर्धनता का अभिशाप है, तो कहीं प्रदूषण की समस्या। कहीं सादगी का मजाक बनाया जा रहा है तो कहीं सदाचार की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। यदि संयम को उसकी गहराइयों और समस्त आयामों में समझने तथा आचरण करने के ईमानदार प्रयास किये जाएं तो ऐसी कई समस्याओं और मिथ्या अहंकारों को नौ दो ग्यारह होना पड़ेगा।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि 'अहिंसा विचार मंच' की ओर से गुरुद्वय की संयम की स्वर्ण जयन्ती का स्मरण किया जा रहा है। तीर्थंकर भगवान महावीर ने अहिंसा, संयम और तप को उत्कृष्ट और मंगलकारी धर्म बताया है। संयम से अहिंसा और तप दोनों की आराधना सुगम हो जाती है। इस सुअवसर पर मंच की ओर से "अहिंसा परमो धर्मः" की तरह "संयमः खलु जीवनम्" का नारा भी जन-जन में प्रचारित-प्रसारित किया जायेगा। **मैं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ और देश भर में फैली उसकी सहयोगी संस्थाओं से अनुरोध करूँगा कि वे इस स्वर्णिम अवसर पर 'संयमः खलु जीवनम्' के सर्व समाधानकारी सूत्र की बहुरंगी चमक वस्तुनिष्ठ तरीके से चहुँ ओर बिखेर दे।** संघ, समाज और मानवता के प्रति हमारे उपकार से ही संयम तथा संयम-महापथ के अविश्रान्त पथिकों का सच्चा सत्कार होगा। *-उमराव सदन, 53, डोरेनगर, उदयपुर-313002 (राज.)*

आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान की दीक्षा अर्द्धशताब्दी भजन/भाषण समापक प्रतियोगिता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पं.रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में माह अक्टूबर-नवम्बर, 2012 तक देश-विदेश में आयोजित की गयी भजन/भाषण गीत-गायन प्रतियोगिता में स्थानीय स्तर पर प्रथम विजेता रहे प्रतिभागियों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 29-30 दिसम्बर, 2012 को जयपुर में किया जाना निश्चित किया गया है। समापक प्रतियोगिता में विजेता रहने वाले प्रतियोगियों को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

देश-विदश में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं व उपशाखाओं के अध्यक्ष/मंत्री से निवेदन है कि वे स्थानीय स्तर पर प्रथम रहे प्रतियोगियों द्वारा 29 दिसम्बर को प्रातः जयपुर में पहुंचने का कार्यक्रम सुनिश्चित कर अवगत करावें। प्रतिभागी को जयपुर आने पर यात्रा व्यय का भुगतान मण्डल द्वारा किया जायेगा। कृपया जयपुर पहुँचने वाले प्रतिभागी अपने आगमन की पूर्व सूचना कार्यालय को कार्यदिवस में निम्न दूरभाष नं. 0141-2575997, 2571163, फैक्स नं. 2570753, मो. 9314012415 पर अवगत करावें। *-विरदराज सुराणा, मंत्री*

|| श्री महावीराय नमः ||

|| श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः ||

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

निमंत्रण

अखिल भारतीय
बृहद् अधिवेशन

17 व 18 नवम्बर, 2012

अधिवेशन स्थल

एस.एस. जैन सुबोध कैम्पस
चीलगाड़ी रेस्टोरेन्ट के पीछे, एयरपोर्ट रोड़
सांगानेर, जयपुर

प्रेषक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन : 0291-2636763, 2641445

॥ श्री महावीराय नमः ॥
॥ श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः ॥

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

श्रावकरत्न,
सादर जय जिनेन्द्र!

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

द्वारा

रत्नसंघीय परिवारों का

अखिल भारतीय बृहद् अधिवेशन

गुलाबी नगर, जयपुर में आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर

विशिष्ट संघ-सेवी, गुणी और शिक्षा-दीक्षा में उल्लेखनीय योगदान देने वाले महानुभावों का अभिनन्दन भी किया जायेगा। आपसे विनम्र अनुरोध है कि संघ को सक्रिय, सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए सपरिवार पधारकर हमें अनुगृहीत करें।

निवेदक

सुमेरसिंह बोथरा अध्यक्ष

गौतमचन्द हुण्डीवाल कार्याध्यक्ष

पूरणराज अबानी महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आतिथ्य

प्रकाश कोठारी अध्यक्ष

विनय डागा मंत्री

आनन्द चौपड़ा संयोजक, बृहद् अधिवेशन

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर

कार्यक्रम

शनिवार, 17 नवम्बर, 2012

प्रथम सत्र : 'स्वर्णिम अतीत'- प्रातः 9.30 बजे

मुख्य अतिथि - **माननीय न्यायाधिपति श्री प्रकाश चन्द जी टाटिया**
मुख्य न्यायाधीश, झारखण्ड उच्च न्यायालय, रांची

अध्यक्ष - **श्री सुमेर सिंह जी बोथरा**
राष्ट्रीय अध्यक्ष, रत्नसंघ

द्वितीय सत्र : 'विशिष्ट संघ-सेवा एवं गुणी अभिनन्दन' अपराह्न 2.00 बजे

मुख्य अतिथि - **माननीय न्यायाधिपति श्री मुनीश्वरनाथ जी भंडारी**
न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर

विशिष्ट अतिथि - **श्री सी.एम.बच्छावत**, आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव, एक्साइज व वित्त, पश्चिम बंगाल सरकार

अध्यक्ष - **श्री रतनलाल जी बाफणा**
संयोजक, शासन सेवा समिति

रविवार, 18 नवम्बर, 2012

तृतीय सत्र : 'गौरवशाली वर्तमान'- प्रातः 9.30 बजे

मुख्य अतिथि - **श्री कुलदीप जी रांका,** आई.ए.एस.
आयुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

अध्यक्ष - **श्री कैलाश चन्द जी हीरावत**
सह संयोजक, शासन सेवा समिति

अन्तिम सत्र : 'उज्ज्वल भविष्य'- अपराह्न 2.00 बजे

मुख्य अतिथि - **श्री ईश्वरलाल जी जैन (बाबूजी)**
राज्यसभा सदस्य, महाराष्ट्र

अध्यक्ष - **श्री मोफतराज जी मुणोत**
संयोजक, संघ-संरक्षक मण्डल

विशेष

अधिवेशन में पधारने पर आपको जिनशासन गौरव,
परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11
एवं
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभाजी म.सा.,
व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 12
के दर्शन-वन्दन एवं सेवाभक्ति का लाभ प्राप्त होगा।

सम्पर्क सूत्र

:: चातुर्मास स्थल ::

सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, गजेन्द्र पथ
सेन्ट्रल बैंक की गली, टोंक रोड़, जयपुर-302018

1. पूछताछ कार्यालय-फोन-(0141) 3101991
2. श्री विनयचन्दजी डागा-93145-06509
3. श्री आनन्दजी चौपड़ा-75686-20000
4. श्री नरपतचन्दजी सिंघवी-(0141) 2553416/98297-93416

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की सहयोगी संस्थाएँ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्
श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

सद्गुणों के आलोकपुंज आचार्यप्रवर

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

आप ज्ञान ज्योति की दीपशिखा
मैं अज्ञान तिमिर का हूँ वासी।
आप अकेले अकिंचन
मैं परिवारजनों से हूँ घिरा।
आप हर पल के ज्ञाता द्रष्टा
मैं क्षण-क्षण का हूँ कर्ता-भोक्ता।
आप हर क्षण कर्म काटते
मैं हर क्षण कर्म बाँधता।
आप मुक्ति रमा के हो सहचर
मैं चंचला लक्ष्मी का अभिलाषी।
आप मोक्ष मार्ग के बने हैं पथिक
मैं असार संसार में हूँ रमा रहा।
आप शीतल अमृत जलधार सदृश
मैं तप्त लौह-सा रहा हूँ दग्ध।
आप आनन्द महोदधि के हो वासी।
मैं राग-द्वेष भावों से तप्त सदा।
आप मोह-अरि के हो हन्ता
मैं मोह-रिपु का हूँ दीन दास।
आप सद्गुणों के आलोक पुंज
मैं निशा सदृश दिग्भ्रमित हूँ सदा।
गुरुदेव शरण में लीन रहूँ नित
शीश झुका करता नित अभिवन्दन।
संयमनिष्ठ शुभ स्वर्ण जयन्ती अवसर पर
वन्दन, सत्कार और सम्मान हृदय से हूँ करता।

-"हुक्म", 5-ए/1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

संस्कार प्रबोधन की शैली

श्री अशोक कुमार जैन

आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. संघ की, समाज की नई पौध युवा पीढ़ी में नैतिक-आध्यात्मिक संस्कार निर्माण की सतत प्रेरणा कर रहे हैं । आज नई पीढ़ी के भटकाव की बातें सामने आ रही हैं। देश में, समाज में युवकों के भटकने की चिन्ता व्याप्त है। व्यसनों में,नशे में जूझती युवा पीढ़ी को आचार्यप्रवर के द्वारा स्नेहमयी भाषा में कुव्यसन के त्याग की समझाइश और बुराइयों से बचने का मार्ग बताने एवं बचपन से ही कुव्यसन त्याग की प्रेरणा करना, वर्तमान समाज को बहूमूल्य देन है ।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्वाध्याय का असीम महत्त्व है । बिना स्वाध्याय के मनुष्य जीवन शून्य है । इस सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में आचार्यप्रवर जैन धर्म के गूढ़ शास्त्रों की गाथाओं के भावों को अत्यन्त सरल भाषा में समझाते हैं। आज के युवकों को आप सामायिक एवं स्वाध्याय करने की चर्या से जोड़ने की प्रेरणा कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त फरमाते हैं कि युवक समाज की रीढ़ की हड्डी हैं। जैसे रीढ़ की हड्डी के बिना शरीर का महत्त्व नहीं है,उसी प्रकार युवक संघ के बिना संघ या समाज का महत्त्व नहीं है । आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से आज युवक संघ प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय है । चाहे सेवा का क्षेत्र हो या सामायिक-स्वाध्याय करने का अथवा तपस्या आदि का। प्रत्येक क्षेत्र में आज युवक संघ समाज को और संघ को गौरवान्वित कर रहा है । आचार्यप्रवर फरमाते हैं कि जैसे बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है वैसे ही नित्य प्रतिदिन कुछ न कुछ स्वाध्याय करने से ज्ञान की प्राप्ति होती जाती है ।

आचार्य भगवन्त की प्रवचन शैली सुप्त समाज को जागृत कर रही है । आपके जीवन में सागर के समान गहराई और पर्वत के समान ऊँचाई है। आपके आचार में दृढ़ता और विचारों में उदारता है। आपकी प्रवचन शैली का ही प्रभाव है कि युवकों, बालक-बालिकाओं को धर्म के संस्कार प्राप्त हो रहे हैं तथा वे आस्थावान बनते जा रहे हैं। युवावर्ग के ज्ञानवर्धन हेतु धार्मिक पाठशालाएँ और शिविरों का आयोजन, विद्वत् परिषद् की गोष्ठी, ध्यान शिविर,सामायिक साधना की प्रेरणाएँ फलीभूत हो रही हैं। व्यसन मुक्त कराने में आचार्यप्रवर की निरन्तर प्रेरणा हो रही है, जिसका परिणाम है कि आज ऐसे युग में युवा निर्व्यसनी बनकर संघ सेवा से जुड़ रहे हैं ।

आचार्य भगवन्त प्रवचनों में फरमाते हैं कि श्रावक वह होता है जो धर्मशास्त्र के वचनों

को श्रद्धापूर्वक सुनकर विवेकपूर्वक उन पर आचरण करे। श्रावक धर्म के रास्ते पर चलना प्रारम्भ करे तो, वह समस्याओं का समाधान पा लेता है। सामायिक और स्वाध्याय के अभ्यास के द्वारा ज्ञान, प्रेम, मैत्री एवं सेवा के कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। ऐसा ही प्रभाव आचार्यप्रवर के वर्ष 2003 में इचलकरंजी चातुर्मास की प्रेरणा से मेरे जीवन पर पड़ा।

श्री जैनरत्न युवक संघ,जयपुर प्रतिवर्ष की भांति वर्ष 2003 में आचार्य भगवन्त के इचलकरंजी चार्तुमास में जयपुर से संत दर्शनार्थ गया। उस संघ में बालक-बालिकाएँ, श्रावक-श्राविकाएँ, युवा, वृद्ध सभी आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ गये। मैं भी उस संघ के साथ आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ गया। 3-4 दिन के प्रवास में आचार्य भगवन्त की सेवा में रहकर संघ के सभी सदस्यों ने सामायिक आदि की साधना की, सेवा-शुश्रूषा की। प्रवास के अंतिम दिन जब संघ वापस जयपुर आने की तैयारी में था, उसी दिन दोपहर लगभग 2.00 बजे आचार्य भगवन्त ने संघ को ज्ञान-ध्यान आगे बढ़ने की प्रेरणा की एवं संघ के सभी सदस्यों ने श्रद्धा अनुसार व्रत-नियम आदि लेने हेतु पंक्तिबद्ध खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करते हुए नियम लेना प्रारम्भ किया। किसी ने अष्टमी, चर्तुदशी के उपवास का नियम लिया तो किसी ने एक वर्ष तक सामायिक करने का, सबने अपनी श्रद्धा अनुसार व्रत-नियम लिये। मैं उस पंक्ति में सबसे पीछे लगभग 150 सदस्यों के बाद खड़ा हुआ था। मेरा नम्बर आने पर मैं जैसे ही अपने स्थान पर व्रत-नियम लेने हेतु खड़ा हुआ, आचार्य भगवन्त ने मुझे मेरे नाम से संबोधित करते हुए फरमाया कि भाई अशोक! तुम्हें तो एक घंटे का समय संघ की, समाज की सेवा में देना है।

मैं आश्चर्य चकित था कि आचार्य भगवन्त ने मेरा नाम कैसे जाना, जबकि मैं तो कभी आचार्य भगवन्त के इतना सानिध्य में भी नहीं रहा। मेरे मन के अन्दर तरह-तरह के विचार आने लगे कि मैं राजकीय सेवा में कार्यरत हूँ, बच्चे अभी छोटे हैं, श्रीमती अध्यापिका है, मैं कैसे संघ और समाज की सेवा में एक घंटा दे पाऊँगा। लेकिन समय कम था, उसी क्षण निर्णय करना था। मन में कुछ क्षणों के लिये हलचल मच गई। फिर मन को यह सोचकर स्थिर किया कि आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से सब कार्य सम्पन्न हो जायेगा, नियम ले लो। मैंने उसी समय नियम लेने के लिये हाथ जोड़ लिये और आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से नियम ले लिया। आचार्य भगवन्त ने नियम ही नहीं दिलाया बल्कि नियम पालन करने की शक्ति भी दी।

उस दिन से आज तक मैं निरन्तर एक घंटा ही नहीं, बल्कि एक घंटे से अधिक समय संघ सेवा में निरन्तर देता आ रहा हूँ। चाहे वह स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा दिया गया कार्य हो अथवा श्री अ. भा. जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा दिया गया- धार्मिक शिक्षण का कार्य हो

या पर्युषण पर्वों में स्वाध्यायी के रूप में प्रतिवर्ष सेवा देने का कार्य हो। अथवा पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ लेखन का कार्य हो या साधु संतों के आहार-विहार में सहयोग सेवा देने का अथवा ग्रीष्मावकाश में बच्चों को शिविरों में अध्यापन कराने का कार्य- ये सभी सेवा के कार्य आचार्य भगवन्त की कृपा से सम्पन्न हो रहे हैं। संघ द्वारा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करने के लिये अनेक प्रकार के सम्मानों से भी सम्मानित किया गया है।

वर्षावास में मैंने आचार्य भगवन्त के अमृत तुल्य वचनों को श्रद्धा रूपी लेखनी से लिखने का यत्किंचित् प्रयास किया है। प्रवचन का समय होने पर एक ही आवाज और एक ही दिशा नज़र आती है कि चलो महावीरनगर, वहाँ वीरप्रभु के अनन्य उपासक गुरुदेवों के वचनामृत लिपिबद्ध करना है। आचार्य भगवन्त के सान्निध्य के परमाणु ही हम जैसे भक्तों के लिये काफी होते हैं। मेरे ऊपर आचार्य भगवन्त की, संघ की, समाज की ऐसी कृपा बनी रहे जिससे मैं निरन्तर सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहूँ। मैं आचार्य भगवन्त के 50 वें दीक्षा-महोत्सव के अवसर पर तीर्थंकर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप दीर्घायु हों। जिनशासन की प्रभावना को बढ़ाते रहें और हमारे जैसे अबोध लोगों को सामायिक-स्वाध्याय के नियम द्वारा सुलभ बोधि बनाएँ तथा करुणा युक्त प्रेरणा युगो-युगों तक देते रहें। गुणवानों के गुणगान करने में शब्द और स्याही की हमेशा से कमी ही रही है। ऐसे गुणवान, पुण्यवान, धैर्यवान, ज्ञानवान, श्रद्धावान, चारित्रवान, क्रियावान आचार्य देव के चरणों में बारम्बार प्रणाम।

-73/46ए, सेक्टर-7, परमहंस मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2012] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'ठगी महंगी पड़ी' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 34 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	संगीता बोहरा-चेन्नई (तमि.)	23.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	प्रणत धींग-उदयपुर (राज.)	23
तृतीय पुरस्कार- 150/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी (राज.)	22.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़शहर (राज.)	21.5
	रोहित जैन-थांवला (राज.)	21
	काजल छाजेड़-भुसावल (महा.)	21
	हर्षित जैन-आलनपुर (राज.)	19.5
	अक्षय कुमार जैन-छोटी कसरावद (राज.)	19

नारी-स्तम्भ

परिवार की धुरी है नारी

श्री नवरत्नमल रांका

अधिकार एवं कर्त्तव्य एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ एवं महत्त्व नहीं। अधिकार से व्यक्ति अनेक सुविधाएँ, क्षमताएँ एवं प्रसन्नता प्राप्त करता है। कर्त्तव्य शब्द का भाव व्यक्ति को रोकता है, टोकता है, एक दिशा एवं प्रेरणा प्रदान कर उचित व्यवहार द्वारा सफलता के परिणाम तक पहुँचाता है। प्रत्येक व्यक्ति अधिकारों की प्राप्ति का स्वप्न संजोता है, लेकिन अधिकारों का महत्त्व एवं अस्तित्व तब ही है जब उनका संयत एवं संतुलित रूप में प्रयोग किया जाय। कर्त्तव्यहीन अधिकार निरर्थक है, क्योंकि कर्त्तव्यों का समाज में विशिष्ट एवं अहम् स्थान है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यशील बने, अपने दायित्व को भली भाँति निभाये, राष्ट्र की एकजुटता में योगदान दे, लेकिन राष्ट्र एवं समाज से भी पहले आवश्यकता है परिवार के प्रति कर्त्तव्य परायण होने की, क्योंकि कर्त्तव्य परायणता के बिना राष्ट्र तो क्या, परिवार भी एक दिन के लिये भी सही तरीके से नहीं चल सकता। कर्त्तव्य बोध एवं उसके समुचित पालन से ही व्यक्ति जीवन में शांति, संतुष्टि एवं सफलता प्राप्त कर सकता है।

भारतीय भाग्यशाली हैं कि उन्हें संयुक्त परिवार विरासत में मिला है। संयुक्त परिवार की नींव सहिष्णुता, सहयोग, सहनशीलता, सेवाभाव, समझदारी, समर्पण, संवाद, अनेकांतवाद और परस्पर मेल-जोल व प्रेम पर आधारित है। संयुक्त परिवार में दादा-दादी, देवरानी-जेठानी, ननद-भोजाई, पोते-पोती का समागम होता है, समन्वय का अवसर मिलता है और सर्वांगीण विकास एवं उत्थान का अवसर प्राप्त होता है।

देश की स्वतन्त्रता के पूर्व एक पिता अपने माता-पिता, चार पुत्र, बहुओं, पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों के साथ संयुक्त परिवार के एकल रसोईघर में सुख शांति से निश्चिन्त रहता था। पारिवारिक विघटन के पश्चात् वही परिवार अलग-अलग भव्य मकान में रहने लगा। कुछ वर्ष पश्चात् चारों पुत्रों के पुत्र भी अलग-अलग आलीशान बंगलों में रहने लगे। सोचिये कहीं यह कृत्य राष्ट्रीय श्रम, शक्ति, साधन सम्पदा, सम्पत्ति का दुरुपयोग तो नहीं? क्या यह स्वतंत्रता-स्वछंदता का घृणित रूप तो नहीं?

नव पीढ़ी की सास-बहू, देवरानी-जेठानी किसी एक गंतव्य स्थान पर भी अलग-अलग वाहन में जाती नज़र आती हैं। समारोह स्थल पर भी एक दूसरे से भिन्न समुदाय में अपने-अपने मित्रों में बतियाने में मशगूल रहकर पारिवारिक सदस्यों से कतराती हैं। क्या

यह शोभनीय है? अपने वृद्ध अशक्त सास-ससुर को निराश्रित एवं निराश अकेले पराश्रित छोड़ने में नहीं चूकती हैं, परन्तु यह विचार नहीं करती हैं कि कुछ वर्षों बाद उसी परिस्थिति से उसे स्वयं को गुजरना पड़ेगा। सोचिये, दोषी कौन है? अब विघटन के कारण एकल परिवार का बाहुल्य है। चिंतन और मनन करें कि क्या हम सही रास्ते पर जा रहे हैं?

परिवार धागा है अपनत्व, प्रेम और कर्त्तव्य का। इसमें पिरोई माला का महत्त्व है। माला के दो मणकों को तब तक अलग नहीं किया जा सकता जब तक वे एक ही धागे में पिरोए हुए होते हैं, इसी तरह प्रेम एवं कर्त्तव्य के धागे में पिरोई हुई होती हैं हमारे परिवार के सदस्यों की जिन्दगियाँ। हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रेम, वात्सल्य, सहनशीलता, समर्पण, आत्म-नियंत्रण एवं मधुर व्यवहार के द्वारा सब जिन्दगियों को खुशहाली एवं प्रसन्नता प्रदान कर जोड़ने का प्रयत्न करें, न कि तोड़ने का।

भारतीय परिवार को विश्व में एक आदर्श परिवार समझा जाता है, ''एक सबके लिये और सब एक के लिये।'' अन्य देश प्रशंसा कर इस आदर्श को अपनाने हेतु प्रयत्नशील हैं। वे दादा-दादी अपने को धन्य मानते थे, जिन्हें पौत्र-पौत्रियों को संस्कारित करने का अवसर मिलता। बच्चे भी दादा-दादी की गोद में सोते, खेलते अपने देश की संस्कृति को आत्मसात् करते भविष्य की राह ढूँढ लेते थे, लेकिन आज व्यक्ति इतना आत्म-केन्द्रित हो चुका है कि वह शारीरिक सुख पाने के लिये अपनों का अपमान, अनादर और तिरस्कार करने से नहीं घबराता। परिवार के सदस्य जो सबसे निकट के हैं, जिनमें आत्मीयता एवं अपनत्व का रिश्ता है उनके प्रति भी व्यक्ति उदासीन हो गया है तो देश एवं राष्ट्र के प्रति हम कितने कर्त्तव्यशील हो सकते हैं?

स्वतंत्रता के पश्चात् पिछले साठ से अधिक वर्षों में राजशाही, राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, चिकित्सा, शिक्षा, न्याय व अन्य सेवाएँ, जो जीवन की आधार हैं, भ्रष्टाचार में आकंठ लिप्त हैं। अपकृत से अर्जित सम्पदा से क्या महिला सदस्य अनभिज्ञ हैं और संग्रहण, उपभोग में आसक्त नहीं हैं? कृपया उस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर परिवार और राष्ट्र का भविष्य सुधारने का प्रयत्न करें। 'हिन्दुस्तान' को 'भ्रष्टीस्थान' बनाने में सहयोगी न बनें, अपने आत्मिक गुण को प्रस्फुटित करें- यही भावना है।

भारतीय संस्कृति में आतिथ्य की परम्परा सदियों से चली आ रही है। ''अतिथि देवो भव''। अतिथि को देव तुल्य माना है, परन्तु यांत्रिक जीवन ने आतिथ्य को निम्न स्तर पर ला गिराया है। महिला वर्ग का कर्त्तव्य है कि नज़दीकी रिश्तेदारों की ससम्मान आदर भाव से सेवा करें और उन्हें समयोचित सहायता व सहयोग देने से न कतरायें, उनकी शुभाशीष लें।

जैसी प्रवृत्ति होती है वैसा संस्कार बनता है, जैसा संस्कार होता है वैसा विचार और

वैसा ही व्यवहार बनता है। "जैसा खायेंगे अन्न, वैसा ही रहेगा मन।" आहार-शुद्धि का बड़ा महत्त्व है। मन शांत रहे, मन पवित्र बने। मन निर्मल बन जाये और उत्तेजना कम रहे। शाकाहार से सहिष्णुता, समभाव आता है- सद्गुणों, सद्वृत्तियों का विकास होता है। शरीर, श्वास, इन्द्रिय, प्राण, मन, भाव और चेतना का समन्वित रूप है जीवन। शरीर स्वस्थ रहे, श्वास लयबद्ध रहे, इन्द्रियाँ काम करने में समर्थ रहें, प्राण गतिशील रहें, मन एकाग्र रहे, भाव विशुद्ध रहे और चेतना अपने पर आये आवरण या विकारों को दूर करने में पुरुषार्थ करती रहे, ऐसा व्यवहार एवं आचार-विचार रहना चाहिए। खान-पान चिंतन व आचरण दोनों को प्रभावित करता है।

कुछ वर्षों से नव पीढ़ी जंक फूड एवं रेस्टोरेंट में भोजन करने की ओर प्रवृत्त है। निवास पर भोजन पकाने का श्रम नहीं करना चाहती। टी.वी. पर मन लुभावन विज्ञापन से बच्चे तथा वयस्क भी प्रभावित होकर फास्ट फूड की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अशुद्ध वस्तुओं का बोलबाला है। प्रशासन द्वारा "अशुद्ध के विरुद्ध युद्ध" थोथा नारा ही है। प्रशासन संवेदनहीन, भ्रष्ट एवं पंगू हो गया है। ऐसे वातावरण में स्वयं द्वारा शुद्ध, सात्त्विक, पौष्टिक सामग्री बनाना श्रेयस्कर ही नहीं अपितु कर्त्तव्य भी है। नव पीढ़ी में पति-पत्नी दोनों कामकाजी होते जा रहे हैं। इस परिस्थिति में पति का कर्तव्य है कि वह महिलाओं को सहयोग कर घर के कार्य में भी अपनी भागीदारी निभाए, जैसे कि पत्नी अर्थ-अर्जन में शिरकत कर रही है। बच्चे-बच्चियों को भी सहयोग देते हुए बचपन से ही गृह-कार्य करने की शिक्षा देनी चाहिए ताकि विवाह के पश्चात् उन्हें घर संभालना भार स्वरूप नहीं लगे और वे स्वेच्छा से मुस्कराते हुए, मुस्तैदी से घर आंगन व परिवार को संवारें और सजाएँ, घर को स्वर्ग बनाएँ ताकि पारिवारिक सदस्यों एवं रिश्तेदारों को सुहावना लगे और उन्हें अपने दादा-दादी, नाना-नानी एवं अन्य बुजुर्ग सदस्यों की याद कम सताए।

अहिंसा का व्यावहारिक रूप है विनम्रता। मुदुता का व्यवहार करना ही विनम्रता है। भाषा मधुर, मीठी व विनम्र होनी चाहिए। भाषा और वाणी संस्कार को प्रदर्शित करती है। वाणी में विनम्रता होनी चाहिए, अहंकार नहीं। जब भी किसी से बात करें, सदैव शिष्ट शब्दों का इस्तेमाल करें। याद रखें अपनी वाणी में मधुरता, सौम्यता, शालीनता और मुस्कराहट होनी चाहिए। सदैव शांति से सोच-समझ कर धीमी आवाज में बात करें। वाणी में वशीकरण का जादू है। आपकी बात संक्षिप्त, सारगर्भित, सत्य, सहज, सरल और सार्थक होनी चाहिए। अनर्गल व कटाक्ष रहित होनी चाहिए। राजस्थान में तो 'जी' लगा कर बोलने की प्रथा है, उसका पालन करें। द्रौपदी के शब्द बाण ने महाभारत का रूप लिया- सब भिज्ञ हैं, सबक लें।

चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लेना तो सर्वमान्य है। चरण स्पर्श करने पर प्रणम्य व्यक्ति चरण-स्पर्श कर्ता के मस्तिष्क पर अपना दायां हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं जिससे प्रणम्य और प्रणामकर्ता दोनों में गुणों का विद्युत प्रवाह संचालित होता है और स्पर्शकर्ता के कई दोषों का मार्जन हो जाता है। चरणस्पर्श के लिए मेरुदण्ड मोड़ना पड़ेगा, जिससे मेरुदण्ड सुदृढ़, लचीला, स्वस्थ और प्राणवान बनेगा। चरण-स्पर्श से अहंकार समाप्त हो जाता है और श्रद्धा के भाव जागृत होते हैं। आजकल चरण-स्पर्श करने के तरीके एवं मुद्रा में भी विकृतियाँ आ गई हैं और यह एक नाम-मात्र की क्रिया बिना भाव, श्रद्धा व विश्वास के हो रही है, इसमें सुधार की आवश्यकता है।

बालिका एवं महिला वर्ग में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। यह शुभ-संकेत है। यदि एक महिला शिक्षित एवं संस्कारित होती है तो सारा घर परिवार भी शिक्षित व संस्कारी होगा और घर-संसार सुखी होगा। शिक्षा सिर्फ किताबी शिक्षा नहीं होकर 'सम्यग् ज्ञान', 'सम्यग् दर्शन' व 'सम्यक् चारित्र' विकसित करने में सक्षम होनी चाहिए। आजीविका अर्जित करने के साथ चहुमुँखी प्रतिभावान बनाने में सहयोगी होनी चाहिए।

आज कामकाजी महिलाएँ अपने केरियर के चक्कर में मातृत्व से घृणा कर, उसे गौण करने या उससे परे हटने लगी हैं। उधर शिक्षित व समृद्ध परिवार में कन्या भ्रूण हत्या ने लिंग अनुपात में कष्टप्रद असमानता पैदा कर दी है। क्या स्त्री-विहीन समाज की परिकल्पना संभव है?

कई अवयस्क व युवा महिलाएँ अब मद्यपान, तम्बाखू, ड्रग्स सेवन, अनाचार, अनैतिक व्यवहार में भी लिप्त होने लगी हैं। कहा जा रहा है कि छोटी उम्र की लड़कियाँ विवाह पूर्व विषय-वासना में आकर्षित होकर अपना कुमारित्व भी भंग कर रही हैं। भारतीय नारी से यह अपेक्षित नहीं है। ऐसी बालिकाएँ-महिलाएँ स्वयं का, परिवार का व राष्ट्र का भविष्य बिगाड़ रही हैं। महिला वर्ग को इन कुप्रवृत्तियों पर लगाम लगानी चाहिए।

स्वतंत्रता के पश्चात् आर्थिक स्थिति सुधरी है। नव धनाढ्य वर्ग के पास पैसे का आधिक्य हुआ है। स्वच्छंदता बढ़ी है। नई-नई वस्तुओं, सामग्रियों, पहनने के कपड़ों, सौंदर्य-प्रसाधनों के कारण चमक-दमक बढ़ी है। अर्थाभाव नहीं होने से नित नई क्रय-प्रवृत्ति बढ़ी है। बेकाबू उपभोक्तावाद व विभिन्न समारोहों में होने वाले राष्ट्रधन की बरबादी पर नियंत्रण लगाना अत्यावश्यक है। इस मर्ज का अब राष्ट्रीयकरण या भारतीयकरण हो चुका है। पारिवारिक रोक-टोक एवं नियन्त्रण गौण होते जा रहे हैं। संग्रह व दिखावे की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित हो रही है। यह राष्ट्र के लिए घातक है।

विवाह, जन्मदिन, त्यौहार आदि अवसरों पर बेतहाशा खर्च बढ़ रहा है, भोंडा

प्रदर्शन हो रहा है, जिसका प्रोत्साहन महिला वर्ग द्वारा भी किया जा रहा है। कमजोर वर्ग भी पीछे नहीं रह रहा है। समाज में अपना प्रभुत्व व स्थान बनाने की होड़ है। इन सामाजिक कुरीतियों को रोकने हेतु बुजुर्गों का साहस कम हो रहा है। उनकी पकड़ परिवार व समाज पर कम हो रही है। अर्थ प्रधान समाज उभर कर आ रहा है। सुनने व सुधरने की क्षमता नगण्य है। आर्थिक असमानता बढ़ रही है। अनावश्यक खर्च की प्रवृत्ति निरन्तर अग्रसर है। उधार क्रय की तरफ आकर्षण बढ़ रहा है। विवेकहीन अनावश्यक खर्च और दिखावा जोर शोर से हो रहा है। महिलाएँ जो घर परिवार की धुरी हैं, चिंतन करें।

धनाढ्य, उच्च मध्यम वर्ग की महिलाओं एवं पुरुषों के द्वारा अपने बालक-बालिका की अनावश्यक एवं अनुपयुक्त मांग को, बिना हिचकिचाहट व विरोध के पूरा किया जा रहा है। इससे फिजूलखर्ची बढ़ती है और बच्चे उद्दण्डता की ओर अग्रसर होते हैं। यह परिवार व समाज के लिए घातक है। विचार कर विवेक से निर्णय लें।

महिलाओं को प्रकृति से सुन्दरता मिली है। उन्हें सौंदर्य प्रसाधन व चटक-मटक की आवश्यकता नहीं है। फिर भी बाहरी सुन्दरता को पाने के लिये वे पीड़ा उठा रही हैं, राष्ट्रीय सम्पदा स्वाह कर पारिवारिक खर्च बढ़ा रही हैं, स्वयं का समय व्यर्थ कर रही हैं और परेशानी को आमंत्रण दे रही हैं। उन्हें बाह्य सौंदर्य को नहीं, आंतरिक सौंदर्य को विकसित करना चाहिए। मन सुन्दर होगा, भाव शुद्ध होगा तो तन की सुन्दरता गौण हो जाएगी। युवा पुरुष भी सौन्दर्य प्रसाधनों में उलझ रहे हैं, जो उनके लिए घातक है।

यह सही है कि पुरुष व महिला की शारीरिक संरचना आंशिक रूप से भिन्न है। दोनों की कार्य-परिस्थितियाँ भी भिन्न हो सकती हैं, किन्तु दोनों में अनेक दृष्टियों से आधारभूत समरूपता है। विचार, आचार, शिक्षा व संस्कृति का विकास, उम्र, भोग व उपभोग के आयाम लगभग एक से हैं। किन्तु नारी द्वारा सौन्दर्य प्रसाधनों, आभूषणों व पहनावे में सीमा से परे जाकर स्वयं को परमुखापेक्षी व पराश्रयी बना लेना अपनी क्षमता व शक्तियों पर सीधा पर्दा डालने से कम नहीं है। कतिपय गुण यथा- करुणा, कोमलता, सहिष्णुता, उदारता, संवेदनशीलता, शालीनता आदि, पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में प्रायः अतिशयता व नैसर्गिकता से विद्यमान हैं।

प्रत्येक व्यक्ति यह सोचे कि वह स्वतंत्र है, किन्तु स्वच्छन्द नहीं है। अतः अधिकार प्राप्त करना है तो उससे जुड़े कर्त्तव्य का पालन करना होगा। यह जिन्दगी कर्त्तव्यों से चलती है, अतः अधिकार-प्राप्ति के साथ कर्त्तव्य निभाने का संकल्प करें, तब ही पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता बनी रहेगी। ऐसे परिवारों से बने समाज एवं राष्ट्र के विकास की गति कभी ठहर नहीं सकती।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि नारी को स्वयं को उठना है, जागृत होना है, स्वयं की शक्तियों को पहचानना है। सशक्तीकरण मात्र नारा नहीं है, यह चुनौती है जिसे स्वीकार कर अवसर में बदलना चाहिए। ऐसा उसे अपने स्वाभाविक व नैसर्गिक गुणों को बनाये रखते हुए करना होगा। संविधान ने सुरक्षा व सम्पत्ति प्रदान कर नारी को सशक्त बनाया है, परन्तु उन्हें अपने कर्त्तव्यों का भी समुचित पालन करना चाहिए। सोचिए और अग्रसर होइए। भारतीय स्वर्णिम काल की पुनरावृत्ति हो। पाश्चात्त्य अंधड से बचें, यही शुभ कामना है।

-वरिष्ठ अधिवक्ता, 15, जवाहर लाल नेहरू मार्ग,
सोनी अस्पताल के सामने, जयपुर-302004 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

हीरा-मान हैं बड़े महान्

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्जः- जपो जपो नवकार.......।)

हीरा मान हैं बड़े महान्, ज्ञानी ध्यानी संयमवान।
शत-शत वन्दन, हमारा है पूज्यवर को।। टेर।।
सूरज सम चमके तेजस्वी, चन्दा सम निर्मल हैं यशस्वी।
सागर सम गंभीर मनस्वी, अमृत सम माधुर्य वचस्वी।
होऽऽऽ इनकी निष्ठा बड़ी महान्, त्यागी, मौनी, क्रियावान्।।
शत-शत वन्दन.....।। 1।।

आत्म तत्त्व वेत्ता ऽऽऽ, आत्म ज्ञान चेता ऽऽऽ।
आत्म ध्यान ध्येता ऽऽऽ, परात्म भाव जेता ऽऽऽ।
हो ऽऽऽ आत्म-रमणता बड़ी महान्, अन्तर्मुखता है पहचान।।
शत-शत वन्दन .....।। 2।।

शान्त-दान्त और वीर गंभीरा, संयम पालन में जो शूरा।
ज्ञान क्रिया का योग सुनहरा, जप-तप आराधन में हीरा।
हो ऽऽऽ इनकी समता बड़ी महान्, जीवन भी है करुणावान्।।
शत-शत वन्दन.....।। 3।।

जिन-शासन के निर्मल चन्दा, रत्न संघ के जो हैं शास्ता।
संयम-साधना में आनन्दा, भक्तों के हैं जो भगवन्ता।
दीक्षा अर्ध-शती है महान्, 'धर्म' करता है गुणगान।।
शत-शत वन्दन.....।। 4।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

बाल-स्तम्भ

त्रिविध मनुष्य

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 15 दिसम्बर 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

भोजन ग्रहण करने की दृष्टि से विचार करें तो हमें तीन प्रकार के मनुष्य दिखाई देते हैं- एक खाने के लिए जीते हैं, दूसरे जीने के लिए खाते हैं तथा तीसरा वर्ग साधकों का है, जो संयम यात्रा का निर्वाह करने के लिए आहार लेते हैं।

1. खाने के लिए जीने वाले-

जो खाने के लिए जीते हैं वे खाद्य-अखाद्य, पेय-अपेय, समय-असमय आदि का विचार नहीं करके अपनी तो हानि करते ही हैं, किन्तु अनन्त जीवों की हिंसा के दोष से भी वे नहीं बच पाते। जिनका लक्ष्य खाना है, वे सोचते हैं- मानव जीवन में आए हैं तो सब तरह के पदार्थों का सेवन कर लेना चाहिए, फिर न जाने यह नरतन कब प्राप्त हो। किन्तु उनका यह चिन्तन उन्हें किस पतन की ओर धकेल रहा है, इससे वे अनभिज्ञ बने रहते हैं। यह अज्ञान एवं मिथ्यात्व की दशा है। ऐसी दृष्टि वाले लोगों के लिए एक पुरानी कहावत है- 'मूर्ख का मरण दो तरह से होता है, या तो खाय मरे या उठाय मरे।' ये लोग स्वाद के वशीभूत होकर भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक न रखते हुए मद्य-मांस जैसे अभक्ष्य एवं असेवनीय पदार्थों का सेवन करते हुए भी नहीं हिचकते हैं और अपनी क्षणभर की स्वादलोलुपता के लिए हजारों-लाखों प्राणियों की अकाल मृत्यु में निमित्त बन जाते हैं।

खाने के लिए जीने वाला रसना के अधीन होता है। उन्हें कब खाना और क्या खाना इसका भी बोध नहीं होता। नीतिशास्त्र कहते हैं कि जब कभी खाने का अवसर आता है तो जानवर भी सूँघ कर खाता है। गधा जैसा मूढ़ जानवर भी मुँह डालने से पहले भोजन को सूँघता है। अगर कभी उसके आहार में तम्बाखू का अंश आ जाय तो वह मुँह फेर लेता है।

ऊँट एवं बकरी के लिए भी कहावत है- "ऊँट छोड़े आँकड़ो, बकरी छोड़े काँकरो।" ऊँट कँटीली झाड़ियाँ खा लेता है, बावलिया खा लेता है, कड़वी पत्तियाँ खा लेता है, किन्तु आँकड़े (आकवृक्ष) के पत्ते आते ही मुँह फेर लेता है। बकरी ज़मीन पर पड़ी पत्तियाँ खा जाती है, किन्तु कंकर नहीं खाती है। जानवर भी भक्ष्य-अभक्ष्य में भेद करना जानते हैं, किन्तु यह बुद्धिशील मनुष्य इसका विचार नहीं करता। वह ऐसे होटलों और रेस्टोरेण्टों में जाता है जहाँ उसे खाने को मांस और अण्डे मिलें, पीने को मदिरा मिले और भोगने को भोग मिलें। धिक्कार है उसकी बुद्धिशीलता को। उससे तो एक कबूतर अच्छा है। कबूतर कंकर भले ही खा लेता है, किन्तु किसी जीव को हानि नहीं पहुँचाता। वह शुद्ध शाकाहारी है। उसके लिए कहा गया है- काल हो, दुष्काल हो, अन्न की दुर्लभता हो, कबूतर दाना नहीं मिलने पर कंकर खा जाता है, किन्तु सुले हुए (त्रस जीव युक्त) अनाज के दाने को नहीं चुगता है। कहने का आशय है कि पशु-पक्षी भी खाद्य-अखाद्य का भेद करके चलते हैं, किन्तु खाने के लिए जीने वाला मनुष्य इसका विचार करके नहीं चलता।

जो खाद्य-अखाद्य का भेद करना जानते हैं उनमें बहुत से ऐसे हैं, जिन्हें यह ज्ञान नहीं है कि उन्हें कितनी मात्रा में खाना चाहिए। वैद्यों एवं डॉक्टरों के द्वारा चेताये जाने पर भी वे अपनी आदतों को नहीं बदलते हैं। एक समय में चार-चार सेर चूँठिये (बेसन) की चक्की खाने वालों के उदाहरण ध्यान में हैं।

2. जीने के लिए खाने वाले-

दूसरे प्रकार के मनुष्य जीने के लिए खाते हैं। ये आहार-विज्ञान का थोड़ा खयाल रखकर चलते हैं। अपनी प्रकृति के अनुकूल आहार करते हैं। अगर वह पित्त प्रकृति का है तो उसके अनुसार, अगर वह वात प्रकृति का है तो उसके अनुसार तथा अगर वह कफ प्रकृति का है तो उसके अनुसार आहार ग्रहण करता है। पेट में अल्सर हो गया है तो पेय पदार्थ ज्यादा लेता है तथा ठोस पदार्थ कम। कब्ज होने पर कब्जनाशक आहार लेता है, दस्त लगने पर उसे रोकने का उपाय सोचता है। तेल, मिर्च, मसाले के अधिक उपयोग से भी बचता है। उसे यह भी विवेक रहता है कि खाद्य क्या है, अखाद्य क्या है, कब खाना चाहिए और कब नहीं खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए और कितना नहीं खाना चाहिए? इन सबका विवेक रखकर चलने वाले ये लोग खाने के लिए जीने वालों की अपेक्षा सुस्वास्थ्य के लक्ष्य वाले हैं। इनका जीवन उतना असंतुलित नहीं होता जितना खाने के लिए जीने वालों का होता है। व्याधियों से भी ये अपेक्षाकृत कम घिरे रहते हैं।

3. संयम-निर्वाह के लिए खाने वाले-

साधकों के लिए भी भोजन जरूरी है। क्योंकि साधना में शरीर सहायक है तो शरीर को

साधना योग्य रखने के लिए आहार भी आवश्यक है। सच्चे साधक संयम-निर्वाह के लिए आहार ग्रहण करते हैं, जीने के लिए अथवा स्वादलोलुपता के लिए नहीं। प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है- **'तहा भोत्तव्वं जहा से जाया माया य भवइ।'** अर्थात् उतना एवं वैसा आहार ग्रहण करो, जिससे तुम्हारी संयम-यात्रा का निर्वहन हो सके। तुम्हारी साधना में आहार के कारण कोई विघ्न उत्पन्न न हो, प्रमाद नहीं आवे और विकार भी उत्पन्न न हों। स्वाद के लिए भोज्य पदार्थों का सेवन करने की साधक को अनुज्ञा नहीं दी गई, **'रसट्ठयाए न भुंजिज्जा।'** रस के लिए मत खाओ। **'जवणट्ठयाए भुंजिज्जा'**- संयम-यात्रा का निर्वाह करने के लिए खाओ।

साधना करने वाले गृहस्थ साधक के लिए भी आहार करते समय तीन बातें ध्यान में रखने की हैं- 1. स्वास्थ्य की दृष्टि से, 2. साधना की दृष्टि से और 3. विकृति उत्पन्न करने वाला न हो, इसको खयाल में रखकर आहार ग्रहण करे। जो साधक इन तीन बातों को ध्यान में रखकर आहार लेते हैं वे विवेक दृष्टि वाले कहे जाते हैं।

साधक-जीवन में सात्त्विक आहार हो, क्योंकि आहार के साथ मन का गहरा सम्बन्ध है। 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन' यह प्रसिद्ध उक्ति इस बात का संकेत करती है कि साधक को अपना चित्त निर्मल बनाना है तो आहार का चयन सही करना जरूरी है।

-'हीरा-प्रवचन-पीयूष भाग-1' से संकलित

प्रश्नः-

1. आप कौनसे प्रकार के मनुष्य हैं?
2. खाने के लिए जीने वालों का जीवन पतित क्यों होता है? समझाइये।
3. आवश्यकता से अधिक न खाने वाला व्यक्ति कौनसी श्रेणी का है?
4. "जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन"- उक्ति का तात्पर्य बताइये।
5. साधक के भोजन-विधि की विशेषताओं को लिखिए।
6. अर्थ बताइये- खाद्य, चार सेर, अनभिज्ञ, अल्सर, अनुकूल।

(बाल-स्तम्भ सितम्बर-2012 का परिणाम पेज नं. 76 पर देखें।)

दीपावली पर्व पर पटाखें न छोड़ें

दीपावली पर पटाखें छोड़ने से बचें। इसकी आवाज से छोटे-छोटे जीव भयभीत होते हैं तथा कई जीव मर भी जाते हैं। कहीं आग लगने का भी खतरा रहता है तो कहीं अपने अंग जलने का भी खतरा होता है। दीपावली के दिन भगवान् महावीर का निर्वाण दिवस है, अतः उनकी प्रार्थना करें, माला जपें या सत्साहित्य पढें।

संगोष्ठी-रिपोर्ट

जैन जीवन-शैली विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

डॉ. श्वेता जैन

जयपुर के महावीर नगर में परम **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के पावन सान्निध्य में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 6-7 अक्टूबर, 2012 को तृतीय राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी का विषय था- "जैन जीवन शैली"।

संगोष्ठी में आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि जैन जीवन शैली पर विद्वज्जनों ने जो प्रकाश डाला है उसमें से सार ग्रहणकर अपनी जीवनशैली को थोड़ा भी उन्नत बनाएँ तो यह संगोष्ठी सार्थक सिद्ध होगी। आज मानव में अविश्वास, असहिष्णुता और निर्दयता व्याप्त हो गई है जिसे प्रामाणिकता, अनुकम्पा, समता के द्वारा दूर कर जीवन शैली को अच्छा बनाया जा सकता है। जीवन शैली में परिवर्तन की प्रथम सीढ़ी अच्छे विचार हैं। अच्छे विचारों से ही निष्पाप, संस्कारी जीवन शैली का विकास सम्भव है।

6 अक्टूबर 2012

उद्‌घाटन सत्र

(प्रातः 9 बजे से 11.30 बजे तक)

पावन सान्निध्य – आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं संतवृन्द
अध्यक्षता– पद्‌मभूषण श्री डी.आर. मेहता-जयपुर
मुख्यातिथि– श्री मोफतराज मुणोत-मुम्बई
आधार वक्तव्य– प्रो. सागरमल जैन-शाजापुर
सारस्वत अतिथि–डॉ. प्रेमसुमन जैन-उदयपुर
श्री रणजीत सिंह-मुम्बई
संयोजन– डॉ. धर्मचन्द जैन

6 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे आयोजित उद्‌घाटन-सत्र में प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर के निदेशक **प्रो. सागरमल जैन** ने आधार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि जन्म और मृत्यु में हमारी मर्जी नहीं चलती, किन्तु उन दोनों के बीच की पूरी जिन्दगी अपने हाथ में है। उस जीवन को जन से जैन शैली में ढालने के लिए संयम और विवेक की दो

मात्राएँ लगानी होंगी। जीवन में मर्यादा और दृष्टि में विवेक आवश्यक है तभी जीवन शैली सुन्दर बन सकती है। सारस्वत अतिथि **श्री रणजीत सिंह कूमट-मुम्बई** (सेवानिवृत्त भारतीय प्रशासनिक अधिकारी) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जैन का आचरण बोलता है, उस आचरण को सम्यक्त्व, समभाव और संतोष के माध्यम से आध्यात्मिक धरातल प्रदान करने की आवश्यकता है। धर्म का फल परलोक का विषय नहीं, अपितु वर्तमान का विषय है। बच्चों में संस्कारों के लिए निवेश करने की आवश्यकता है। सारस्वत अतिथि **डॉ. प्रेमसुमन जैन-उदयपुर** (पूर्व अधिष्ठाता, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) ने कहा कि संयम और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने नया रत्नत्रय प्रस्तुत करते हुए कहा जीवन में सादगी, सदाचार और शाकाहार को अपना लें तो जैन जीवन शैली का स्वरूप बन जाएगा। संघसंरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन एवं उद्‌घाटन सत्र के **मुख्यातिथि श्री मोफतराज जी मुणोत** ने कहा कि धर्म रोबोट की तरह मेकेनिकल नहीं होना चाहिए। रोबोट को जिन धार्मिक क्रियाओं को सिखाया जाएगा वह भी उन्हें कर लेगा, किन्तु उसे धर्मात्मा होने का भ्रम नहीं होता। जीवन में जितनी सरलता बढ़ेगी, प्रामाणिकता बढ़ेगी उतना ही धर्म जीवन में उतरेगा। सत्र के अध्यक्ष पद्मविभूषण **श्री डी.आर. मेहता** ने कहा कि हमें जैन धर्म जैसा शुद्ध धर्म मिला है, इसमें हमें स्वतन्त्रता प्रदान की गई है तथा ज्ञान एवं दर्शनपूर्वक आचरण पर बल दिया गया है। नई पीढी को धर्म से जोड़ने के लिए करुणा एवं अनुकम्पा को अपनाना होगा। यह सम्यक्त्व का एक लक्षण भी है।

उद्‌घाटन सत्र का समाहार करते हुए **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** ने कहा कि जीवन जन्म और मृत्यु इन दो तटों के बीच में बहने वाली सरिता है। पूर्वजन्म में अर्जित पुण्य से आर्य क्षेत्र, मनुष्य जन्म और वीतराग वाणी श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ है। जीवन शैली मार्गानुसारी के गुणों से प्रारम्भ होती है। जैन जीवन शैली आहार, विहार, विचार, व्यवहार आदि सबमें व्यक्त होनी चाहिए।

प्रथम सत्र (अपराह्न 11.40 बजे से 2.40 बजे तक)

अध्यक्षता- डॉ. कमलचन्द सोगानी-जयपुर

मुख्यातिथि- श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर

संयोजन- डॉ. सुषमा सिंघवी-जयपुर

विद्वान् वक्ता

1. डॉ. सुदीप कुमार जैन, दिल्ली- जैन जीवनशैली में प्रतिक्रमण का वैशिष्ट्य
2. डॉ. के.एल.पोकरना, जयपुर- जैन जीवनशैली और स्वास्थ्य

3. डॉ. चन्द्रशेखर, जोधपुर- अहिंसक जीवनशैली में शाकाहार

4. श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर- सप्तकुव्यसनों के त्याग का महत्त्व

द्वितीय सत्र (अपराह्न 3.00 बजे से 4.30 बजे तक)

अध्यक्षता- डॉ. दयानन्द भार्गव-जयपुर

मुख्यातिथि-श्री मोहनलाल मुथा-जयपुर

संयोजन- डॉ. संजीव भानावत-जयपुर

विद्वान् वक्ता

1. डॉ. श्रीयांस सिंघई, जयपुर- जैन जीवनशैली में आयी विकृतियाँ
2. श्री पदमचन्द गाँधी, जयपुर- युवापीढ़ी और जैन जीवन शैली
3. डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- परस्परोपग्रहो जीवानाम् और जैन जीवनशैली
4. श्री धर्मचन्द जैन, जोधपुर- भोगोपभोग परिमाण का जीवन में महत्त्व

तृतीय सत्र (सायं 7.00 बजे से 9.30 बजे तक)

स्थान- एम.बी.ए. सभागार, सुबोध कॉलेज, जयपुर

अध्यक्षता- डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', दिल्ली

मुख्यातिथि- न्यायाधिपति श्री मुनीश्वर नाथ भण्डारी

प्रमुख वक्ता-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, दिल्ली-

(परम्परा और विकास के अन्तर्द्वन्द्व में उलझती जैन जीवनशैली)

चर्चा सत्र- डॉ. सागरमल जैन, डॉ. प्रेमसुमन जैन, डॉ. सुषमा सिंघवी, श्री रणजीत सिंह कूमट, डॉ. प्रियदर्शना जैन, श्री प्रशान्त कर्नावट आदि द्वारा विचार व्यक्त किए गए।

धन्यवाद- श्री सुमेरसिंह बोथरा, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संयोजन- डॉ. धर्मचन्द जैन

7 अक्टूबर, 2012

चतुर्थ सत्र (प्रातः 9 बजे से 11.15 बजे तक)

पावन सान्निध्य- आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्तवृन्द

अध्यक्षता- श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर

मुख्यातिथि- श्री विमलचन्द डागा, जयपुर

संयोजन- डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर

1. श्री प्रकाशचन्द जैन, जलगांव-आगमों में उल्लिखित प्रमुख श्रावकों की जीवनशैली

2. डॉ. प्रियदर्शना जैन, चेन्नई- षडावश्यकों का जीवन में महत्त्व
3. डॉ. दयानन्द भार्गव, जयपुर- अध्यापन में जैन जीवनशैली
4. डॉ. सुषमा सिंघवी, जयपुर- अपरिग्रही जीवनशैली
5. डॉ. महावीरराज गेलड़ा, जयपुर- जैन जीवन पद्धति की वैज्ञानिकता

पंचम सत्र (12.00 बजे से 3.00 बजे तक)

अध्यक्षता- पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा, जयपुर
मुख्यातिथि- श्री आर.के. जैन, सम्भागीय आयुक्त, जोधपुर
संयोजन- डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

विद्वान् वक्ता

1. डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली- जीवन शैली में अनेकान्तवाद का प्रयोग
2. डॉ. तृप्ति जैन, लाडनूँ- तनाव-प्रबन्ध में जैन जीवन शैली
3. डॉ. मंजुला बम्ब, जयपुर- जैन जीवन शैली का बालकों में बीजारोपण कैसे हो?
4. डॉ. चंचलमल चोरड़िया, जोधपुर- स्वास्थ्यवर्द्धक जैन जीवन शैली

सम्पूर्ति सत्र (अपराह्न 3.00 बजे से 4.45 बजे तक)

अध्यक्षता- प्रो. सागरमल जैन, शाजापुर
मुख्यातिथि- श्री सुमेरसिंह बोथरा, जयपुर
संयोजन- श्री धर्मचन्द जैन, जोधपुर

विद्वान् वक्ता

1. डॉ. कमलेश कुमार जैन, जयपुर- कुन्दकुन्दाचार्य की कृतियों में जीवनशैली
2. डॉ. संजीव भानावत, जयपुर- इण्टरनेट युग में जैन जीवनशैली का प्रसार
3. डॉ. पी.सी. जैन, जयपुर- जैन जीवन शैली और अध्यात्म
4. श्री सोहनलाल सिसोदिया, बैंगलोर- जैन जीवन शैली में ध्यान एवं योग
5. प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर', नागपुर- समाज में व्याप्त विकृतियाँ और जैन जीवनशैली
6. डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर- प्रतिवेदन एवं जैन जीवन शैली की कसौटी : रत्नत्रय

संगोष्ठी में 38 विद्वान् वक्ताओं ने जैन जीवन शैली के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला तथा कई बिन्दु उभरकर आए, जिनमें से कतिपय इस प्रकार हैं-

1. जीवन के विकास का मार्ग है- जैन जीवन शैली। इसमें विवेक रूपी चक्षु और यतना रूपी चरण सहायक हैं।
2. जीने के तरीके को जीवन शैली कहते हैं। जीवन शैली का निर्माण विचारों या

मान्यताओं के आधार पर होता है। जैसे विचार होते हैं वैसा ही व्यक्ति का आचरण बनता है इसलिए सुधारने के लिए विचारों में सुधार जरूरी है।

3. जैन जीवन शैली व्यक्ति के दृष्टि परिवर्तन की शैली है। दृष्टि का परिवर्तन होने पर जीवन जीने की कला विकसित हो जाती है। दृष्टि के परिवर्तन हेतु आग्रह बुद्धि का त्याग आवश्यक है तथा चित्त को निर्मल और धैर्य सम्पन्न बनाने का संकल्प आवश्यक है।
4. संस्कार का प्रारम्भ परिवार से होता है। परिवार का जैसा वातावरण होता है, उसके अनुसार ही बालक के संस्कारों का विकास होता है। वह सुनने की अपेक्षा देखकर अधिक सीखता है, अतः बालपीढ़ी के सम्यक् विकास के लिए प्रारम्भ से ही सजगता आवश्यक है।
5. आज व्यक्ति जैन होने का लाइन्सेस लेकर घूमता है, किन्तु उसके अनुरूप अपनी जीवन शैली का विकास भी आवश्यक है। जैनत्व की विशिष्ट छाप होनी चाहिए। मदिरा, व्यभिचार, चोरी, धूम्रपान आदि से जैन व्यक्ति दूर रहता है।
6. संयममय जीवन जैनत्व की पहचान है। सच्चा जैनी किसी का बुरा नहीं सोचता, अपशब्दों का प्रयोग नहीं करता तथा भोजन में और व्यवहार में भी संयम बरतता है।
7. सांसारिक जीवन में रिश्तों की मधुरता तभी कायम रह सकती है जब हमारे में त्यागवृत्ति हो। अधिकार जताने से रिश्तों में माधुर्य समाप्त हो जाता है।
8. जैनत्व की बड़ी पहचान है- सादगी, शाकाहार और सदाचार।
9. जैन जीवन शैली के विकास हेतु आहार की शुद्धता और आजीविका की शुद्धता अपेक्षित है।
10. प्रामाणिकता जैन जीवन शैली का आभूषण है। यह जैन की विश्वसनीयता कायम करती है।
11. पद, पैसा एवं प्रतिष्ठा अनुचित साधनों से ही प्राप्त होती हो, यह सत्य नहीं है। उचित साधनों का उपयोग करके भी पद, पैसा एवं प्रतिष्ठा बिना लालसा के भी प्राप्त हो जाते हैं। उचित साधनों से सफल जीवन यापन करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों की केस स्टडी किए जाने का बिन्दु भी संगोष्ठी में उभरकर आया।
12. जैन जीवन शैली की नींव अहिंसा है। हिंसा का पूर्ण त्याग तो कठिन है, किन्तु उसको जितना कम किया जा सके, उतना कम करने का लक्ष्य रखकर जीवन जीना चाहिये। इसलिए घरेलू हिंसा हो या व्यापार के क्षेत्र में हिंसा अथवा रहन-सहन या खान-पान में होने वाली हिंसा, हिंसा के सभी रूप त्याज्य हैं।

13. जैन व्यक्ति दूसरों के अभिप्राय एवं भावनाओं को भी समझने का प्रयत्न करता है। केवल अपने को ही सही समझने एवं दूसरों को सदैव अकारण गलत समझने की दृष्टि जैन जीवन दृष्टि नहीं हो सकती।
14. जीवन जीने के लिए धन एवं साधन सामग्री आवश्यक है। किन्तु अमर्यादित रूप से धन की लालसा का होना सुन्दर जीवन के लिए आवश्यक नहीं है। ईमानदारी से श्रम करने वाला एवं प्राप्त का सदुपयोग करने वाला कभी निर्धन नहीं होता तथा उसका जीवन भी अनावश्यक लालसा युक्त व्यक्ति की अपेक्षा शान्ति, सौहार्द और संतोष से युक्त होता है।
15. सदैव बहिर्मुखी जीवन, व्यक्ति में सही दृष्टि (सम्यक् दृष्टि) का विकास नहीं होने देता। इसलिए सम्यक् दृष्टि का विकास करने के लिए अन्तर्मुखता की आवश्यकता है। अन्तर्मुखता से जीवन में सात्त्विक परिवर्तन होता है।
16. युवापीढ़ी को जैन जीवन शैली से जोड़ने के लिए उचित तर्कों का समावेश आवश्यक है। विज्ञान के विकास को भौतिक जीवन के लिए उपयोगी स्वीकार करते हुए धर्म की महत्ता को आत्मिक विकास की दृष्टि से स्थापित करने हेतु तर्क और श्रद्धा का प्रयोग अपेक्षित है।
17. पर्यावरण-संरक्षण की दृष्टि से भी जैन जीवन शैली का महत्त्व निर्विवाद है। अहिंसा, संयम और अपरिग्रह की जीवन शैली से पर्यावरण स्वतः संरक्षित होता है।
18. कुछ लोग यह कहते हैं कि हम रात्रि-भोजन का त्याग नहीं कर सकते, किन्तु वे यह तो नियम ग्रहण कर सकते हैं कि रात्रि को अमुक समय (8 बजे, 9 बजे) पश्चात् भोजन नहीं करेंगे।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2012 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'क्या वाणी स्वास्थ्य को प्रभावित करती है?' के प्रश्नों के उत्तर 45 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन अंकों के आधार पर किया गया है। पूर्णांक 60 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	**अंक**
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती सुषमा सिंघवी-जोधपुर	58
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री दिलीप गांधी-चित्तौड़गढ़	57.5
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती सूरज-राजेश बोहरा-जोधपुर	57

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मोबाइल) से सम्पर्क कर सकते हैं।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (30)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर-2012" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेन्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601(राज.),फोनः 94141-16766 के पते पर 15 दिसम्बर 2012 तक मिल जाने चाहिए। प्रश्न समझ न आने पर आप फोन के द्वारा सम्पर्क कर समझ सकते हैं।

विशेष- 1. पहेली प्रश्न 49-50 में संकेत ("   ") में दिए गए हैं।

2. अपने प्राप्तांक शीघ्र जानने हेतु खाली पोस्टकार्ड साथ भेज सकते हैं।

(अ) वाक्य में एक शब्द गलत छपा है, उसको सही करके लिखिए-

1. मिती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ।
2. वीर परिवारों का सम्मान योगों की अपेक्षा त्याग का महत्त्व स्वीकार करना है।
3. टूटे मनों को फिर जोड़ती क्षमा, भाव उन्नति की कार है क्षमा।
4. व्यक्ति के तनाव को कम करने में साधु-संतों का असंग कारगर सिद्ध होता है।
5. दवा-विवाद से बचने का प्रयास करें।
6. एषणीय निर्दोष वस्तु सुखकर गहना।
7. जो देगा, वह दारोगा।
8. विषय वासना के सेवन करने के कारण वे 'श्रमण' कहलाते हैं।
9. दर्शन कभी अदर्शन विपरीत अदर्शन नहीं बनता।
10. स्नातक सयोगी और उपयोगी दोनों प्रकार के होते हैं।
11. साधर्मी भाइयों का लाभ मिले तो लेऊँ, अयश की आकांक्षा न रखूँ।
12. ये ज्ञान को बंध एवं पाप का कारण मान ज्ञान को श्रेष्ठ मानते हैं।
13. बिगड़े हुए स्वभाव को उदार बनाना चाहते हो तो तुम्हें अधिक कष्ट, अधिक सुविधा, अधिक अपमान और अधिक अन्याय सहने ही पड़ेंगे।
14. समता को अपनाने वाला साधक ही महापुरुषों के गुणों को दर की निगाह से निहारता है।

15. भौतिकता कल को कलशमय बनाती है, आध्यात्मिकता कल को कलशसम बना देती है।

16. अभी कुछ दिनों पूर्व वे सार्वजनिक चंदा निगल गये, उसे चबा रहे हैं।

(ब) मुझे पहिचानें–सच को जानें–

17. मुझ हेतु (मेरे लिए) स्व का अधिक ध्यान रखें।

18. मुझसे किसी भी समस्या का हल ढूँढा नहीं जा सकता है।

19. मुझ हेतु सहयोग करना व्यक्ति का कर्तव्य है।

20. मै आपका भविष्य बताने में सक्षम हूँ।

21. मैं मानव सभ्यता, संस्कृति का मंगलाचरण हूँ।

22. मैं दुःख के कारणों को भी सुख में बदलने का साधन हूँ।

23. मैं भीतर से रक्षा, परन्तु ऊपर से चोट करता हूँ।

24. मुझे नियंत्रण में रहने का कष्ट झेलना पड़ता है।

25. मेरी तरंग क्षण भर में सारे संसार में फैल जाती है।

26. मुझमें मात्र केवली समुद्घात ही पाया जाता है।

27. मैं तेरहवें गुणस्थान में काय योग का निरोध कर लेता हूँ।

28. मेरा अर्थ, अर्थ का चिन्तन करना है।

29. मैं सांसारिक प्रलोभनों से विचलित नहीं होता।

30. मेरे बिना धर्मवृक्ष स्थिर नहीं रह सकता।

31. मुझे वह अनन्त कहा गया है जिसे पूरी तरह समझने के लिए पूर्वों का ज्ञान भी पर्याप्त नहीं हैं।

32. मुझे तीर्थंकर का प्रधान शिष्य पद कहा गया है।

(स) एक ही शब्द में उत्तर भरना – जी–जान से कोशिश करना–

33. जो असंभव को भी संभव करने में सर्वथा सक्षम हो, ऐसी विशिष्ट शक्ति।

34. जिसमें हाथ जोड़, सिर झुका, आदर सत्कार किया जाता है।

35. जो रोग होने पर लाभ करती है।

36. जो इन्द्रिय सुनने में सहायक है।

37. जिससे आस्रव के द्वारों को रोका जाता है।

38. जो सागर की भाँति अतृप्त है।

39. जिसका चोरों की दुनिया में कोई कार्य नहीं है।

40. जो संयम-मार्ग पर जीवन अर्पित कर देता है।

41. *यश तथा सम्मान की भावना।*

42. जो दुष्कर्मों को काटने का अचूक अस्त्र है।

43. जो मिलने का सशक्त माध्यम है।

44. जिससे मनुष्य को सबसे अधिक यातना होती है।

45. जिसका सम्यक् उपयोग होने पर वह मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति बन जाती है।

46. गोशालक का वीर प्रभु के प्रति भाव।

47. जो शान्ति का स्थायी और निरापद उपाय है।

48. जो लब्धि अप्रमत्त अवस्था में प्राप्त होती है, परन्तु प्रयोग प्रमाद अवस्था में होता है।

(द) पहेली प्रश्न बुझाओ-

ध्यातव्य बिन्दु- 1. जिनवाणी में आए विभिन्न शीर्षकों में से उचित शीर्षक लिखिए।
2. शीर्षक में से कुछ उत्तर न लिखकर पूरा शीर्षक लिखना है।

49. युवा ऐसी शक्ति है बदल सकती जो हर रग को,
जरूरत है सम्यक् दिशा में उठाने की अपने पग को
कोशिश ही तो दिलाती कामयाबी है मेरे मित्रों!
बस ''दक्षता'' होवे ऐसी ''बदल'' के रख दे इस जग को।।

50. कर्मों की रेखा हो उल्टी तो किस्मत भी कहर ढाती है,
असुरक्षित हो सीमा तो दुश्मन की सौगात लाती है।
यह सब होता है किसी के मन-वचनादि असंयम से,
''योग'' ''नियंत्रण'' हो अगर, बंजर भी बहार को लाती है।।

चिन्तन के कण

- आज मानव को अपने जीवन-निर्वाह की तो चिन्ता है, पर जीवन-निर्माण की नहीं।
- ज्योतिष आपका भविष्य बता सकता है,
परन्तु जिनवाणी आपका भविष्य बना सकती है।
- छोटों को देखकर जीओ, बड़ों को देखकर बढ़ो,
अच्छे के लिए प्रयास करो और बुरे के लिए तैयार रहो।
- जिस घर में बड़ों को मान और छोटों का ध्यान,
उस घर में कभी न आये आंधी और तूफान।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (29) का परिणाम

स्वाध्याय हो आगम सूत्रों का, जिनवाणी को भी है पढ़ना।
प्राप्तांकों में वृद्धि करना, प्राथमिकता गुणश्रेणि चढ़ना।।
कर्त्तव्यनिष्ठा-श्रद्धाभक्ति सह ईमानदारी का लक्ष्य रखना।
करना और करते रहना, निरन्तर हमको है आगे बढ़ना।।

जिनवाणी के अगस्त-2012 के अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (29) में 166 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के मई-जून-जुलाई-2012 के अंकों पर आधारित थी। परिणाम लक्की ड्रॉ के आधार पर निकाला गया है। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार- 1100/- रुपये — **श्रीमती अरुणा जैन-होशियारपुर (50)**

द्वितीय पुरस्कार- 750/- रुपये — **श्रीमती कमला सेठिया-मसूदा (50)**

तृतीय पुरस्कार- 500/- रुपये (प्रत्येक) — **श्रीमती रोमा मेहता-जोधपुर (50)**

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये (प्रत्येक)

बबीता जैन-भरतपुर (50)
आशा अग्रवाल-जयपुर (50)
पूनम जैन-फरीदकोट (50)
जया जैन-भरतपुर (50)
चंचल गोलेच्छा-जयपुर (50)

49.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-लता आंचलिया-धुलिया, प्रमिला पोखरणा-धुलिया, राजुल कोठारी-धुलिया, सरोज रूणवाल-धुलिया, भारती मंडलेचा-पुणे, नथमल कोठारी-बालोद, रोहन जैन-इन्दौर, प्रवीण जैन-हिण्डौन सिटी, विद्या संचेती-जोधपुर, सपना जैन-आलनपुर, शशिकला लुणावत-नासिक, अंजलि जैन-हिण्डौनसिटी, जयमाला कांकरिया-पाली, सिद्धि बाफणा-जोधपुर, ऋषभ जैन-सुमेरगंजमण्डी, राजेश लुणावत-आचीणा।

49 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- कंचन लोढ़ा-नासिक, शैली मेहता-जोधपुर, मधुबाला जैन-आचीणा, मनीष जैन-आचीणा, विद्या संघवी-बदनावर, हेमराज सुराणा-जयपुर, मोनिका जैन-इन्दौर, बाबूलाल जैन-भरतपुर, उपमा चौधरी-अजमेर, अतिका मेहता-जोधपुर, संजना दरड़ा-गोटन, कमलेश गेलड़ा-अजमेर, किरण कुम्भट-जोधपुर, रीमा जैन- लुधियाना, संजना एस. रांका-भड़गांव।

48.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-दर्शिका टाटिया-जलगांव, जितेन्द्र जैन-चौथ का बरवाड़ा, महेन्द्र जैन-चौथ का बरवाड़ा, योगेश जैन-सवाईमाधोपुर, महावीर प्रसाद जैन-चकेरी, सुनील जैन-जोधपुर, आयुषी लुणावत-आचीणा, प्रवीण जैन-आचीणा, महेन्द्र जैन-पालदा, सरोज खाबिया-मैसूर, संगीता खाबिया-मैसूर, उत्तमचन्द-समदड़ी, डॉ0 पदमचन्द मुणोत-जयपुर, जीतेष बालावाला-सिवाणा, रागिनी जैन-सवाईमाधोपुर, मधु जैन-सवाईमाधोपुर, धर्मेन्द्र जैन-सवाईमाधोपुर, मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी, मंजुला जैन-भायंदर, निर्मला बोहरा-इचलकरंजी, विनीत जैन-कोटा, लक्ष्मीचन्द जैन-बालोतरा, सुनीता दुसाज-जयपुर, शिल्पा अब्बाणी-जोधपुर, ज्ञानचन्द कोठारी-अजमेर, रेखा कोठारी-अजमेर, वर्षा जैन-सवाईमाधोपुर, बबीता जैन-बजरिया, वी.एम. मेहता-जोधपुर, अनुराग सुराणा-अजमेर, चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर, सुधा डागा-बीकानेर, देवीलाल

भानावत–कानोड़, सुषमा सिंघवी–जोधपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–अनिल जैन, शिल्पा सुराणा–अजमेर, हेमा जैन–जयपुर, नेणचन्द बाफणा–जोधपुर, सुनीता जैन–आचीणा, सुनील जैन–मैसूर, पारसमल बाघमार–पाटोदी, सुनीता कुमट–ब्यावर, कपिल कोठारी–जयपुर, जयमाला जैन–सवाईमाधोपुर, पदमचन्द गांधी–जोधपुर, प्रकाशचन्द नाहर–भदेसर, अंकित नाहर–भदेसर, प्रियंका जैन–सवाईमाधोपुर, मोटनबाई लोढ़ा–अजमेर, रतनसिंह मेहता–भदेसर, प्रमिला बोहरा–जैतारण, पुष्पा गोलेच्छा–ब्यावर, निशा लुंकड़–कोटा, नरेन्द्र लुंकड़–कोटा, विजयलक्ष्मी–अजमेर।

47.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–हरकचन्द जैन–मण्डावरा, बृजेन्द्र जैन–पांवाडेरा, सुगनचन्द छाजेड़–जोधपुर, मुन्नालाल भण्डारी–जोधपुर, प्रीति जैन–भरतपुर, भगवानराज–सिंघवी–पाली, कविता बांठिया–जोधपुर, मधुबाला नाहर–भदेसर, अंजलि पीतलिया–उदयपुर, पवन जैन–बेलगांव, राकेश सिंघवी–जोधपुर।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–कंवलराज मेहता–जोधपुर, धर्मेन्द्र जैन–सवाईमाधोपुर, जौहरीमल छाजेड़–जोधपुर, प्रिया धम्माणी–अहमदाबाद, मधुबाला बोरा–इचलकरंजी, साधना गुगले–इचलकरंजी, वन्दना गेलड़ा–भदेसर, स्मिता रूणवाल–बीजापुर, सुरेशचन्द जैन–खेरली, सुनील कुमार जैन–हिण्डौन सिटी, विनीता जैन–सवाईमाधोपुर, सरिता गांधी–पीपाड़सिटी, अंगुरबाला जैन–श्योपुर।

46.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–शोभा सुराणा–चेन्नई, भाविका एम. शाह–बेलगांव, जवेर नरेन्द्र शाह–बेलगांव, हीरा कर्णावट– अहमदनगर, कमला मोदी–जोधपुर, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, पारस जैन–बल्लारी, पंकज जैन–अलीगढ़–टोंक, चित्रा जैन–आलनपुर, निर्मला सुराणा–बीकानेर, रतनचन्द मेहता–जोधपुर, मोनिका जैन–सवाईमाधोपुर, शालिनी जैन–आगरा।

46 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–सुनीता नवलखा–कोटा, जया भण्डारी–ब्यावर, सरोज नाहर–दिल्ली, मधुबाला जैन–सुमेरगंज मण्डी, रेखा जैन–अलीगढ़, कमला जैन–जोधपुर, प्रकाशचन्द गेलड़ा–चन्नपटना, विशाल सिंघवी–जोधपुर, राजकुमार बांठिया–पाली, विमला एन. मेहता–जोधपुर, अनिता लोढ़ा–जोधपुर, रेणु बोहरा–दिल्ली, प्रकाश जैन–हैदराबाद, भूषण लुणावत–पूना, वनमाला राठौड़–धुलिया, उषा किरण अब्बानी–जोधपुर, मंगला गादिया–चालीसगांव, हेमलता जैन–ब्यावर, सोनल अलीझाड़–न्यू नासिक, शोभा जैन–जलगांव, ललिता गादिया–हैदराबाद, सुवर्णा जैन–भुसावल, सुजाता हीरावत–मुम्बई, अजय भण्डारी–अहमदाबाद, राजेन्द्र छाजेड़–भुसावल, भरतसिंह जैन–जयपुर, श्रीकान्त भण्डारी–अहमदाबाद, महावीर प्रसाद जैन–बाबई, राजेन्द्र कुमार जैन–सुमेरगंजमण्डी, दीपा बोरा–जलगांव, राज जैन, इन्द्रा जैन–चौथ का बरवाड़ा, मंजु बाघमार–जबलपुर, शकुंतला खींवसरा–अमलनेर, वैशाली एस. जैन–मुण्डी।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (29) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1.	आत्मीयता	मई/07	2.	आत्मबल	जुलाई/11
3.	आत्म-दर्शन	जून/101	4.	आघायाय	मई/03
5.	आन्तरिक	जून/38	6.	अन्तर्मूहर्त	जुलाई/61
7.	असंग	मई/45	8.	आवश्यकता	जून/76
9.	आत्मा	जुलाई/68	10.	आलोचना	मई/14
11.	अनन्त	जून/03	12.	अहंकार	मई/125
13.	अणगारी	जून/64	14.	आस्थावादी	जुलाई/07
15.	आराधना	मई/95	16.	अनुमोदना	जुलाई/80

17.	सरल आत्मा	मई/23	18.	नरक	जुलाई/11
19.	श्रमणाचार	जून/39	20.	उत्कृष्टव्रती	जुलाई/55
21.	चार	जून/49	22.	राग-द्वेष	मई/59
23.	सुखदायी	जुलाई/20	24.	अनन्त	मई/42
25.	सरलता	जुलाई/37	26.	साधना	जून/27
27.	गुरु	मई/64	28.	अठारह	जून/37
29.	वैडूर्यमणि	जुलाई/09	30.	अनुशासन	मई/74
31.	अट्ठाईस	जून/72	32.	शील	जून/99
33.	धन	जुलाई/10	34.	आचरण	मई/67
35.	कर्त्ता	जून/09	36.	गण	जुलाई/30
37.	श्रद्धा	मई/11	38.	सरलता	जून/15
39.	प्रीति	जुलाई/35,37	40.	सन्त दरबार	जून/78
41.	आत्मा	जुलाई/47	42.	चित्त	मई/13
43.	विचार	जून/24	44.	प्रेम	जुलाई/33
45.	दान	मई/95	46.	गुरु	जुलाई/19
47.	कर्म	जून/35	48.	पापश्रमण	मई/09
49.	भीख और भिक्षा में भेद	मई/80	50.	'आत्मानुसंधान'	जुलाई/46

-नमन सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (राज.)

दीप जले दीवाली आई

रेनू सिरोया

दीप जले दीवाली आई, घर आंगन में खुशियां लाई।
दीपों की जगमग ज्योति से सारा जग आलोकित है।
हर आंगन में दीप जले हैं, हर अंतर्मन पुलकित है।
नभ में तारे चमक रहे हैं, धरती पर भी दीप जले।
ज्योति से ज्योति टकराए, दो साथी ज्यूं गले मिले।
धरती ने चादर ओढी है, चमके चांद सितारों सी।
सजी रंगोली रंग बिरंगी, खुशियां हैं त्योहारों की।
दूवार दूवार तोरण सजे हैं, मां लक्ष्मी के सम्मान में।
मावस की है रात मगर, रोशन सारा जहान है।

-213/12, सिरोया मेडिकल, अशोक नगर, उदयपुर-313001 (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (31)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह चौथी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 दिसम्बर 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.176 से 240 तक से प्रश्न)

रिक्त स्थान की 'अ' अक्षर से पूर्ति कीजिये:-

1. स्त्री कोई.......नहीं। न वह अभव्य है और न दर्शनविरोधिनी है।
2. यापनीय के आचार्य..........द्वारा रचित यह उनकी विजयोदयाटीका।
3. इसका निर्माण करवाकर आप लोगों ने.........का संचय किया है।
4. आर्य स्कन्दिल का नाम जैन इतिहास में.....रहेगा।
5. हाथी गुंफा के शिलालेख के उट्टंकन ....काल।

संख्या में उत्तर दीजिये:-

6. वीर नि.सं. ...... अथवा ....में भ.महावीर का चतुर्विध संघ दो भागों में विभक्त हो गया।
7. महाकवि रत्न ने पद्य संख्या...... में आचार्य नेमिचन्द्र का परिचय लिखा है।
8. महाविजय प्रासाद नामक राजसन्निवार........की लागत का बनवाया।

9. इसी जिल्द के लेख संख्या........में तिरुपरुति कुरुति का उल्लेख है।

10. अकेले बेडाल क्षेत्र में....... से अधिक साध्वियाँ विद्यमान थी।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:-

11. श्रमणोपासक.........ने जीव और देह के भेद को परखा।

12. .... धर्म का अनुयायी भी मोक्ष अधिकारी हो सकता है।

13. कुछ ही क्षणों के ....में प्राणी वर्षों में देखे जाने वाले दृश्य देख लेता है।

14. आज जो आगम...... हैं, वे सर्वज्ञ प्रणीत हैं।

15. प्राचीन शिलालेख में मूर्तिपूजा अथवा....... का कहीं नामोल्लेख तक नहीं है।

जोड़ी का मिलान कीजिए:-

16. चामुण्डराय	-	जिनचन्द्र
17. रथसेना	-	रजोहरण
18. कम्बल	-	दिगम्बर
19. रथवीरपुर	-	नेमिचन्द्र
20. माघनन्दि	-	हस्त्यारोही

रिक्त स्थान पूर्ति में पीछे 'न' अक्षर आना चाहिए:-

21. गणों से सम्बन्धित 31 से ऊपर शिलालेख ..... आदि है।

22. शोधप्रिय विद्वानों को ....आकर्षित करने के उद्देश्य से किये जा रहे हैं।

23. राजाओं ने अपने-अपने शासनकाल में सहयोग देकर संरक्षण...... किया।

24. दिगम्बर परम्परा के दो आचार्यों में ....प्रथम आचार्य हैं।

25. नारी समाज में ....की लहर तरंगित हो उठी।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता का वार्षिक परिणाम

प्रथम पुरस्कार- अनिल कुमार जैन-कोटा (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- सुरेखा ए. भण्डारी-पीपलगांव,नाशिक (महा.)

तृतीय पुरस्कार- पुष्पा हस्तीमल गोलेछा-ब्यावर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. पदमचन्द मुणोत-जयपुर (राज.)
2. अंकुश जैन-जींद (हरियाणा)
3. पूनम जैन-फरीदकोट (पंजाब)
4. इन्दु कमलेश जैन-मलाड़ (वेस्ट), मुम्बई
5. भारती सुनील सुरपूरे-इचलकरंजी (महा.)

समाचार-विविधा

जयपुर चातुर्मास के उत्तरार्द्ध में भी ज्ञानाराधन एवं तपाराधन की निरन्तरता

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 12 के पावन वर्षावास का सुयोग पाकर गुलाबी नगरी निवासी गुरुभक्त श्रद्धा-समर्पण के साथ उत्तरार्द्ध समय में भी भक्ति एवं तप-त्याग का सुन्दर स्वरूप उपस्थित कर चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने में हरसंभव प्रयास कर रहे हैं।

इस बार पाँच माह का चातुर्मास होने के कारण लगभग 150 दिवस साधना के प्राप्त हुए हैं। इनमें श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने 50-50 दिन प्रवचन फरमाया तथा अब श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. प्रवचन फरमा रहे हैं। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. का तात्त्विक प्रवचन नियमित चल रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर पर्व-तिथियों पर, रविवार को तथा बाह्य संघ के आगमन पर प्रवचनामृत फरमाते हैं। प्रतिदिन प्रत्याख्यान एवं मांगलिक पूज्यपाद के पावन मुखारविन्द से हो रहे हैं। दिन में 2 से 3 बजे पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में वाचनी का क्रम चल रहा है। आचारांग सूत्र एवं दशासुत्तस्कन्ध की वाचनी के पश्चात् वर्तमान में बृहत्कल्प सूत्र की वाचनी चल रही है। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. सरस एवं सटीक शब्दों में विवेचन कर आगम का रहस्य स्पष्ट कर रहे हैं। वाचनी के समय ऊपर का हॉल लगभग पूरा भरा रहता है। अपराह्न 3 से 4 बजे संत भगवन्तों की सन्निधि में सीखने-सिखाने का क्रम जारी है। उभयकाल प्रतिक्रमण भाइयों का पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में तथा बहिनों का महासतीमण्डल की सन्निधि में हो रहा है। प्रतिक्रमण के पश्चात् ज्ञानचर्चा एवं शंका-समाधान के लिए जिज्ञासु भाई-बहिन संत-सतियों से लाभ ले रहे हैं।

साधक आत्माओं में तप का क्रम निरन्तर चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. ने अठाई, व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ने नौ दिवसीय तथा महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने अठाई तप का आराधन किया। महासती श्री सुभद्रा जी ने वृद्धावस्था में सिद्धितप की आराधना स्वास्थ्य-समाधि के साथ कर सबको

विस्मृत कर दिया। महासती श्री तितिक्षा श्री जी म.सा. गुरुचरणों में तपस्या के लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं। 25 अक्टूबर को महासती जी ने 12 की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से ग्रहण किए हैं। तप की आराधना के अन्य उदाहरण हैं-

(1) 6 अक्टूबर से 100 से अधिक भाई-बहिनों द्वारा एकाशन के सिद्धि तप की आराधना चल रही है, जिसमें बहुलता बहिनों की है। उनका तप पूज्य आचार्यप्रवर के 50वें संयम-दिवस के पावन अवसर पर पूर्ण होने जा रहा है।

(2) प्रायः नवयुवकों को दर्शन-वन्दन का समय कम मिलता है, किन्तु जयपुर के युवारत्न श्री गौरव जी नवलखा ने दिन में 12 बजे से 3.40 बजे तक पूज्य आचार्यप्रवर को 1008 बार वन्दन कर भक्ति का परिचय दिया है।

(3) संत-सतियों के साथ गोचरी आदि के समय नंगे पैर चलकर सेवा देने वाले विरले ही मिलते हैं, क्योंकि संतों के साथ उनकी गति के अनुसार सर्दी-गर्मी में चलना आसान कार्य नहीं है। यहाँ श्री विमलचन्द जी सुराणा एवं श्री संजय जी सुराणा जो पिता-पुत्र हैं, ने इस अलभ्य सेवा का लाभ लिया है। वे चातुर्मासार्थ प्रवेश समय से अपना पूरा समय दे रहे हैं।

(4) संवर की आराधना का क्रम निरन्तर चल रहा है। पर्वतिथियों पर इनकी संख्या 100 के ऊपर रहती है। छोटी-बड़ी तपस्याएँ चल रही हैं। एक भाई के 25 अक्टूबर को 11 की तपस्या चल रही थी।

(5) 14 अक्टूबर को सामूहिक दया के आह्वान पर लगभग 115 दयाव्रत की आराधना हुई, जिसमें आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के सभी 31 छात्रों का भी दयाव्रत में सहकार रहा।

चातुर्मास में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां प्रवर्तमान हैं। गतमाह में सम्पन्न कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

(1) 6-7 अक्टूबर को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का 'जैन जीवन-शैली' विषय पर आयोजन हुआ, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 विद्वानों ने विभिन्न पक्षों पर विचार व्यक्त किए।

(2) 14 अक्टूबर को प्रवचन पश्चात् युवारत्न श्री नमन जी मेहता, पीपाड़ ने 'स्वप्निका' प्रतियोगिता पुस्तक पर अपने विचार अभिव्यक्त किए।

(3) 20 अक्टूबर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की साधारण सभा आयोजित हुई, जिसमें श्रेष्ठ शाखाओं को पुरस्कृत किया गया तथा साथ ही श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का बहुमान किया गया।

(4) 21 अक्टूबर को सुबोध कॉलेज के सभागार में संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा की

अध्यक्षता में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की साधारण सभा आयोजित हुई, जिसमें संघ एवं उसकी विभिन्न संस्थाओं से सम्बन्धित सुझाव भी प्राप्त हुए तथा नये मनोनीत पदाधिकारियों की भी घोषणा की गई।

(5) 21-22 अक्टूबर को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें वीक्षकों को सम्मानित कर उनका बहुमान किया गया।

(6) पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता गुरुसेवा में प्रायः पधारते रहते हैं। राज्यसभा सदस्य श्री ईश्वरलाल जी ललवानी 22 अक्टूबर को गुरु-चरण सन्निधि में दर्शनलाभ के लक्ष्य से पधारे। राष्ट्रीय कान्फ्रेस के अध्यक्ष श्री अविनाश जी चोरडिया भी 25 अक्टूबर को गुरु-चरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुए। पूज्यश्री ने उन्हें अनेक बातें खयाल में दी।

दर्शन-वन्दन हेतु दर्शनार्थियों का आवागमन अनवरत बना हुआ है। धर्मसभा में संचालन संघमंत्री श्री विमलचन्द जी डागा ओजस्वी शैली में कर रहे हैं। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के तत्वावधान में वर्षावास के चार मास व्यतीत हो चुके हैं। संघ की स्वधर्मि-वात्सल्य भावना प्रमोदजन्य है।

मेड़ता चातुर्मास में ज्ञानाराधन एवं तप-त्याग की निरन्तरता

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास अनेक कीर्तिमानों के साथ सानन्द सम्पन्नता की ओर है। हर आयु वर्ग के पुरुष एवं महिलाएँ उत्सुकता एवं जिज्ञासु भाव से प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में उत्साह से भाग ले रहे हैं। इन दिनों में अनेक भाई-बहिनों ने 10 प्रत्याख्यान किए हैं। कइयों ने चन्द्रकला तप कर आत्मशुद्धि में पुरुषार्थ किया है। अभी आयम्बिल ओली का तपाराधन चल रहा है।

रविवारीय धार्मिक शिक्षण शिविर के दौरान अनेक बालक-बालिका नया ज्ञान सीखने की स्पर्धा में जुटे हुए हैं। इस चातुर्मास की उपलब्धियों में यह एक अद्वितीय अध्याय रहेगा। कई बालक-बालिका आगम-ज्ञान एवं बोल-थोकड़े कण्ठस्थ करने में अग्रणी हैं। प्रोत्साहन हेतु बच्चों को श्रीमती शांतिबाई जी शिवचन्द जी ललवानी की ओर से प्रत्येक रविवार को पुरस्कृत किया जा रहा है। इसी प्रकार प्रतिक्रमण पूर्ण करने वाले एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को श्रीमती रूकमाबाई उदयराज जी सुराणा की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है।

दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। संत-भगवन्तों के प्रवचनों की

प्यास हरेक को बनी रहती है। घरेलू एवं व्यापारिक कार्यों को नजरअंदाज कर जिनवाणी-श्रवण को प्राथमिकता देते हुए लोग उपस्थित होते हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. के अचानक पथरी की वेदना उभर आई, जिसकी शल्य चिकित्सा जयपुर से पधारे डॉ. सदासुख जी एवं डॉ. पी.एस. लोढ़ा ने बड़ी कुशलता से सम्पन्न की है। मुनिश्री के स्वास्थ्य में समाधि है।

संघाध्यक्ष श्री जबरचन्द जी चोरडिया, संघमंत्री श्री हस्तीमल जी डोसी सहित अनेक स्थानीय कार्यकर्ता चातुर्मास की सफलता प्रवं अतिथि सेवा में पूर्णरूप से तत्पर हैं।

महासती-मण्डलों के चातुर्मास में धर्माराधन

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अनन्त चतुर्दशी के दिन दयाव्रत, उपवास आदि अच्छी संख्या में हुए। यहाँ अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी आदि पाँचों पर्व दिनों में दया-संवर, उपवास आदि की साधना निरन्तर चलती है। 25 अक्टूबर को एकादशी के दिन 108 नींवी का आह्वान किया गया था, जो पूर्ण सफल रहा एवं लक्ष्य से भी अधिक नीवीं तप सम्पन्न हुए। आयम्बिल ओली तप चल रहे हैं। प्रातःकाल महासती श्री निरंजना जी द्वारा ध्यान-साधना कराई जाती है। अपराह्न व्याख्यात्री महासती श्री शांता जी म.सा. 3 से 4 बजे तक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम कराते हैं। दोपहर में नियमित रूप से वाचनी चल रही है। स्थानांग सूत्र पूर्ण होने के पश्चात् दशवैकालिक सूत्र की वाचनी चालू है। 21 सिद्धि तप पूर्ण हुए हैं। शरद पूर्णिमा की रात्रि में अनेक बहनों एवं भाइयों द्वारा 15-15 सामायिकें की गईं।

बांदनवाड़ा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में ज्ञानार्जन का सुन्दर वातावरण बना हुआ है। 7 वर्ष की ट्विंकल लोढ़ा ने प्रतिक्रमण सीख लिया है। इसी प्रकार 8 वर्ष की प्रियांशी लोढ़ा तथा अक्षिता लोढ़ा ने प्रतिक्रमण और 25 बोल सीख लिए है। इसी प्रकार 10-12 बालक-बालिका पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण एवं भक्तामर सूत्र सीख रहे हैं।

हिण्डौन सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास में प्रारम्भ से ही संवर, एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेला एवं अठाई की लड़ी निरन्तर चल रही हैं। यहाँ के अग्रवाल भाई कह रहे हैं कि यह चातुर्मास श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. के चातुर्मास की याद दिला रहा है। यहाँ पर ज्ञान-ध्यान, सामायिक-स्वाध्याय, संवर एवं तप-त्याग की पावन गंगा निरन्तर बह रही है। पूरा श्री संघ इसमें डुबकी लगाकर अपने कर्ममल को धो रहा है। युवारत्न श्री राजेश भाई ने 5 अक्टूबर को मासक्षपण तप स्थानक में संवर-पौषध करते हुए पूर्ण किया है। उनके पूर पर 81 उपवास, 61 एकासन, 2 अठाई, ग्यारह,

तेले एवं बेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। यहाँ प्रत्येक रविवार को धार्मिक प्रतियोगिता निरन्तर चल रही है। सीमा बहिन के 15 की तपस्या हुई है तथा वे आगे बढ़ रही हैं।

कोयम्बतुर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में कोयम्बतुर मे धर्माराधन का ठाट लगा हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही यहाँ धार्मिक गतिविधियाँ बड़े उत्साह के साथ गतिशील हैं। पर्युषण में एक साथ 200 तेले के प्रत्याख्यान उल्लेखनीय हैं। 9 सितम्बर को संघ के पूर्व ट्रस्टी श्री रसिकलाल नगीनदासभाई सेठ ने 31 उपवास के प्रत्याख्यान किए। इस चातुर्मास में युवावर्ग 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा के प्रति विशेष आकर्षित है। महासती श्री भाग्यप्रभा जी सरस भाषा में अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से विभिन्न उपयोगी विषयों पर प्रकाश डालते हैं। अनेक युवक एवं युवतियाँ अपने सभी कार्यों को छोड़कर इसमें विशेष लगन से पहुँचते हैं। चातुर्मास में दक्षिण भारत एवं उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों से दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार दिनांक 21 अक्टूबर, 2012 मध्याह्न 1 बजे सुबोध पब्लिक स्कूल, रामबाग सर्किल, जयपुर में संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सभा में संघ-सरंक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्रीमान मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, गजेन्द्र निधि व गजेन्द्र फाउण्डेशन के चेयरमेन श्री नवरतनजी कोठारी-जयपुर, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, संघ कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विरदराजजी सुराना-जयपुर, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराना-चेन्नई, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मंत्री-श्री विमलचन्दजी डागा-जयपुर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी-जयपुर ने मंच को सुशोभित किया। साधारण सभा में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी

सदस्यगण एवं विभिन्न क्षेत्रों से पधारे संघ सदस्य महानुभावों ने भाग लिया।

सुश्री सेहल जी जैन-जयपुर ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया तथा युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने संकल्प करवाया। संघ के महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी ने गत बैठक की कार्यवाही का पठन किया। उपस्थित सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से कार्यवाही की पुष्टि की गई। संघ के कोषाध्यक्ष श्री धनपतराजजी भंसाली-मुम्बई ने संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के वर्ष 2011-2012 के संयुक्त आय-व्यय तथा वर्ष 2012-2013 के प्रस्तावित बजट प्रस्तुत किये। सभा ने आय-व्यय बजट की जानकारी प्राप्त कर सर्वसम्मति से आय-व्यय व अनुमानित बजट पारित किये।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विरदराजजी सुराणा-जयपुर द्वारा गत बैठक की कार्यवाही का पठन किया गया। उपस्थित सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से कार्यवाही की पुष्टि की गई। मण्डल के वर्ष 2011-2012 के संयुक्त आय-व्यय तथा वर्ष 2012-2013 के प्रस्तावित बजट प्रस्तुत किये गए। सभा ने आय-व्यय बजट की जानकारी प्राप्त कर सर्वसम्मति से आय-व्यय व अनुमानित बजट स्वीकृत किये।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने देश के कोने-कोने से पधारे संघ सदस्यों, संघ तथा संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सभी गुरुभ्राताओं ने अच्छी संख्या में उपस्थित होकर साधारण सभा में अपनी अहम भूमिका निभाई, उसके लिए आप सबको हार्दिक धन्यवाद। संघाध्यक्ष महोदय ने संघ सदस्यों से कहा कि संघ में संगठनात्मक विकास हेतु विचार-विमर्श के लिए जयपुर में 17-18 नवम्बर को बृहद् अधिवेशन रखा गया है, जिसमें आप सभी अधिक-से-अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा में अभिवृद्धि करें। संघाध्यक्ष महोदय ने साधारण सभा हेतु प्राप्त लिखित सुझावों को सभा के समक्ष प्रस्तुत किया तथा कहा कि गत 6 वर्षों में मेरे द्वारा अथवा मेरी कार्यकारिणी द्वारा किसी प्रकार की गलती हुई हो तो मैं सभी संघ सदस्यों से हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर, परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के 50 वें दीक्षा-दिवस के रूप में दीक्षा अर्द्ध शती वर्ष के अन्तर्गत स्वप्निका पुस्तिका संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित की गई है, जिसमें तीर्थंकर की माताओं द्वारा देखे जाने वाले 14 स्वप्नों की विस्तृत जानकारी के साथ व्रत-नियम अंगीकार करने की पावन प्रेरणा है। स्वप्निका पुस्तिका का विमोचन संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत द्वारा किया गया। सभा में स्वप्निका पुस्तिका के संयोजक श्री नमनजी मेहता-पीपाड़ ने पुस्तिका के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

साधारण सभा में उपस्थित सदस्यों ने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के उन्नयन एवं विकास के लिए अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये गये।

संघ के नये पदाधिकारियों का मनोनयन

संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन **श्री मोफतराजजी मुणोत** ने सदस्यों को बताया कि संघ व संघ की संस्थाओं के वर्तमान सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता निष्ठावान हैं। उन्होंने तन-मन-धन से सेवाएँ प्रदान की है, अत: वे सभी धन्यवाद के पात्र है। उन्होंने सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों के मनोनयन सम्बन्धी जानकारी प्रदान की। **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष के रूप श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, कार्याध्यक्ष के रूप में श्री पी. एस. सुराणा-चेन्नई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष के रूप में श्री कैलाशमलजी दुगड़-चेन्नई एवं कार्याध्यक्ष के रूप में श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली, श्राविका मण्डल के अध्यक्ष के रूप में श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, कार्याध्यक्ष के रूप में श्रीमती मंजूजी भण्डारी- बैंगलोर, युवक परिषद् के अध्यक्ष के रूप में श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर के नाम सदस्य महानुभावों के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किये गए।** उपस्थित सभी सदस्यों ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनाद करते हुए संघ संरक्षक मण्डल द्वारा सुझाये नामों को सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

श्री मोफतराजजी मुणोत ने कहा कि संघ के प्रति हमारा बिना शर्त समर्पण हो। समर्पण और शर्त दोनों साथ नहीं चलते। सच्चा समर्पण होने पर हमारा संघ बहुत ऊंचाइयों पर जायेगा। निमाज स्थित संघ की भूमि पर निर्माण को लेकर संघ द्वारा गठित कमेटी एवं संरक्षक मण्डल की दो बैठकों में संघ सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विशद विचार-विमर्श करते हुए संघ की रीति-नीति, मर्यादानुसार एवं संघ-सदस्यों की भावना के अनुसार संघ की भूमि पर सामायिक-स्वाध्याय भवन शीघ्र बनाने का निर्णय लिया गया।

नवनिर्वाचित संघाध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर** ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह पद का अवसर नहीं दायित्व वर्धापन का अवसर है तथा परम पूज्य आचार्य भगवन्त के शब्दों में- 'यह गुरु के ऋण से उऋण होने का अवसर है। संघ की आज्ञा में मेरी आज्ञा है', को दिशाबोध के रूप में शिरोधार्य करते हुए मैं इस दायित्व को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ वहन करने का प्रयास करूंगा। इसमें आप-सबका आशीर्वाद, स्नेह व सक्रिय सहयोग प्रार्थनीय है। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने संघ महामंत्री के रूप में श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर का नाम घोषित किया।

संघ महामंत्री **श्री पूरणराजजी अबानी** ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे तीन वर्ष के कार्यकाल में कार्य करते हुए अत्यन्त आनन्द का अनुभव हुआ। तीन वर्ष का समय गुरुदेव की असीम कृपा से मेरे जीवन का स्वर्णिमकाल रहा, ऐसा कह दूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं कार्यालय सहयोगियों से मिले सहयोग के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया तथा अपने द्वारा रही किसी भी त्रुटि के लिए हार्दिक क्षमायाचना की। उन्होंने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की साधारण सभा की सुन्दर व्यवस्था के लिए जयपुर संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अन्त में महासती श्री समताजी म.सा. सहित गत साधारण सभा से अब तक दिवंगत श्रावक-श्राविकाओं को एक लोगस्स के पाठ से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बैठक की सुन्दर-व्यवस्था के लिए जयपुर श्रीसंघ को धन्यवाद देने के साथ बैठक समापन की घोषणा की गई। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

रत्नसंघीय परिवारों का बृहद् अधिवेशन

रत्नासंघीय परिवारों का बृहद् अधिवेशन शनिवार-रविवार दिनांक 17-18 नवम्बर, 2012 को सुबोध महिला कॉलेज, बुद्धसिंहपुरा, सांगानेर एयरपोर्ट के पास, जयपुर में रखा गया है। इसी अवसर पर गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह भी आयोजित होगा। इस अवसर पर संघ, मण्डल, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के नव-मनोनीत अध्यक्ष एवं पदाधिकारी शपथ ग्रहण करेंगे। दो-दिवसीय कार्यक्रम में समस्त रत्नसंघीय परिवार पहुँचें एवं अधिवेशन को सफल बनाने में अपनी सार्थक भागीदारी प्रदर्शित करें। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का 50 वां दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, सोमवार, 19 नवम्बर, 2012 को समुपस्थित हो रहा है। हम आचार्यप्रवर की दीक्षा की अर्द्धशती के शुभारम्भ पर त्याग-तप के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित कर गुरुभक्ति का परिचय दें, एतदर्थ आप संघ के आबाल-वृद्ध सभी सदस्यों को बृहद् अधिवेशन में भाग लेने व व्रत-नियम की श्रद्धा अर्पित करने की प्रेरणा करें।

आपके ग्राम-नगर-महानगर से कितने सदस्यों के बृहद् अधिवेशन में भाग लेने की संभावना है, समाचार जयपुर के सम्पर्क-सूत्र के पते पर अवश्य देने की कृपा करें।

सम्पर्क सूत्र- चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, गजेन्द्र पथ, सेन्ट्रल बैंक की गली, टोंक रोड़, जयपुर-302018

1. पूछताछ कार्यालय-फोन- (0141) 3101991
2. श्री विनयचन्दजी डागा-93145-06509
3. श्री आनन्दजी चौपड़ा-75686-20000
4. श्री नरपतचन्दजी सिंघवी- (0141) 2553416/98297-93416

श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 20 अक्टूबर 2012 को महावीर नगर, जयपुर में सम्पन्न हुआ। वार्षिक अधिवेशन कार्यक्रम में संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई, कार्याध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, जयपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, चेन्नई तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रेखा जी भंडारी ने मंच को सुशोभित किया।

श्राविका मण्डल की **कार्याध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर** ने अतिथियों के स्वागत में स्वागत-गीत प्रस्तुत किया। श्राविका मण्डल की **सचिव श्रीमती बीना जी मेहता** ने श्राविका मण्डल की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रतिवेदन के माध्यम से प्रदान की।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक **माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत** ने अपने उद्गार में कहा कि श्राविका धर्म का आधार है, क्योंकि वह बच्चों को संस्कार दे सकती है। बच्चों में संस्कार होंगे तो वे धर्म से जुड़ेंगे और धर्म से जुड़ने पर उसका असर घर-परिवार और समाज पर पड़ेगा तथा समाज का भला होगा।

मुख्य अतिथि डॉ. रेखा जी भंडारी ने अपने उद्गार व्यक्त करते कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे संत-सतीवृन्द के औषधोपचार हेतु श्रमणोचित सेवाएँ देने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं चाहती हूँ कि सभी श्राविकाएँ नियमित रूप से संत-सतीवृन्द की सार-सम्हाल करें और धर्मलाभ लें।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने अपने उद्गार में श्री मुणोत साहब का समर्थन करते हुए कहा कि आज की नारी घर के सभी सदस्यों को सुधार सकती है। यहाँ जितनी भी श्राविकाएँ बैठी हैं वे आज संकल्प करें कि तीन दिन परिवार के साथ संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन हेतु अवश्य आएं। श्राविकाएँ संघ की शान हैं। **शासनसेवा**

समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर ने अपने उद्गार व्यक्त करते कहा कि हम संत-सतीवृन्द को अपना समय दें।

कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा **सर्वश्रेष्ठ शाखा का प्रथम पुरस्कार** जलगाँव शाखा को, **द्वितीय पुरस्कार** जोधपुर शाखा को तथा **तृतीय पुरस्कार** सवाईमाधोपुर शाखा को दिया गया। **सर्वश्रेष्ठ छोटी शाखा का प्रथम पुरस्कार** कोलकाता को, **द्वितीय पुरस्कार** पीपाड़ शहर को तथा **तृतीय पुरस्कार** अलीगढ़-रामपुरा को प्रदान किया गया। प्रतियोगिता आयोजन पुरस्कार जयपुर शाखा को, सेवा-सम्मान के अन्तर्गत श्रीमती मंजू जी जैन-मुम्बई को, विहार-सेवा सम्मान के अन्तर्गत श्रीमती रजनीजी जैन-सवाईमाधोपुर को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। तपस्या के अन्तर्गत श्रीमती उषा जी सुराणा-जयपुर व श्रीमती मोहनोत-जयपुर का माला व चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान किया गया। श्रीमती मधु जी सुराणा ने जैन धर्म का मौलिक इतिहास प्रतियोगिता में सहयोग प्रदान करने वाली श्रीमती वेजयन्ती जी मेहता का भी हार्दिक आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती संगीता लोढ़ा-जयपुर ने किया। ***-शशि टाटिया, महासचिव***

युवक परिषद् का वार्षिक सम्मान समारोह सम्पन्न

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक सम्मान समारोह शनिवार, 20 अक्टूबर 2012 को मध्याह्न एक बजे सुबोध कॉलेज, रामबाग सर्किल, जयपुर में सम्पन्न हुआ। सम्मान समारोह में मुख्य वक्ता पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा-जयपुर, संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी कोठारी, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई, कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा-पाली, उपाध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा-जयपुर, महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया-जोधपुर तथा युवक परिषद् जयपुर के शाखा प्रमुख श्री अनन्त जी सेठ, शाखा सचिव श्री प्रशान्त जी कर्णावट ने मंच को सुशोभित किया।

समारोह का शुभारम्भ युवक परिषद् के निदेशक **श्री सुमतिचन्द जी मेहता** ने मंगलाचरण एवं संकल्प पाठ से किया। सम्मान कार्यक्रम में युवक परिषद् के चारों राष्ट्रीय कार्यक्रमों यथा- चतुर्विध संघ-सेवा, सामायिक-स्वाध्याय, धार्मिक शिक्षण तथा स्वधर्मी

वात्सल्य एवं समाज-सेवा तथा इसके अन्तर्गत दिवस विशेष एवं परिषद् के राष्ट्रीय अभियानों के तहत सराहनीय कार्यों के लिए विशिष्ट शाखा पुरस्कार प्रदान किए गए। व्यक्तिगत रूप से सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य के लिए विशिष्ट युवारत्नों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। मासक्षपण तप करने एवं आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने वाले युवारत्नों का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ा कर तथा स्मृतिचिह्न प्रदान कर विशिष्ट बहुमान किया गया। वर्ष 2012 में राष्ट्रीय कार्यक्रमों, दिवस विशेषों, राष्ट्रीय अभियानों एवं व्यक्तिगत कार्यों के लिए निम्नांकित युवासाथियों एवं शाखाओं का मंचासीन महानुभावों द्वारा स्मृतिचिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया-

मासक्षपण तप करने पर- श्री मणीन्द्र चौधरी-पीपाड़ शहर (31 उपवास), श्री शैलेन्द्र कोठारी-जयपुर, श्री राजेश जैन-हिण्डौन, श्री कमलेश लोढ़ा-तिरुवन्नामल्लै।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने पर- श्री अमित भंडारी-जयपुर, श्री पवन बागरेचा-जलगांव।

12 व्रत धारण करने पर-श्री पदम लुणावत-पीपाड़ शहर, श्री दिलीप गादिया-पीपाड़ शहर, श्री विवेक लोढ़ा-जयपुर, श्री विज्ञान लोढ़ा-जयपुर, श्री समकित हीरावत-जयपुर, श्री पुखराज जैन-जयपुर, श्री अंशुल गोखरू-जयपुर, श्री गौरव नवलखा-जयपुर, श्री सुशील जैन-जयपुर, श्री वीरेन्द्र कांकरिया-चेन्नई।

चातुर्मास दौरान विशेष सेवा देने पर- श्री राजेन्द्र पोरवाल-कोटा, श्री विशाल पोरवाल-कोटा, श्री नरेन्द्र जैन-हिण्डौन सिटी, श्री कल्पेश लोढ़ा-चेन्नई, श्री निखिल बागमार-चेन्नई, श्री उपेन्द्र बागमार-कोयम्बटूर, श्री नमन मेहता-पीपाड़ शहर, श्री परेश मुथा-पीपाड़ शहर, श्री संजय सुराना-जयपुर, श्री संजीव कोठारी-जयपुर, श्री महावीर ओस्तवाल-मेड़ता, श्री अजीत मुथा-तिरुवन्नामल्लै।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों में **सराहनीय कार्य के लिए शाखा सम्मान-**(1) चतुर्विध संघ सेवा पुरस्कार 2012- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई (2) सामायिक-स्वाध्याय पुरस्कार 2012- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई (3) धार्मिक शिक्षण पुरस्कार 2012- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर (4) स्वधर्मी वात्सल्य व समाज सेवा पुरस्कार 2012- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, हिण्डौन सिटी।

राष्ट्रीय अभियान के अन्तर्गत **उल्लेखनीय कार्य के लिए शाखा सम्मान-** सामूहिक पारिवारिक प्रार्थना राष्ट्रीय अभियान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, भरतपुर।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत **दिवस विशेष पर उत्कृष्ट कार्य हेतु शाखा सम्मान-** (1) तपस्या दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर (2) सामायिक दिवस सम्मान-

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, बालोतरा (3) दया दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, सवाईमाधोपुर शहर (4) स्वाध्याय दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, पीपाड़ शहर, (5) ज्ञान दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जलगाँव, (6) संयम दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, पाली, (7) अंहिसा/जीवदया दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, खेरली (8) व्यसनमुक्ति दिवस सम्मान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अलीगढ़।

श्रावकोचित विहार सेवा में 7 दिन उल्लेखनीय सेवा देने पर अनेक युवा बन्धुओं का अभिनन्दन किया गया।

शाखा द्वारा वर्षभर में 200 किलोमीटर विहार सेवा हेतु शाखा पुरस्कार- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर, जोधपुर, जलगांव, नागौर एवं चेन्नई।

प्रथम बार स्वाध्यायी सेवा देने पर युवा स्वाध्यायी सम्मान- श्री गौरव जैन-जयपुर, श्री अक्षय जैन-जयपुर, श्री विकास जैन-जयपुर, श्री अरिहन्त जैन-जयपुर, श्री पीयूष जैन-जयपुर, श्री विक्रम जैन-जयपुर, श्री आशीष जैन (प्रथम)-जयपुर, श्री आशीष जैन (द्वितीय)-जयपुर, श्री अखिल जैन-जयपुर, श्री अनुभव जैन-जयपुर, श्री कविश जैन-जयपुर, श्री आतिश जैन-जयपुर, श्री दीपेश जैन-जयपुर

युवारत्न बन्धुओं के शैक्षिक, आध्यात्मिक व चारित्रिक उन्नयन हेतु गजेन्द्र निधि के संचालन में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में राशि सहयोग प्रदान करने पर स्मृतिचिह्न भेंट किए गए। वर्ष 2012 में राष्ट्रीय कार्यक्रमों, दिवस विशेषों, राष्ट्रीय अभियानों में उत्कृष्ट व सराहनीय कार्य के लिए बड़ी शाखा में **श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जयपुर** को तथा छोटी शाखा में **श्री जैन रत्न युवक परिषद्-मेड़ता** को सर्वश्रेष्ठ शाखा से पुरस्कृत किया गया।

समारोह के मुख्य वक्ता पूर्व **न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा** ने युवाओं में स्फूर्ति एवं जागृति का संचार हो, इस हेतु अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में स्वामी विवेकानन्द, सन्त ज्ञानेश्वर, एकनाथ आदि के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। साथ ही युवाओं को खान-पान शुद्ध रखने की प्रेरणा की। सभी युवाओं को अखाद्य पदार्थ नहीं खाने का एवं अपेय नहीं पीने सहित सप्तकुव्यसन के त्याग का संकल्प करवाया। संघ-संरक्षक मण्डल के **चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई** ने युवाशक्ति को प्रेरित करते हुए कहा कि संघ के उन्नयन एवं विकास में आप समर्पणता के साथ आगे बढे, समर्पण में शर्त नहीं होती, अत: जहां शर्त होती है वहाँ समर्पण नहीं हो सकता। आप-हम सभी मिलकर

समर्पित भाव से संघ की गतिविधियों को आगे बढ़ाएँ। **संघाध्यक्ष महोदय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर** ने कहा कि हमारे युवारत्न साथियों ने चाहे विहार-सेवा हो, चतुर्विधसंघ सेवा हो, निर्व्यसनता अभियान हो एवं परीक्षाओं के आयोजन हो सभी में तत्परता से अपनी सेवाएँ प्रदान की। युवक परिषद् अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा का कार्यकाल अच्छा रहा। पद लेकर पद की गरिमा के अनुरूप कार्य करने की कला हमारे युवाओं में देखी जा सकती है। युवासाथियों में धर्म की लगन है, युवा ही हमारे संघ के भविष्य हैं, युवाओं का जोश एवं बुजुर्गों का होश-प्रेरणा दोनों मिलकर संघ को एक नई गति प्रदान करे, ऐसा विनम्र अनुरोध व्यक्त किया।

युवक परिषद् के **अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई** ने कार्यक्रम में युवारत्नों की अच्छी उपस्थिति पर हर्ष एवं आभार व्यक्त किया। युवक परिषद् द्वारा आयोज्य कार्यक्रमों की सफलता का श्रेय पूज्य आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की असीम कृपा को बताया। युवारत्नों पर पूज्य गुरुदेव की हमेशा कृपा बरसती रही जिसके फलस्वरूप ही युवक परिषद् की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में युवारत्नों को स्फूर्ति एवं शक्ति प्राप्त होती रही। **युवारत्न श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर** एवं उनकी पूरी टीम को धार्मिक-शिक्षण शिविरों के सफल संचालन के लिए धन्यवाद दिया। संघ पदाधिकारियों ने युवक परिषद् के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर युवारत्नों का मार्गदर्शन किया, उसके लिए सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मेरे तीन वर्ष के कार्यकाल में मेरे द्वारा अथवा मेरी सहयोगी टीम के द्वारा किसी भी प्रकार की त्रुटि रही हो तो मैं आप सभी से करबद्ध क्षमायाचना करता हूँ। **महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया-जोधपुर** ने मंचासीन पदाधिकारियों एवं युवारत्नों का कार्यक्रम में उपस्थित होने के प्रति आभार ज्ञापित किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा कार्यक्रम में सभी प्रकार की सुन्दर व्यवस्थाओं के लिए आभार प्रकट किया। सम्मान कार्यक्रम का सफल संचालन युवक परिषद् के निदेशक **श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़** ने किया।

- मनोज कांकरिया, महासचिव

शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला जयपुर में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कार्यशाला 21 व 22 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की व्यापक स्तर पर समीक्षा की गई। कार्यशाला का प्रथम परिचय सत्र 21 अक्टूबर को रात्रि में 7.30 बजे से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के नव मनोनीत

अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुगड़-चेन्नई के मुख्य आतिथ्य में आचार्य हस्ती भवन, जयपुर में आयोजित किया गया। परिचय के पश्चात् अनेक अधीक्षक-निरीक्षक महानुभावों ने परीक्षा सम्बन्धी उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के **मुख्य अतिथि श्री कैलाशमल जी दुगड़** ने शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों के व्यवस्थित रूप से संचालित होने तथा अधीक्षक-निरीक्षकों के सक्रियता पूर्ण सुझावों को देखकर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा शिक्षण बोर्ड के पदाधिकारियों को अपनी ओर से धन्यवाद दिया।

द्वितीय सत्र दोपहर में 1 बजे सुबोध कॉलेज, एम.बी.ए. हॉल में आयोजित किया गया। शिक्षण बोर्ड की **संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा** ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य से अवगत कराया। शिक्षण बोर्ड की परीक्षा-सम्बन्धी गतिविधियों के सुधार हेतु अनेक उपयोगी सुझाव प्राप्त हुए।

कार्यशाला का समापन सत्र अपराह्न 3 बजे एम.बी.ए. हॉल, सुबोध कॉलेज में ही रखा गया। शिक्षण बोर्ड की वार्षिक गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी **रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन** ने प्रस्तुत की। संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने कहा कि संघ के दो मजबूत पाये हैं- शिक्षण बोर्ड और स्वाध्याय संघ। दोनों का ज्ञान के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान है। शिक्षण बोर्ड के **मार्गदर्शक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत** ने कहा कि संख्या पर अधिक जोर न देकर गुणात्मक स्तर सुधारने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। **युवारत्न श्री प्रशान्त जी कर्णावट** ने कहा कि शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं ने घर-घर में धार्मिक वातावरण ला दिया है। थोकड़ों की परीक्षा भी बहुत अच्छा प्रयास है। बोर्ड की **निदेशक डॉ. सुषमा जी सिंघवी** ने कहा कि शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हों। युवकों को परीक्षा की गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए। युवक परिषद् के नवमनोनीत **अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा** ने कहा कि स्वाध्याय एवं श्रुत के संवर्धन का शिक्षण बोर्ड ने माहौल पैदा किया है। व्यवस्थित पाठ्यक्रम से परीक्षाओं का आयोजन सुन्दर प्रयास है। गुजराती अनुवाद की पुस्तकें प्रकाशित करने पर गुजराती भाई-बहिनें भी परीक्षा में अधिक भाग ले सकते हैं, अतः इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के **अध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा** ने कहा कि शिक्षण बोर्ड का प्रमुख उद्देश्य बच्चों और युवाओं को धर्म से जोड़ना, नये स्वाध्यायी तैयार करना तथा पुराने स्वाध्यायियों के ज्ञान में अभिवृद्धि करना है। परीक्षा एक ऐसी प्रतिस्पर्धा है, जिसमें परीक्षा देने वाला, लेने वाला तथा आयोजन करने वाला सभी लाभान्वित होते हैं।

कार्यशाला में पधारे अतिथियों एवं भाग लेने वाले सभी महानुभावों का आभार

बोर्ड संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने व्यक्त किया। कार्यशाला में भाग लेने वालों के लिये आवास, भोजन, वाहन, आने-जाने का मार्ग व्यय तथा सम्मान पुरस्कार की सुन्दर व्यवस्था के लिये जयपुर श्री संघ एवं चातुर्मास-व्यवस्था समिति को हार्दिक धन्यवाद दिया गया। अंत में श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर वालों के द्वारा मंगलपाठ सुनाकर कार्यशाला विसर्जित की गई। कार्यशाला के तीनों सत्रों का संचालन श्री धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार द्वारा किया गया।

-सुशीला बोहरा, संयोजक

'स्वप्निका' पुस्तिका : दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर अमूल्य उपहार

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती वर्ष पर हम व्रत-नियमों में आगे बढ़ें एवं जीवन को आध्यात्मिकता से समन्वित कर सकें, इस दृष्टि को लेकर 'स्वप्निका' पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तिका में तीर्थंकर की माताओं को आने वाले 14 स्वप्नों को आधार बनाकर 14 प्रकार के विविध नियमों की प्रेरणा की गई है। नियम सरल हैं, किन्तु सभी नियम नियमकर्त्ता की निष्ठा को अभिव्यक्त करते हैं। नियमों में ज्ञानाराधन-धर्माराधन एवं तपाराधन सबका समन्वय है। आर्ट पेपर पर विविध रंगों में प्रकाशित पुस्तिका मनभावन है। महिलाएँ, वृद्ध, युवा, बालक एवं प्रौढ़ सभी उसे भरकर आत्म-विकास कर सकते हैं। दीक्षा-स्वर्ण जयन्ती मनाने का यह एक विशिष्ट स्वरूप है, जो हर एक के लिए आकर्षक है। पुस्तिका में 14 स्वप्नों पर पद्यों में प्रकाश डाला गया है तथा उनसे मिलने वाली शिक्षा का नीचे अन्तिम पंक्ति में उल्लेख किया गया है। व्रत-नियमों के साथ तो पाठक आत्मोन्नयन करेंगे ही, किन्तु अन्त में 10 नवम्बर, 2013 को इनमें प्रकाशित पाठ्य सामग्री पर एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई है, जिसमें भाग लेने पर विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे, जिनकी जानकारी जिनवाणी के आवरण पृष्ठ पर दी गई है। प्रतियोगिता के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु **सम्पर्क सूत्रः**- नमन मेहता (संयोजक)-094141-16766, डॉ. मंजुला बम्ब-093142-92229, श्रीमती उर्मिला बोथरा-093145-01856, श्रीमती पूर्णिमा लोढ़ा-098290-19396, श्रीमती मीना गोलेछा-093144-66039

पुस्तिका-प्राप्ति का प्रमुख स्थानः-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 नं. दुकान के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद् की बैठक 17 नवम्बर को जयपुर में

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (पूर्व नाम-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान), जयपुर के पूर्व छात्रों की परिषद् का गठन जनवरी 2012 में किया गया था। उसकी कार्यकारिणी की बैठक एवं साधारण सभा का आयोजन 17 नवम्बर 2012 को जयपुर में रत्नसंघीय बृहद् अधिवेशन के अवसर पर रखा गया है। संस्थान के सभी पूर्व छात्र उपस्थित रहकर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., संत-मण्डल एवं महासतीवृन्द के दर्शन-प्रवचन का लाभ लें तथा बृहद् अधिवेशन में सहभागी बनने के साथ पूर्व छात्र परिषद् की कार्यकारिणी एवं साधारण सभा में सोत्साह भाग लेकर परिषद् की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। अपने पदार्पण की सूचना श्री अशोक कुमार जैन, जयपुर को मोबाइल नं.09413335103 पर अथवा मुझे अवश्य देने की कृपा करें। -डॉ. धर्मचन्द जैन, मानद सचिव, मो. 9413253084, ईमेल- dcjain.jnvu@gmail.com

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की वरीयता सूची

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 22 जुलाई 2012 को आयोजित परीक्षा का परिणाम अक्टूबर-2012 के जिनवाणी अंक में प्रकाशित हो चुका है। उसमें प्रथम तीन कक्षाओं की जो वरीयता सूची प्रकाशित नहीं हो सकी थी, उसे यहाँ दिया जा रहा है।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
83387	सुचिता ओस्तवाल	अहमदपुर	99.75	प्रथम
84730	सपना संकलेचा	वडपल्लनी	99.50	द्वितीय
85475	शशि भण्डारी	गोरेगांव	99.50	द्वितीय
83603	प्रियंका चौपड़ा	सिंहपोल, जोधपुर	99.25	तृतीय
84379	शांतादेवी पीपाड़ा	कलानी नगर, इन्दौर	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
82782	साधना बोरा	खामगांव	99.75	प्रथम
74001	वर्षा चोरडिया	नाशिक रोड़	99.50	द्वितीय
80513	नीतू शाह	गांधीधाम (कच्छ)	99.50	द्वितीय
78526	स्मिता जैन	छनेरा	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
76674	सारुचि जैन	दिल्ली	99.50	प्रथम
71694	मंगला बनवट	छनेरा	99.00	द्वितीय
71705	सरोज भण्डारी	खिरकिया	98.50	तृतीय

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 06 जनवरी 2013 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा "जैनागम स्तोक वारिधि" (थोकड़ों की) परीक्षा 06 जनवरी 2013, रविवार को दोपहर 11.30 से 4.00 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा का कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा-

प्रथम व द्वितीय वर्ष दोनों का प्रथम प्रश्न-पत्र- 11.30 से 01.30 बजे तक

प्रथम व द्वितीय वर्ष दोनों का द्वितीय प्रश्न-पत्र- 02.00 से 04.00 बजे तक

प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 5-5 थोकड़े पाठ्यक्रम में रखे गये हैं। आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अन्तिम दिनांक 06 दिसम्बर 2012 है। सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पाठ्यपुस्तकें एवं परीक्षा सम्बन्धी जानकारी के लिए शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं धर्मदलाली के इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें। 8-10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा का केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता हैं। परीक्षा में स्वयं भी भाग लें तथा अन्य भाई-बहिनों को भी भाग लेने हेतु अवश्य प्रेरित करें।

सम्पर्क सूत्र- **सुशीला बोहरा**, संयोजक-94141-33879, **धर्मचन्द जैन**, रजिस्ट्रार-93515-89694, **शिक्षण बोर्ड** कार्यालय-0291-2630490, ईमेल-info@jainratnaboard.com वेबसाइट-www.jainratnaboard.com

पन्द्रहवाँ महावीर पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

भगवान् महावीर फाउण्डेशन द्वारा पन्द्रहवें भगवान् महावीर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन तमिलनाडु राज्य के राज्यपाल महामहिम डॉ. के. रोसैय्या के सान्निध्य में चेन्नई स्थित चिन्मया हेरिटेज सेन्टर में सम्पन्न हुआ। इस वर्ष के पुरस्कार निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रदान किये गये हैं-

1. अहिंसा व शाकाहार- डॉ. चिरंजीलाल बागरा, पश्चिम बंगाल
2. शिक्षा - कलिंका इंस्टिट्यूट ऑफ सोशियल साइन्स, ओडिशा
3. चिकित्सा- डॉ. अनन्त सिन्हा, रांची, झारखण्ड
4. सामाजिक उत्थान व सेवा- रामकृष्ण मिशन अस्पताल, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश

फाउण्डेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री सुगालचन्द जैन ने समागत सभा का स्वागत किया। पुरस्कार में प्रत्येक को नगद राशि 1000000/- दस लाख रुपए, प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। पुरस्कार विजेताओं को आयकर कानून की धारा 10 (17-ए) प्रथम के तहत आयकर की छूट भी मिलती है। समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम डॉ. के. रोसैय्या ने पुरस्कार विजेता व्यक्तियों व संस्थानों द्वारा किए गए कार्यों की भूरि-भूरि

प्रशंसा की।

'आत्म जागृति प्रश्नावली' प्रतियोगिता

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती के उपलक्ष्य में 'आत्म-जागृति प्रश्नावली' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें 300 प्रश्न हैं, कुछ प्रश्न नवतत्त्व के थोकड़े से सम्बन्धित हैं एवं शेष प्रश्न सामान्य हैं, जिनके उत्तर स्वयं के विवेक से देने हैं। प्रतियोगिता की प्रारम्भ तिथि 29 नवम्बर 2012 है तथा उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 7 जनवरी 2013 है। परिणाम की प्रस्तावित तिथि 25 जनवरी 2013 (पौष शुक्ला चतुर्दशी) है। प्रथम पुरस्कार 7000/-, द्वितीय पुरसकार 5000/-, तृतीय पुरस्कार 3000/- एवं 100 सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक 100/- रखा गया है। पुस्तिका का मूल्य 20/- रखा गया है। पुस्तिका प्राप्त करने एवं जमा कराने का स्थान-(1) सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. 0291-2636763, (2) श्रीमती सुनीता मेहता, 467 ए, सातवीं ए रोड, सरदारपुरा, जोधपुर, फोन नं. 2640757, 9571486966 । अधिक जानकारी हेतु श्रीमती सुनीता जी मेहता से सम्पर्क किया जाए।

जसोल में राष्ट्रीय विचारगोष्ठी (Symposium)

राजस्थान में बालोतरा के निकट जसोल कस्बे में 'जैन दर्शन, विज्ञान और साहित्य' (Jain Philosophy, Science and Scriptures) विषय पर 22 से 24 अक्टूबर 2012 को एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 50 विद्वानों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया। संगोष्ठी के विभिन्न 10 तकनीकी सत्रों के अतिरिक्त दो चर्यासत्र एवं दो कार्यशालाएँ भी आयोजित हुई। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. नारायण लाल कच्छारा, उदयपुर एवं डॉ. सोहनराज तातेड़, जोधपुर ने किया। संगोष्ठी में आचार्य महाश्रमण का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ तथा प्रोफेसर मुनि महेन्द्रकुमार जी का अधिकतर सत्रों में सान्निध्य प्राप्त हुआ। संगोष्ठी में आए विद्वानों ने जिन विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए, उनमें से कतिपय इस प्रकार हैं-

1. Karma and Free will- Dr. Subhash Jain
2. Biological Intelligence and Human Faculties- Dr. M.L. Kachhara
3. Scientific Explorations of Jainism- Dr. J.D. Jain
4. Modern Theories on Consciousness and Jainism- Dr. Varsha Shah
5. Consciousness in Jainism, Modern Science and Theosophy- Dr. Rudi Jansma
6. जैनागमों में निरूपित सूक्ष्म पुद्गल और आधुनिक विज्ञान- डॉ. धर्मचन्द जैन

7. Is Modern Science Converging towards Jainism- Dr. S.S.Pokharna
8. जैन दर्शन की वैज्ञानिकता- मुनि अभिजीत कुमार
9. Scientific Interpretation of Jain Lokakash Map- Dr. Jeoraj Jain
10. Scientific Studies on Leshya and its Transformations : A Research Praposal - Dr. Viney jain
11. Some Scientific findings of stanford forgiveness project to cope with anger- Dr, Parasmal Agrwal

जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी

जयपुर स्थित एस.एस. जैन सुबोध स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 19-20 अक्टूबर 2012 को 'जैन धर्म : नवीन शोध, सम्भावनाएँ, तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति में योगदान' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पद्मभूषण करुणामूर्ति श्री डी.आर. मेहता ने की। मुख्य अतिथि पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया एवं विशिष्ट अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री एन.के. जैन थे। प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. सुदीप जैन, दिल्ली ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी के 10 तकनीकी सत्रों में शताधिक शोधपत्र पढ़े गए। संगोष्ठी में राजस्थान के विभिन्न अंचलों एवं देश के महाविद्यालयों से लगभग 510 प्रतिभागियों ने भागीदारी की। समापन सत्र में राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.एल. शर्मा, राजस्थान महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. लाडकुमारी जैन, श्री फूलचन्द जैन 'प्रेमी', दिल्ली एवं डॉ. दयानन्द भार्गव ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी का संयोजन इतिहास विभाग के डॉ. दलीप कुमार ने किया।

डॉ. हीरालाल जैन स्मृति-व्याख्यान माला सम्पन्न

वैशाली-प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (वासोकुण्ड, मुजफ्फरपुर) में 28 अगस्त, 2012 को संस्थापक निदेशक डॉ. हीरालाल जैन स्मृति व्याख्यानमाला गांधी दर्शन के प्रख्यात मनीषी एवं पूर्व सांसद प्रो. (डॉ.) रामजी सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर 'जैन मनीषियों का भारतीय गणित को अवदान' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए प्रो. अनुपम जैन-इन्दौर ने कहा कि तिलोयपण्णत्ति, स्थानांगसूत्र, धवला टीका, त्रिलोकसार, गोम्मटसार, गणितसारसंग्रह आदि ग्रन्थ गणित के क्षेत्र में भारतीय मनीषा के अनुपम धरोहर हैं। डॉ. जैन ने गणित विषयक अनेक अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की जानकारी दी। 'पर्यावरण चिंतन में जैन धर्म-दर्शन का अवदान' विषय व्याख्यान देते हुए प्रो. नलिन के. शास्त्री-बोधगया ने कहा कि जैन दर्शन का लेक्ष्या सिद्धान्त वृक्षों की रक्षा के लिए मनुष्यों को प्रेरित करता है। डॉ. महेश्वर प्रसाद सिंह-मुजफ्फरपुर ने 'संस्कृत नाटकों की प्राकृतभाषा' पर विचार व्यक्त करते हुए संस्कृत नाटकों

में विभिन्न प्राकृतों के प्रयोग और विविधता की चर्चा को भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित किया। अध्यक्षीय भाषण में प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि संयमी लोगों के समीप भौतिक सम्पदा तथा ज्ञान सम्पदा दोनों ठहरते है। उन्होंने प्राकृत भाषा के माहात्म्य को स्पष्ट करते हुए बताया कि जिस प्रकार माता के दूध का कोई विकल्प नहीं है उसी प्रकार प्राकृत भाषा का कोई विकल्प नहीं हो सकता। हमें हर हाल में इस प्राच्य भाषा को सुरक्षित-संवर्द्धित करना होगा। तभी हम समग्र संस्कृति को पहचान सकते हैं। अन्त में संस्थान के निदेशक डॉ. ऋषभचन्द जैन ने सभी अतिथियों, श्रोताओं, पत्रकारों तथा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- संघरत्न, संघ-संरक्षक पूर्व न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा की पावन स्मृति में लोढ़ा परिवार द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को 250000/- रुपये की राशि का चैक प्रदान किया गया है, जिसके ब्याज से प्रतिवर्ष चयनित छात्र/छात्रा को 'युवा प्रतिभा शिक्षा सम्मान' संघ द्वारा प्रदान किया जाएगा।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

जयपुर- तपस्वी एवं श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्री पूनमचन्द जी दूगड़ ने 81 वर्ष की आयु में 25 वाँ मासक्षपण तप आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में 2 अगस्त, 2012 को पूर्ण किया। इससे पूर्व 24 मासक्षपण तप उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की सन्निधि में चातुर्मास काल में सम्पन्न किए।

सूरत- मुनि श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से 14 अक्टूबर, 2012 को अखिल भारतीय स्तर पर जैन चार्टर्ड अकाउण्टेण्टों का द्वितीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य सी.ए. प्रोफेशनल को जैन सिद्धान्तों से जोड़ना एवं ज्ञानवर्द्धन करना रहा। जीवन, समाज एवं देश में उनके योगदान को दिशा देना भी सम्मेलन का उद्देश्य था।

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान से 'पत्राचार जैनधर्म दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम, 2013 की प्रवेश योजना इस प्रकार है:-**पाठ्यक्रम सत्र अवधि-** 1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक। निर्धारित आवेदन-पत्र व नियमावली www.jvs.jainapa.com से प्राप्त करें। शुल्क सहित आवेदन-पत्र कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2012 होगी। **सम्पर्क-** निदेशक, जैनविद्या संस्थान, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004 (राज.)

-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त **'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम'** एवं **'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम'** में प्रवेश योजना इस प्रकार है:- प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि : 1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक, अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि : 1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक। प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति इसमें प्रवेश ले सकता है। आवेदन पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त करें- www.pra.jainapa, www.apa.jainapa **सम्पर्क**-निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004 राज.

-डॉ. कमलचन्द सोगाणी-निदेशक

भोपालगढ़- भजन, प्रार्थना, चौबीसी आदि की संगीतमय चार ओडियो सी.डी. श्री नेमीचन्दजी जैन (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य), भोपालगढ़, जिला-जोधपुर मो. नं. 9413062049 के स्वर में तैयार हुई है, जो निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर उपलब्ध है। कीमत 100/- रुपये प्रत्येक। **सम्पर्क सूत्र**-प्रकाशचन्द सालेचा, मो. 9414126279

बैंगलोर- कैंसर रोगियों के निःशुल्क उपचार हेतु कैन्सर केयर फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया के सहयोग से श्रीमती बी. चाँदकंवर सिसोदिया कैंसर यूनिट प्रारम्भ की गई है। **सम्पर्क सूत्रः-** डॉ. वीणा, श्री चन्दनमल बोथरा चेरिटेबल मेडिकल सेण्टर, नं.22, 7 वाँ क्रास, जयभारत नगर, बैंगलोर (कर्नाटक)। फोन नं. 080-25468872 पर सोमवार, बुधवार एवं शुक्रवार को 1 बजे से 4 बजे के मध्य सम्पर्क किया जा सकता है।

बधाई/चुनाव

देवली-टोंक- राजस्थान माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर की ओर से श्री धर्मचन्द जी

लोढ़ा, वरिष्ठ लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवली को 8 अक्टूबर, 2012 को उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2012 में सम्मानित किया गया। श्री लोढ़ा श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के छात्र रहे हैं।

जयपुर- श्री नीरज जैन सुपुत्र श्रीमती वीणा जी जैन एवं श्री नरेन्द्र जी जैन, सुपौत्र श्री उम्मेद मल जी जैन (चौथ का बरवाड़ा निवासी) की B.E. (Computer Since) एवं MBA Finance के पश्चात् TCS अहमदाबाद में Business Analyst के पद पर नियुक्ति हुई है।

नागौर- सुश्री मयूरी सुपुत्री श्री नरेन्द्रकुमार जी कटारिया, सुपौत्री स्व. श्री मोहनलाल जी कटारिया ने M.Tech. (Chemical Engineering) परीक्षा सूरत विद्यापीठ से उत्तीर्ण की। वे बी.टेक. (कैमिकल इंजिनियरिंग) में स्वर्णपदक विजेता रही हैं।

सी.ए. एवं सी.एस. उत्तीर्ण

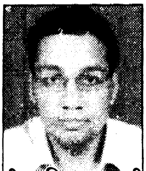
श्री अमित भण्डारी

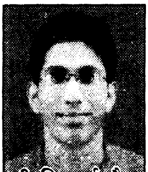
श्री सिद्धार्थ जैन

सुश्री निकिता कटारिया

सुश्री आभा मेहता

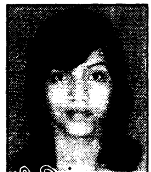
सुश्री प्रियंका बाफना

जोधपुर-श्री अमित भण्डारी सुपुत्र स्व.श्री देवेन्द्रराज जी एवं मंजु जी भण्डारी, सुपौत्र स्व. श्री रिखबराज जी एवं श्रीमती ज्ञानकंवर जी भण्डारी ने सी.ए. एवं सी.एस तथा आई.सी. डब्लू.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

कल्याण (महाराष्ट्र)- श्री सिद्धार्थ जैन सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी-श्रीमती अनीता जी मण्डलेचा (सुपौत्र श्री सुकनराज जी मण्डलेचा) ने सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की।

नागौर- सुश्री निकिता सुपुत्री श्री नरेन्द्रकुमार जी कटारिया (सुपौत्री स्व. श्री मोहनलाल जी कटारिया) ने प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

नागौर- सुश्री आभा सुपुत्री श्री अजयकुमार जी मेहता, सुपौत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता, करजू वाले ने प्रथम प्रयास में कम्पनी सेक्रेटरी की परीक्षा उत्तीर्ण की।

पूणे- सुश्री प्रियंका सुपुत्री श्री प्रमोदकुमार जी बाफना (सुपौत्री स्व. श्री मोतीलाल जी बाफना) वडेलवाला ने सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

गंगापुर सिटी- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती संतरा जैन धर्मपत्नी सुश्रावक श्री नत्थीलाल

जी पल्लीवाल का स्वर्गवास 58 वर्ष की आयु में 15 सितम्बर, 2012 को हो गया। आपका जीवन सरलता, सादगी एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा संत-सती मण्डल के प्रति श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत था। रत्न-संघ के प्रति आपका परिवार समर्पित है।

पाली- धर्माराधिका सुश्राविका श्रीमती सायरबाई धर्मसहायिका स्व. श्री हस्तीमल जी रेड का स्वर्गवास 85 वर्ष की आयु में 18 सितम्बर, 2012 को हो गया। आपने धर्ममय जीवन में

मासक्षपण , वर्षीतप, अठाई एवं आयम्बिल ओली आदि अनेक तपश्चर्या की तथा अनेक त्याग-प्रत्याख्यान किए। आप संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं।

अहमदाबाद- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमला देवी 76 वर्ष की उम्र में 26 अगस्त,

2012 को तथा उनके पति सुश्रावक श्री राणमल जी अन्याव (बालोतरा निवासी) का 29 अगस्त, 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द जी म.सा. के अहमदाबाद चातुर्मास में पूरे परिवार ने धर्मध्यान एवं सेवाभक्ति का लाभ लिया था।

अजमेर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती भंवरी बाई धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी कोठारी

का 14 अक्टूबर 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आप स्नेहमयी एवं मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थीं। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सती मण्डल के प्रति अटूट आस्था रखता है।

भडगांव (महाराष्ट्र)- श्रीमती प्रेमबाई जी ओस्तवाल का संलेखना संथाराव्रत के साथ समाधिमरण हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

चांगोटोला (म.प्र.)- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सीताबाई धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द

जी नाहर (भादोरा राज. निवासी) का 82 वर्ष की आयु में 17 अक्टूबर, 2012 को निधन हो गया। सेवाभावना एवं तपस्यामय सरल व्यक्तित्व की धनी सुश्राविका का भरापूरा नाहर परिवार रत्नसंघीय संत-सती मण्डल के प्रति पूर्ण श्रद्धा से समर्पित है।

जोधपुर- धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती सिरेकंवर मोदी धर्मपत्नी स्व. श्री अभयनाथ जी मोदी का 20 अक्टूबर 2012 को 83 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपके विगत 50 वर्षों से रात्रि-भोजन, जमीकंद, पाँचों तिथियों को हरी लीलोती आदि त्याग था। आपकी संत-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप शांत, शालीन, गुणानुरागी, सदा प्रसन्नचित्त, मिलनसार, सेवाभावी, परोपकारी और उदार हृदया थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

747 श्री प्रकाशचंदजी जैन (वेदमूथा), एमआईडीसी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
748 श्रीमती सुलेखाजी सुराणा, रामनगर कॉलोनी, आगरा (उत्तरप्रदेश)
749 श्री मेघकुमारजी कोठारी, दुर्गापुरा, जयपुर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

14323 Shri K. Anandji Munoth, T.Nagar, Chennai (Tamilnadu)
14324 Shri K. Satishji Munoth, T.Nagar, Chennai (Tamilnadu)
14329 Shri Anuragji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
14330 Shri Rajendraji Oswal, Vidyalaya Marg, Jaipur (Raj.)
14332 श्री चेतनजी नाहर, आजाद चौक, पोस्ट-नैरना, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14335 श्री संजयजी बोहरा, 54 ए, जयहिन्द कॉलोनी, देवपुर, धुलिया (महाराष्ट्र)
14337 श्री प्रकाशचंदजी भलगट, राजहंस, आनन्दनगर, पुणे-बैंगलोर रोड़, सतारा (महा.)
14338 Shri B. Rajendra Kumarji, Tiruvannamalai (Tamilnadu)
14340 श्री कल्पेशजी कोठारी, सर्राफा बाजार, जामनेर, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14341 Shri Ashok Kumarji Sirvi, Chennai (Tamilnadu)
14343 Smt. Sulekhaji Surana, Ram Nagar Colony, Agra (UP)
14402 श्री महेन्द्रजी छल्लाणी, आनन्द बगीचा के पास, अग्रवाल नगर,इंदौर (मध्यप्रदेश)
14407 श्री मुदितजी जैन, एमआईडीसी, अंधेरी ईस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)

250/-(अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

14325 श्री प्रशम कुमारजी जैन, कुम्हार गली, गौतम मार्ग, नयापुरा, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14326 श्री के.सी. जैन, 'सुशीला भवन', 593/सी, वार्ड नं. 3, महरौली, नईदिल्ली
14327 श्री विवेकजी मेहता (सीए), सेक्टर-4, ज्ञान नगर, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)
14328 श्री अरिहंतजी जैन, ग्राम-मूड़िया साद, तहसील-वैर, जिला-भरतपुर (राजस्थान)
14331 श्री लादुरामजी चौधरी, फुलियाकलाँ, तह-शाहपुरा, जिला-भीलवाड़ा (राज.)
14333 श्री नवीनजी डांगी, सी-282, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14334 श्री नरेन्द्रजी जैन, एस.एस.जैन सुबोध महिला टीटी कॉलेज, सांगानेर-जयपुर (राज.)
14336 श्री सुमेरचंदजी जैन, वार्ड नं. 7, कजोड़ी का नगला. गंजखेरली-अलवर (राज.)
14339 श्री जयेश कुमारजी बोहरा, जीवन बीमा मार्ग, पंडरी, रायपुर (छत्तीसगढ़)
14342 श्री सुमितजी संचेती, मिर्जा बावड़ी रोड़, देवडूँगरी, मदनगंज, अजमेर (राजस्थान)
14344 श्री करणराजजी कुम्भट, 2/218, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)

14345 श्री विकास कुमारजी बांठिया, केजीबी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
14346 श्री रितेशजी सुराणा, बी-239, जनता कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)
14347 श्री नवरतनजी बैद, जैन मंदिर के पास, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14348 सौ. प्रियंकाजी जैन, वडगाँव शैरी, कल्याणी नगर, एमएक्स, पुणे (महाराष्ट्र)
14349 Shri Himmatmalji Giriya, Jodhpur (Rajasthan)
14350 श्री राजेन्द्रजी देसरडा, ए सेक्टर, सिडको, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
14351 श्री दिलीप कुमारजी बाफणा, ओझर (मिग), जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14352 श्री शांतिलालजी कोठारी, भाग्यश्री कॉलोनी, दत्तमंदिर, देवपुर, धुलिया (महाराष्ट्र)
14353 श्री प्रकाशचंदजी गोठी, कोण्हाला बाजार, जिला-बुलढाणा (महाराष्ट्र)
14354 श्री संजयजी रूणवाल, शंभाजी चौक, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14355 श्री कांतीलालजी चोरड़िया, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14356 श्री उमेशजी गिडिया, शिवाजी चौक, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14357 श्री मोतीलालजी चोरड़िया, काँग्रेस भवन, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14358 श्री पंकज कुमारजी सुराणा, शांतिनगर, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14359 श्री सचिनजी धाडीवाल, शंकुर नगर, द्वारका, नाशिक (महाराष्ट्र)
14360 श्री संजय कुमारजी फोफलिया, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14361 श्री प्रशांतजी दूधेडिया (जैन), निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14362 श्री विजयजी चोरडिया, नाशिक-औरंगाबाद रोड़, निफाड़, जि-नाशिक (महाराष्ट्र)
14363 श्री सुरेश कुमारजी गाँधी, साईनाथ नगर, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14364 श्री नंदलालजी चोरडिया, लक्ष्मीनारायण नगर, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14365 श्री अलकेशजी कर्णावट, विजयनगर बस स्टॉप 2, नाशिक (महाराष्ट्र)
14366 सौ. पानाबाईजी रूणवाल, शांतिनगर, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14367 श्री सुनील कुमारजी नाहटा, जैन मंदिर समोर, घोटी, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14368 श्री राजेन्द्र कुमारजी भंसाली, रूई, जिला-अहमदनगर (महाराष्ट्र)
14369 श्री संजयजी लुंकड, मु.पोस्ट-निफाड़-422303, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14370 श्री योगेशजी बागरेचा, मु.पोस्ट-निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14371 श्री सुनील कुमारजी बुरड, मामलेदार चौक, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14372 श्री विनोदजी फोफलिया, जून्या कोर्टजवल, निफाड़, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14373 श्री रमेशलालजी सांखला, लोकमान्य नगर, गंगापुर रोड़, नाशिक- (महाराष्ट्र)
14374 श्री कुशलचंदजी जैन (बड़ौला), जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
14375 श्री माणकचंदजी रांका, लक्ष्मी चौक, नया बाजार, अजमेर (राजस्थान)
14376 श्री अशोक कुमारजी बोहरा, मानसरोवर कॉलोनी, रामनगर, अजमेर (राजस्थान)
14377 श्री विकासजी लोढ़ा, मंगलम्, कृष्णा कॉलोनी, रामनगर, अजमेर (राजस्थान)
14378 श्री रणजीतजी जैन, बीएसएनएल ऑफिस के पास, अहमदाबाद (गुजरात)
14379 Shri Sourabhji Khinwasara, Chennai (Tamilnadu)
14380 Shri Kaurabh Mehta, Madanganj, Ajmer (Rajasthan)
14381 Shri Bhanuji Chandalia, Madanganj, Ajmer (Raj.)

14382 Shri Kuldeepji Kothari, Madanganj, Ajmer (Raj.)
14383 Shri Namanji Bardia, Madanganj, Distt. Ajmer (Raj.)
14384 Shri Pulkitji Singhvi, Parbatsar, Nagaur (Raj.)
14385 Shri Mayankji Sancheti, Madanganj, Ajmer (Raj.)
14386 Shri Namanji Mehta, University Road, Udaipur (Raj.)
14387 Shri Namanji Bader, Vijaipath, Rajapark, Jaipur (Raj.)
14388 Shri Deepakji Kankaria, Vijayawada (A.P.)
14389 श्री पुखराजजी रांका, आगूँचा, तहसील-हुरडा, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)
14390 श्री महावीर प्रसादजी रांका, आगूँचा, तहसील-हुरडा, जिला-भीलवाड़ा (राज.)
14391 श्री (कृपया स्वयं का नाम भिजवायें), महावीर चौक, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
14392 श्री संजयजी चोरड़िया, लाड़पुरा, इतवारी, नागपुर (महाराष्ट्र)
14393 श्री पुखारामजी जाट, रजत अस्पताल, जोधपुरी चौकी, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)
14394 श्री कुन्दनमलजी भूरा, घाचियों का बिचला वास, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)
14395 श्री शिरीष कुमारजी खिंवसरा, घर नं. 1578, गली नं. 5, धुलिया (महाराष्ट्र)
14396 सौ. ममताजी राखेछा, भगवान महावीर मार्ग, बुलडाणा (महाराष्ट्र)
14397 श्री दिनेश कुमारजी गाँधी, नृसिंह दडा, जोधपुर (राजस्थान)
14398 Shri Vinayji Jain, Bangalore (Karanataka)
14399 श्री सुनीलजी आँचलिया, खेमे का कुआँ, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14400 डॉ. नवनीतजी मेहता, श्रीगोपाल नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14401 Shri Ashishji Mehta, Post-Hazira, Surat (Gujarat)
14403 Shri Maneshji Jain, Chennai (Tamilnadu)
14404 Shri Naresh Kumarji Chopra, Coimbatore (Tamilnadu)
14405 श्री अनिलजी गुलेच्छा, मानजी का हत्था, पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14406 डॉ. एम.एम. भंडारीजी, दासपा हाऊस, लोको रोड़, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.)
14408 श्री गौरवजी संचेती, बी-180, मालवीय नगर, मु.पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14409 श्रीमती वीनाजी जैन, 1/32, द्वितीय मंजिल, रूपनगर, दिल्ली (दिल्ली)
14410 Shri Kavish Kumarji Jain, New Delhi (Delhi)
14411 श्री सोनूजी जैन, मु.पोस्ट-शेरपुर, तहसील-हिण्डौनसिटी, जिला (करौली)
14412 Shri Mahavirji Kotecha, Vashno Devi Chowk, Nagapur (M.H.)
14413 Shri Roop Chandji Daftaria, Bangalore (Karnataka)
14414 Smt. Premlataji Kochar, Heevari Nagar, Nagpur (M.H.)
14415 Smt. Pramilaji Jain, Sarafa Bazar, Gwalior (M.P.)
14416 श्रीमती सविताजी बोहरा, प्रेमनगर, खेमे का कुआँ, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14417 श्री सुनीलजी सुराणा, कापड़ मार्केट, इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
14418 श्री अनिलजी बोहरा, कापड़ मार्केट, इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
14419 श्री हंसराजजी बोहरा, कापड़ मार्केट, इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
14420 डॉ. प्रीतेशजी सकलेचा, वाकड़ी, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)

14421 Shri S. Kishanlalji, Alandur, Chennai (Tamilnadu)
14422 श्री गजेन्द्र कुमारजी जैन, 3-बी-2, महावीर नगर-तृतीय, कोटा (राजस्थान)
14423 श्री बाबूलालजी जैन, 1-र-3, विज्ञान नगर, अशोक पार्क के पास, कोटा (राज.)
14424 श्रीमती शिल्पाजी अब्बाणी, आनन्द भवन, हाईकोर्ट रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14425 Shri Rajendra Kumarji Bhandari, Jagatpura, Jaipur (Raj.)
14426 Shri Kantilalji Ranka, Bangalore (Karnataka)
14427 श्री(कृपया स्वयं का नाम भिजवायें), कडोह रोड़, प्रेस कम्पाउण्ड, मढी, जिला-सूरत
14428 Smt. Neelamji Jain, Tonk Road, Jaipur (Rajasthan)
14429 श्री विनय कुमारजी नाहटा (जैन), अण्डरहिल रोड़, नईदिल्ली (दिल्ली)
14430 श्री संजयजी जैन, मंदिर वाली गली, पिल्लूखेड़ामंडी, जिला-जिंद (हरियाणा)
14431 श्री दीपक कुमारजी जैन, 225, इन्दिरा कॉलोनी, नागौर (राजस्थान)
14432 श्री जितेन्द्र मेहता, पीएनबी कॉलोनी, ईदगाह हिल्स, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14433 श्री नरेशजी जैन, एम.आई.जी. 69, हर्षवर्धन नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14434 श्री डी.सी. जैन, 52, पंचशील नगर, टी.टी. नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14435 श्री प्रमोद कुमारजी सकलेचा, विदिशा बैंक के पास, लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)
14436 श्री नरेन्द्र कुमारजी मेहता, ओल्ड सुभाषनगर, ईकोपार्क कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
14437 श्री अभय कुमारजी मेहता, गुलियादाई मार्ग, ललवानी प्रेस रोड़, भोपाल (म.प्र.)
14438 श्री रविन्द्रजी जैन, नेहरू नगर (कोटरा), भोपाल (मध्यप्रदेश)
14439 श्री हीराचंदजी मेहता, बी.डी.ए. कॉलोनी, कोहेफिजा, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14440 श्री लक्ष्मणसिंहजी मेहता, भारत टॉकीज के पास, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14441 श्री राजकिशोरजी जैन, वर्गा ज्वैलर्स के सामने, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14442 श्री विपिन बी मेहताजी, गुजरात लाज, जूम्मराली, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14443 श्री डी.डी. मौर्यजी, प्रेम विहार कॉलोनी, प्रेम नगर, सतना (मध्यप्रदेश)
14444 श्री विनोद कुमारजी मेहता, भावसार नमकीन के पीछे, करजूवाले, मंदसौर (म.प्र.)
14445 श्री नरेशजी पीतलिया, दीपक सोसायटी, चूना कट्टी कोलार रोड़, भोपाल (म.प्र.)
14446 श्री रविन्द्र कुमारजी जैन. डॉ बत्रा के ऊपर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
14447 श्री किरीट कुमारजी मेहता, नवाब मिर्जा दूध डेयरी के पास, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14448 श्री शांतिलालजी कटारिया, एलआईजी, कोतवाली रोड़, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14449 श्री संजयजी पटवा, कटारा हिल्स, बाग मुंगालिया, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14450 श्री पूनमचंदजी संचेती, मु.पोस्ट-मानपुर, जिला-राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5100/- श्रीमती पदमादेवीजी मोहनलाल कटारिया चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर, कुमारी मयूरीजी एम-टेक में, कुमारी निकिताजी सीए में, कुमारी ऋद्धिजी ओटीपीटी में सुपुत्री श्री नरेन्द्रजी कटारिया एवं कुमारी आभाजी (भांजी) सुपुत्री अजयकुमारजी मेहता सीएस की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री कांतिलालजी चौधरी, धुलिया, वीर माता-पिता सम्मान समारोह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री कमलचंदजी, प्रकाशचंदजी सुखलेचा, जयपुर, पूज्य श्रीमान् घीसीलालजी सुखलेचा का दिनांक 29 सितम्बर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री कँवरलालजी, चन्द्रप्रकाशजी, महेन्द्र कुमारजी कोठारी, अजमेर, श्रीमती भँवरबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री भँवरलालजी कोठारी का दिनांक 14 अक्टूबर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/- श्रीमती कलाजी सिंघवी, चेन्नई, आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1500/- श्रीमती भारतीजी-अजयकुमारजी मेहता, भोपाल, आभाजी मेहता (सीएस) के द्वारा पहली बार अठाई की तपस्या, श्री परागजी मेहता द्वारा दूसरी बार अठाई की तपस्या तथा मेघाजी मेहता द्वारा माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय से प्रथम सेमिस्टर में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती रतनदेवीजी-पन्नालालजी बोकड़िया, इन्दौर, वीर माता-पिता सम्मान समारोह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री पन्नालालजी, दीपक कुमारजी, नवीन कुमारजी लुँकड, कोयम्बटूर, चि. पी. दीपक कुमारजी के 11 की तपस्या, चि. पी. नवीन कुमारजी के 9 की तपस्या एवं श्री पन्नालालजी की सासू माँ श्रीमती पानीबाईजी धर्मसहायिका श्री जुगराजी रायसोनी मूथा (भावरि वाले-पाली) के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बोहरा परिवार, धुलिया, आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दलीचंदजी, किशनलालजी नाहटा, केजीएफ, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती इन्द्रा पटवा धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी पटवा, जोधपुर, अपने दोहिते श्री अमित भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री देवराज जी-मंजु जी भण्डारी के सी.ए., सी.एस. तथा आई.सी. डब्बलू की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती चन्द्रकंवर मोदी, मुनेश्वर, दिनेश्वर, गजेन्द्र, महेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती सिरेकंवर मोदी धर्मपत्नी स्व. श्री अभयनाथ जी मोदी का दिनाँक 20 अक्टूबर 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री निर्मल कुमारजी, मनोहरजी बम्ब, शूले-बैंगलोर, चि. हितैष जी बम्ब के जन्म-दिवस के अवसर पर पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती चन्द्रकान्ताजी, रामकल्याणजी जैन, पाटौली वाले, पुत्रवधू श्रीमती संजूलताजी धर्मपत्नी श्री रविन्द्र कुमारजी-अलीगढ़-रामपुरा, के पूज्य आचार्य भगवन्त एवं प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में जयपुर चातुर्मास में मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री घनश्यामजी, धर्मचन्दजी जैन, इन्दौर, माताश्री श्रीमती कंचनदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर, अपने पौत्र श्री आगम सुपुत्र प्रियंका-प्रवीण प्रपौत्र स्व.श्रीमती उमरावबाई एवं स्व. वीरपिता श्री भंवरलालजी हुण्डीवाल के जन्म के उपलक्ष्य में।

500/- श्री प्रेमचंदजी भंसाली, आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नरेशजी कोठारी, जलगाँव, चि. सफलजी कोठारी के गुरुदेव के प्रथम दर्शनार्थ पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दीपकजी तथा मुणोत परिवार, पूना, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती वीणाजी-नरेन्द्रजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, श्री नीरजजी सुपौत्र श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले) को बीई कम्प्यूटर साइन्स एवं एमबीए फाइनल के पश्चात् टीसीएस अहमदाबाद में बिजनस एनालिस्ट के पद पर नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रेमचंदजी पालडेचा, भीलवाड़ा, धर्मसहायिका श्रीमती भंवरीदेवीजी के 9 की तपस्या व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. के सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

1100/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, सुश्रावक स्व.श्री मगराज जी कुम्भट की 15वीं पुण्यतिथि एवं स्व. श्री महावीरराज जी कुम्भट की 10 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री रविन्द्र जी संदीप जी हुण्डीवाल, जोधपुर, अपने भतीजे श्री आगम सुपुत्र प्रियंका-प्रवीण सुपौत्र श्री सुभाष जी एवं स्व. श्रीमती उषा जी प्रपौत्र स्व.श्रीमती उमरावबाई एवं स्व. वीर पिता श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल के जन्म के उपलक्ष्य में।

पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
15000	विजयवाडा	3100	विदिशा	2000	पारसोली
1500	बेरछामण्डी	1102	वाघली	1101	बोरकुण्ड
1100	नारनोल	1000	बागली	501	इन्द्रगढ़
500	कालुखेड़ा				

मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
10000	रायपुर	5100	बैतुल	2851	सुखलिया-इंदौर
2151	गरोठ	1100	हातोत		

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जलगाँव, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ तथा सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

4000/- श्रीमती कलाजी सिंघवी, चेन्नई, मंडल में सत्साहित्य के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

1000/- श्री आशीषजी चौधरी, मुम्बई, मंडल से प्रकाशित पुस्तक वृहद्‌आलोयणा एवं गमा का थोकड़ा नामक पुस्तकों के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान हेतु साभार

5100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, मेड़तासिटी से सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

60000/- श्री कान्तिलाल जी कमलेश जी बाफना-पालनपुर।

60000/- श्री चिमनलाल जी आशीष जी डांगी-मुम्बई।

12000/- श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना-जोधपुर।

12000/- श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा-जोधपुर।

12000/- श्री राजेश कुमार सज्जनराज जी बाफना-बड़ौदा।

12000/- श्रीमती रश्मि राजेश जी बाफना-बड़ौदा।

12000/- श्री महेन्द्र कुमार सज्जनराज जी बाफना-जलगांव।

12000/- श्रीमती बबीता महेन्द्र जी बाफना-जलगांव।

12000/- श्रीमती शांतिदेवी सज्जनराज जी बाफना-जलगांव।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

कार्तिक कृष्णा 14, मंगल	13.11.2012	चतुर्दशी, पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 1, बुधवार	14.11.2012	गौतम प्रतिपदा, वीर संवत् 2539 प्रारम्भ
कार्तिक शुक्ला 5, रविवार	18.11.2012	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला 6, सोमवार	19.11.2012	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा दिवस
कार्तिक शुक्ल 8, बुधवार	21.11.2012	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 15, बुधवार	28.11.2012	चातुर्मास पूर्ण एवं वीर लोंकाशाह जन्म-दिवस
मार्गशीर्ष कृष्णा 8, शुक्रवार	07.12.2012	अष्टमी
मागशीर्ष कृष्णा 14, बुधवार	12.12.2012	चतुर्दशी, पक्खी
मागशीर्ष शुक्ला 8, गुरुवार	20.12.2012	अष्टमी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम् *With Best Compliments from :* परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

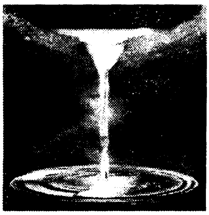
Electric Arc Furnace

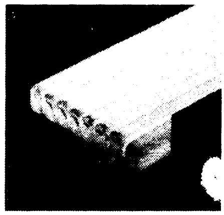
Billets

Rolling Mill

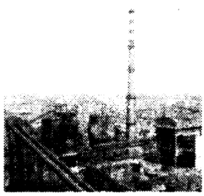
Captive Power Plant

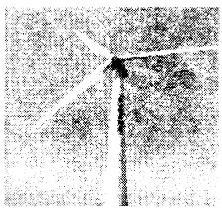
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

समस्त गुरु भाइयों को सादर जय जिनेन्द्र !

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा रत्नसंघ के रत्नसंघीय परिवारों का वृहद अधिवेशन दिनांक 17-18 नवम्बर, 2012 को जयपुर में आयोजित किया जा रहा है, आप सभी गुरु भाइयों से निवेदन है कि अधिवेशन को सफल बनाने के लिए अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक रत्नसंघीय परिवारों में प्रेरणा करावें एवं सपरिवार पधारें। 19 नवम्बर, 2012 को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का दीक्षा अर्द्धशती वर्ष है, इस शुभ अवसर पर व्रत-प्रत्याख्यानों को ग्रहण करके अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, गुरुभक्ति एवं समर्पण का परिचय देवें तथा अपने जीवन को संयमित करने का लक्ष्य रखावें।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए योजना का विस्तार कर दिया गया है। अत: आप सभी गुरु भाई 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर संघ की बहुउद्देश्यी छात्रवृत्ति योजना में अर्थ सहयोग करावें एवं अपने सम्पर्क में आने वाले गुरुभाइयों में प्रेरणा करावें।

युवक परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान हैं तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है।

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

1. **Ashok Kavad**, Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta**, Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana**, Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra**, Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha**, Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria**, Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat**, Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain**, Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga**, Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna**, Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad**, Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain**, Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2012★ कार्तिक, 2069

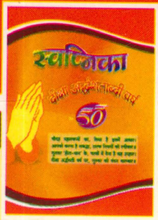

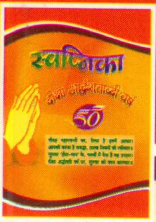

स्वप्निका

दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर
14 स्वप्नों पर आधारित 14 नये नियमों की अनमोल पुस्तिका...

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में 14 नियमों से सुसज्जित 'स्वप्निका' पुस्तिका प्रकाशित की गई है। चौदहवें गुणस्थान की पूर्णता को पूर्ण कर सिद्धि प्राप्त करने वाले, चौदह रज्जु लोक के अग्रभाग पर स्थित होने वाले तीर्थंकर भगवन्तों की माताएँ चौदह स्वप्नों को देखकर स्वयं में धन्यता का अनुभव करती हैं।

उन्हीं चौदह स्वप्नों का अर्थ और फल बताने वाली, 14 नये नियमों की ओर आकर्षित बनाने वाली, दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष पर आत्मा को सजाने वाली, नियमों के निमित्त से निज में निमग्न करने वाली, साधना के सूत्रों के माध्यम से साध्य को सधाने वाली तथा पठनीय, शोभनीय, संग्रहणीय व मन को मनन कराने वाली अनमोल ,अद्वितीय आह्लादकारी पुस्तिका स्वप्निका का प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक की उपयोगिता में सभी भाई-बहिन भाग ले सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार
अविस्मरणीय पुरस्कार

द्वितीय पुरस्कार
अद्वितीय पुरस्कार

पुरस्कारों की घोषणा उचित समय पर

तृतीय पुरस्कार
अलौकिक पुरस्कार

सुखकर पुरस्कार
अचम्भित पुरस्कार
(11 प्रतिभागियों को)

पुस्तिका वितरण तिथि - रविवार दिनांक 21 अक्टूबर, 2012

परीक्षा तिथि - रविवार 10 नवम्बर, 2013

पुस्तिका का मूल्य 20/- पुस्तिका को डाक से मंगवाये जाने पर प्रति पुस्तिका राशि 15/- अतिरिक्त प्रेषित करना आवश्यक है।

डाक से पुस्तिका प्राप्ति का मुख्य स्थान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन: 0141-2575997, 2571163 फैक्स: 2570753

आयोजक

• अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ • अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मंडल • अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विरदराज सुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन